नंदन
जून '९५
वर्ष : ३१ अंक : ८
सम्पादक
जयप्रकाश भारती

www.kissekahani.com

कहां क्या है

कहानियां

डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल	खाओ आम	७
गिरीश भंडारी	हवा में छलांग	१०
ईश्वरलाल प. वैश्य	किसका धन	१२
डा. ओम्प्रकाश सिंहल	बचाओ-बचाओ	१४
उमा पंत	बरगद की बांह	१६
हरफूल सुईवाल	पानी का मोल	१९
जयप्रभा	गंगा मां आई	२१
सी.एस. लेविस	शिला पर लिखा	२४
भारतप्रकाश भाटिया	सात दिन	२८
राकेशकुमार श्रीवास्तव	भाई-भाई	३१
रश्मिस्वरूप जौहरी	अदल-बदल	४१
गणेश मुनि महाराज	पुतली का मुकुट	४२
सुनीति	मोहरें	४५
आशिमा गुप्त	बुढ़ी माई	४६
श्यामकुमार दास	देवी ने कहा	५०
चैतन्य	खाली घड़ा	५४
गोपालदास नागर	लालच का फल	५७
अरविंद बेलेवार	शेर की हजामत	५९
अरुणकुमार जैमिनि	जय-जयकार	६९

कविताएं

कल्पनाथ सिंह, रमेशचंद्र पंत, शान्ति अग्रवाल, कृष्णकांत तैलंग, विनोदचंद्र पांडेय 'विनोद' ३०

इस अंक में विशेष

बहुत दूर और खूब बड़ा आस्ट्रेलिया	रंगीन झांकी	२२-२३
कुएं में नींद	चित्र-कथा	३३-३६
पोंगा पंडित	चित्र-कथा	३७-४०
विमलकांत चतुर्वेदी	चलो चलें आस्ट्रेलिया	५३
बृजमोहन गुप्त	अजब-अनोखी दुनिया	६७

स्तम्भ

एलबम ११; आप कितने बुद्धिमान हैं १८; चटपट ४८; तेनालीराम ४९; ज्ञान-पहेली ५५; चीटू-नीटू ६१; पत्र मिला ६३; पुरस्कृत कथाएं ६४; नई पुस्तकें ६६; पत्र मित्र ७०

आवरण : राजेन्द्रकुमार बधवा
एलबम : देवव्रत बनर्जी, तिमिर दत्त

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार ; चित्रकार : नारायण

आओ बात करें

दिल्ली कोई आए, कनाट प्लेस न जाए—यह कैसे हो सकता है ! गोल-गोल शानदार बाजार है। आधे गोले में ऊंची-ऊंची भव्य इमारतें हैं। देखकर लगता है कि साढ़े पांच-छह फुट का इंसान कैसे-कैसे चमत्कार कर देता है ! ये इमारतें क्या हैं, भवन-निर्माण कला के अनोखे नमूने हैं। इन्हें देखते हुए मय दानव की याद हो आती है। बहुत पहले, यानी पांच हजार साल पहले वह कैसा बेजोड़ शिल्पी था !

मय दानव ने भवन बनाने में नए-नए प्रयोग किए। पांडवों के लिए उसने अद्भुत महल बनाया था। उसमें फर्श चमचमाते थे, लगता सामने जल है। लोग अपने कपड़े संभालने लगते। और कई बार फर्श समझकर चलते तो झट से—'छपाक-छपाक' पानी में गिर पड़ते। इस भ्रम में दुर्योधन तक फंस गया। साफ-सुथरे फर्श पर अपने कपड़े संभालता रहा। जल को थल समझकर फिर बढ़ा। उसे फिसलते देख, पांडव और रानियां खिलखिला दिए। दुर्योधन को बड़ी लाज आई। राजसूय यज्ञ का समारोह उसी भवन में हुआ था।

यह तो एक उदाहरण है, मय दानव की कुशलता का। पुरानी पोथियों में उसके कारनामों की कई कथाएं आती हैं। उसने दानवों की रक्षा के लिए तीन पुर (बस्तियां) अंतरिक्ष में बसाए थे। ये आकाश में बादलों की भांति घूमा करते थे। उनमें से एक सोने का, दूसरा चांदी का और तीसरा लोहे का बना था। ये पूरी तरह सुरक्षित थे। दानव मनमाने उत्पात करते और पुर में चले जाते। बाद में भगवान शंकर ने इन त्रिपुरों का नाश कर दिया। उन्होंने दानवों का संहार कर डाला लेकिन मय ने अमृत कुंड का निर्माण कर दिया। मरे दानव फिर जी उठे। तब विष्णु और ब्रह्मा ने उस कुंड के अमृत को पी लिया।

मय का बड़ा भाई नमुचि था। इंद्र ने उसका वध कर डाला। इससे मय तो मानो गुस्से से पागल हो उठा। देवों का नाश करने के लिए उसने घोर तप शुरू किया। कई तरह की मायावी विद्याएं उसे प्राप्त हो गईं। इंद्र को पता चला तो उन्होंने ब्राह्मण वेश धरा। मय के पास वर मांगने आए। इंद्र के बिना मांगे ही मय ने कहा—"तुम जो चाहते हो, वह तुम्हें मिलेगा।"

इंद्र ने कहा—"मैं आपसे मैत्री चाहता हूं।"

मय बोला—"मेरी तुमसे कोई शत्रुता नहीं, फिर मैत्री मांगने की क्या आवश्यकता है ? हम-तुम दोनों मित्र ही हैं।" यह सुनकर इंद्र अपने असली रूप में प्रकट हो गए। वह बोले—"मैंने ही तुम्हारे भाई नमुचि का वध किया है। अपनी भूल स्वीकार करते हुए, तुमसे मित्रता चाहता हूं।"

यह सुनकर मय ने शत्रुता भुला दी। इंद्र से मित्रता कर ली। दोनों ने एक-दूसरे को मायावी विद्याओं का ज्ञान कराया।

मय की पत्नी हेमा थी। वह अप्सरा थी। संगीत और नृत्य की अच्छी जानकार थी। इन्ही की पुत्री थी मंदोदरी, रावण की पत्नी। मय का बसाया मयराष्ट्र (मेरठ) तो दिल्ली से दूर नहीं है,लेकिन उसने दक्षिण में भी एक विचित्र गुफा का निर्माण किया था। वन मे छिपी हुई यह गुफा सोने के महल जैसी थी, जहां हेमा रहा करती थी।

मय दानव बड़ा बलशाली था। आज के मानव से दो गुनी ऊंचाई वाला रहा होगा। उसके नाम पर मय वंश चला हो तो कोई आश्चर्य नहीं। मैक्सिको और दक्षिण अमरीका में पग-पग पर मय सभ्यता के निशान मिले हैं। शिल्प-शास्त्र के जो ग्रंथ लिखे गए, उन्हें भी 'मयसंहिता' कहा गया। मय दानव ने कला और शिल्प को नई ऊंचाई दी थी। इसीलिए उसे विश्वकर्मा का अवतार भी माना जाता है। दानव भी योग्यता के बल पर धरती पर अपनी छाप छोड़ सका, मय यही बताता है।

अगला अंक परी-कथा विशेषांक होगा। सदा की तरह रोचक और सहेजने योग्य। अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

—तुम्हारे भइया

खाओ आम

—डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल

भरत क्षेत्र के ऋषभ नगर में अभयंकर नाम का एक सेठ रहता था। वह दयालु और परोपकारी था। उसके धनकर एवं प्रशांकर नाम के दो कर्मचारी थे। वे सगे भाई थे। सेठ के जीवन का प्रभाव उन पर भी पड़ा। अतः वे एक दिन घर त्यागकर चल दिए। सेठ अभयंकर ने उन्हें बहुत सारा धन देना चाहा, लेकिन भाइयों ने सेठ के धन को ठुकरा दिया। वे अपनी छोटी-सी पूंजी लेकर वहां से चल दिए और एक मंदिर में पहुंचे। वहां दूर से कोई तपस्वी मुनि भी आए हुए थे। भाइयों ने उनकी शरण ली। एक दिन उन्होंने निराहार रहकर अपने प्राण त्याग दिए। अगले जन्म में अच्छे कर्मों के कारण कलिंग देश के दलवठ्ठशा नामक नगर में राजा सूरसेन की रानी विजयादेवी के पैदा हुए।

राजा सूरसेन के हर्ष का ठिकाना न रहा। राज्य में खूब खुशियां मनाई जाने लगीं। एक बेटे का नाम अमरसेन तथा दूसरे का नाम वइरसेन रखा गया। धीरे-धीरे दोनों राजकुमार बड़े होने लगे।

राजा सूरसेन की हस्तिनापुर के राजा देवदत्त से मित्रता थी। देवदत्त ने सूरसेन के पुत्रों को हस्तिनापुर आने का निमंत्रण भेजा। सूरसेन ने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। दोनों बेटे कुछ दिनों के लिए हस्तिनापुर में अतिथि बनकर रहने के लिए आ गए।

राजा देवदत्त की रानी देवश्री नाराज हो गई। रानी ने राजा देवदत्त से अमरसेन और वइरसेन की झूठी शिकायत कर दी। राजा ने क्रोधित होकर सैनिकों से कहा—"अमरसेन और वइरसेन का जंगल में वध कर दिया जाए।" जल्लाद उन्हें पकड़कर जंगल में ले गए। लेकिन जल्लादों को उनके भोलेपन पर तरस आ गया। उन्होंने राजकुमारों से कहा—"तुम ऐसे नगर में चले जाओ, जहां राजा देवदत्त न पहुंच सकें।" यह कहकर जल्लाद चले गए।

दोनों भाई भूखे-प्यासे जंगल-जंगल भटकने लगे। इसी तरह एक शाम एक वृक्ष के नीचे सो गए। उस वृक्ष पर एक यक्ष परिवार रहता था। पति-पत्नी ने देखा दो बालक भूखे-प्यासे यहां सो रहे हैं। उन्हें दया आ गई। उन्होंने दोनों भाइयों को जगाया और उन्हें भोजन कराया। यक्ष ने उन्हें दो दिव्य आम दिए। उनमें एक आम बड़ा और दूसरा छोटा था।

यक्ष ने कहा—"बड़ा आम जो रखेगा, उसे सात दिन में राज्य की प्राप्ति हो जाएगी और जो छोटा आम रखेगा उसे पांच सौ रत्न प्रतिदिन मिलेंगे।"

अमरसेन ने बड़ा और वइरसेन ने छोटा आम रख लिया। दोनों अपने भाग्य की प्रतीक्षा करने लगे।

अगले दिन भूख लगी। वइरसेन ने कहा—"तुम यहां ठहरो। मैं नगर से भोजन लेकर आता हूं।"

अमरसेन घूमते-घूमते दूर निकल गया। वह थक गया तो रास्ते में सो गया। उसी दिन कंचनपुर नरेश का देहांत हो गया था। वह निःसंतान था। राज्य का उत्तराधिकारी वही हो सकता था जिसे राजा का विशेष हाथी अपनी सूंड़ से माला पहना दे। अतः राज्य के कर्मचारी हाथी को लिए-लिए, नगर के चक्कर लगा रहे थे। चारों तरफ अपार भीड़ थी। हर आदमी अपना भाग्य आजमाना चाहता था। लेकिन हाथी अपनी चाल चलता हुआ, वहां पहुंचा जहां अमरसेन सो रहा था। हाथी ने अपनी सूंड़ से उसके गले में माला डाल दी। प्रजा देखती रह गई। अमरसेन कंचनपुर का राजा बनकर राज्य करने लगा।

उधर वइरसेन भोजन की तलाश में निकला। लेकिन उसके पास अपार धन देखकर एक दुष्ट ने उसे अपने जाल में फंसा लिया। वइरसेन उसकी झूठी बातों के जाल में फंसकर, अमरसेन को भूल बैठा। धीरे-धीरे उसने वइरसेन के धन पाने के रहस्य को जान लिया। एक दिन उसने वह आम चुरा लिया जो हर दिन पांच सौ रत्न देता था पर उसकी शक्ति समाप्त हो गई।

ठग को धन नहीं मिला तो उसने वइरसेन को घर से बाहर निकाल दिया। वइरसेन एक मंदिर में गया। उसे अपने भाई अमरसेन की याद आ गई। वह रो पड़ा। वह रात में वहीं सो गया।

मंदिर में चार चोर आए। उन्हें चोरी में मिली वस्तुओं का बंटवारा करना था पर मन मुताबिक बंटवारा न होने से वे आपस में झगड़ने लगे। वइरसेन की नींद खुल गई। उसने चोरों से पूछा—"इन बेकार वस्तुओं के लिए आपस में झगड़ा क्यों कर रहे हो?" चोरों ने उत्तर दिया—"ये बेकार वस्तुएं नहीं हैं। यह चरण पादुका है, इसे पहनते ही जो जहां चाहे, वहां जा सकता है। यह लाठी है, इससे हजारों शत्रुओं का एक साथ संहार किया जा सकता है।"

इतना सुनते ही वइरसेन खुश हो गया। उसने

चोरों से कहा—"मैं तुम्हारा बंटवारा कर देता हूं।" चोरों ने उस पर विश्वास कर लिया। उसे सारी वस्तुएं बंटवारा करने को सौंप दीं।

वइरसेन ने चरण पादुका पहनी। सारी वस्तुएं संभाली। फिर देखते ही देखते वहां से गायब हो गया। चोर ठगे-से रह गए।

कुछ ही देर में वइरसेन कंचनपुर पहुंच गया। वहां उसकी भेंट उसी दुष्ट व्यक्ति से हो गई। ठग ने वइरसेन को दोबारा अपने जाल में फंसा लिया।

एक दिन ठग ने उससे नगर से बहुत दूर नाथ मंदिर के दर्शन की इच्छा जताई। वइरसेन उसके साथ मंदिर में दर्शन करने गया। वह आंखें मूंदकर प्रार्थना करने लगा। तभी ठग चुपके-से मंदिर से बाहर आ गया। वह वइरसेन की चरण पादुका पहनकर उड़ गया। वइरसेन ने जब आंखें खोलीं तो खुद को मंदिर में अकेला पाया। वह मंदिर से बाहर आया तो उसकी चरण पादुका गायब थी। वह समझ गया कि ठग ने उसके साथ छल किया है। कंचनपुर वहां से बहुत दूर था। वहां जाने का कोई साधन नहीं था। वइरसेन दुखी होकर मंदिर की देहरी पर बैठ गया।

उसी समय एक देव गंधर्व वहां आया। वइरसेन की व्यथा सुनकर उसका हृदय पसीज गया। उसने कहा—"तुम पंद्रह दिन तक यहीं रहो। यहां फल-फूलों के कई पेड़ हैं। भूख लगे तो इनका सेवन

करना। मैं पंद्रह दिन बाद आकर, तुम्हें तुम्हारे नगर पहुंचा दूंगा। तुम पश्चिम दिशा की ओर कभी न जाना।" फिर गंधर्व चला गया।

एक दिन वइरसेन पश्चिम दिशा की ओर चल दिया। वहां एक वृक्ष पर बहुत सुंदर-सुंदर फूल लगे थे। उसने एक फूल तोड़ा। फूल सूंघा तो वह गधा बन गया। पंद्रह दिन बाद जब गंधर्व उसे लेने आया तो वह नहीं मिला। गंधर्व एक गधे को अपने पीछे चलता देखकर समझ गया कि यही वइरसेन है। देव गंधर्व ने एक दूसरा फूल तोड़कर गधे को खिला दिया। फूल खाते ही गधा मनुष्य बन गया। वइरसेन ने देव गंधर्व से क्षमा मांगी। देव गंधर्व पांच दिन बाद वहां आने का वचन देकर लौट गया। वइरसेन पश्चिम दिशा में गया। उसने वही फूल तोड़ा जिसे सूंघकर वह गधा बन गया था। उसने वह फूल भी ले लिया जिसे खाकर वह गधे से आदमी बन गया था। पांच दिन बाद वह देव गंधर्व के साथ कंचनपुर पहुंचा।

कंचनपुर में वह पुनः उसी ठग से मिला और उससे कहा—"मैं ऐसा फूल लाया हूं जिसे सूंघते ही मनुष्य युवा होकर अमर हो जाता है।" ठग उसके जाल में फंस गया, उसने वह फूल सूंघा। सूंघते ही वह गधा बन गया। वइरसेन ने उसे पूरे नगर में घुमाया। उसे खूब मारा। उसने नगर के लोगों को ठग की करतूतें बताईं। ठग के अन्य साथी वइरसेन के इस व्यवहार से बहुत दुखी थे। वे राजा के पास शिकायत करने गए। राजा अमरसेन ने वइरसेन को पकड़ने के लिए सिपाही भेजे। वइरसेन ने करामाती लाठी से उन्हें भगा दिया।

यह सुनकर राजा अमरसेन स्वयं उसे पकड़ने गया। वइरसेन ने अपने भाई अमरसेन को दूर से ही पहचान लिया। वह दौड़कर अपने भाई के गले जा लगा। अमरसेन यह देख, हैरान था। दोनों भाइयों की आंखें सजल थीं। अमरसेन ने पूछा—"वइरसेन, तुम अब तक कहां थे ?" वइरसेन ने सारी कहानी अपने भाई को सुना दी। फिर बोला—"भैया, अब तो तुम राजा बन गए, मुझे भी अपने चरणों में जगह दे दो।"

अमरसेन बोला—"आज से तुम यहां के युवराज हो। तुम महल में आराम से रहो।"

दोनों भाई महल में पहुंचे।

एक दिन कंचनपुर में मुनियों के आगमन की बात सुन, दोनों भाई उनके दर्शन को गए। वे मुनियों को अपने महल में ले आए। मुनियों ने उन्हें उनके पूर्व जन्म की कथा सुनाई। कहा—"पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण ही तुम लोग ये दिन देख रहे हो। पुनः सत्कर्म करो ताकि इस संसार के माया-मोह से छूट जाओ।"

मुनियों के उपदेश से प्रभावित हो, दोनों भाइयों ने राज-पाट त्याग दिया।

दोनों भाई हस्तिनापुर पहुंचे। वहां राजा देवदत्त और रानी देवश्री ने उन्हें अपने महल में बुलाया। राजा-रानी ने उन्हें पहचान लिया। उन्होंने दोनों भाइयों के चरण पकड़ लिए। रानी ने कहा—"मुनिवर ! मुझसे बड़ी भारी भूल हो गई थी। मेरी वजह से आपको अनेक कष्ट झेलने पड़े।" राजा ने हाथ जोड़ लिए।

दोनों भाइयों ने कहा—"देवी ! आप न होतीं तो हम मुनि कैसे बनते ? जो हो गया, उसे भूल जाओ। जीवन में भले काम करो, इससे मनुष्य को सुख ही सुख मिलता है।"

(जैन कथा)

www.kissekahani.com

हवा में छलांग

—गिरीश भंडारी

शिवाजी की सेना में बहुत से वीर सैनिक और सरदार थे। उन्होंने रणभूमि में अपनी वीरता और स्वामिभक्ति के पग-पग पर सबूत दिए थे।

इनमें से एक था—खुदादाद। मालवा के सूबेदार ने किसी बात पर गुस्सा होकर,उसके मकान पर हल चलवा दिया था। खुदादाद अपनी किस्मत आजमाने शिवाजी के पास पहुंचा। वह बड़ा अच्छा घुड़सवार था।

उन दिनों शिवाजी अपनी सेना का संगठन कर ही रहे थे। उन्हें साहसी और बहादुर सैनिकों की आवश्यकता थी।

शिवाजी ने खुदादाद से बात की। सरदार भीमा से सलाह ली। भीमा विशालकाय सरदार था। उसकी तलवार को बड़े-बड़े शूरवीर भी नहीं उठा पाते थे। शिवाजी ने उससे सलाह लेकर अपने सैनिकों से कहा—"आज वीरता की परीक्षा होगी। जो भी इसमें सफल होगा, वही सच्चा सैनिक कहलाएगा।" सैनिकों ने सिर हिलाकर शिवाजी की बात का समर्थन किया।

परीक्षा बड़ी कठिन थी। एक ऊंचे पत्थर के ठीक नीचे एक भाला गाड़ा गया। सैनिकों को पत्थर के ऊपर से भाले की नोक पर कूदना था। सैनिकों के लिए यह मौत के मुंह में कूदने से कम न था।

शिवाजी ने घोषणा की—"जो भी सैनिक अपने को वीर समझता है, सामने आ जाए।" यह सुन,वहां सन्नाटा छा गया। तभी खुदादाद आगे बढ़ा। उसने कहा—"मुझे न जीवन से प्रेम है और न ही मृत्यु से भय। आपका आदेश हो तो मैं समुद्र में भी कूद सकता हूं, भाले की तो बात ही क्या है।"

खुदादाद की बात सुन,कुछ सैनिक भी उत्साहित होकर आगे बढ़े पर खुदादाद ने उन्हें रोक दिया। उसने शिवाजी से कहा—"महाराज, मैंने सबसे पहले कूदने का प्रस्ताव किया था। अतः यह सौभाग्य मुझे दिया जाए...।" यह कहते हुए वह अपने घोड़े पर सवार हो गया। शिवाजी ने भीमा को इशारा किया। उसने अपनी भारी तलवार निकाली। बाकी लोगों को कुछ समझ में नहीं आया कि क्या होने जा रहा है? सबके दिल जोरों से धड़कने लगे!

खुदादाद ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई। देखते ही देखते वह ऊंचे पत्थर पर पहुंच गया। उसने तुरंत नीचे हवा में छलांग लगा दी। तभी भीमा ने तलवार से भाले पर वार किया। भाला जड़ से कटकर दूर जा गिरा। उसके गिरते ही घोड़ा जमीन पर गिर गया। सैनिकों ने देखा—खुदादाद सही-सलामत था। उसका घोड़ा भी ठीक था।

परीक्षा पूरी हो चुकी थी। यह परीक्षा खुदादाद और भीमा की ही नहीं थी, अपितु उन सभी की थी जिन्होंने इस घटना को देखा था। ●

बलभद्र, सुभद्रा व भगवान जगन्नाथ

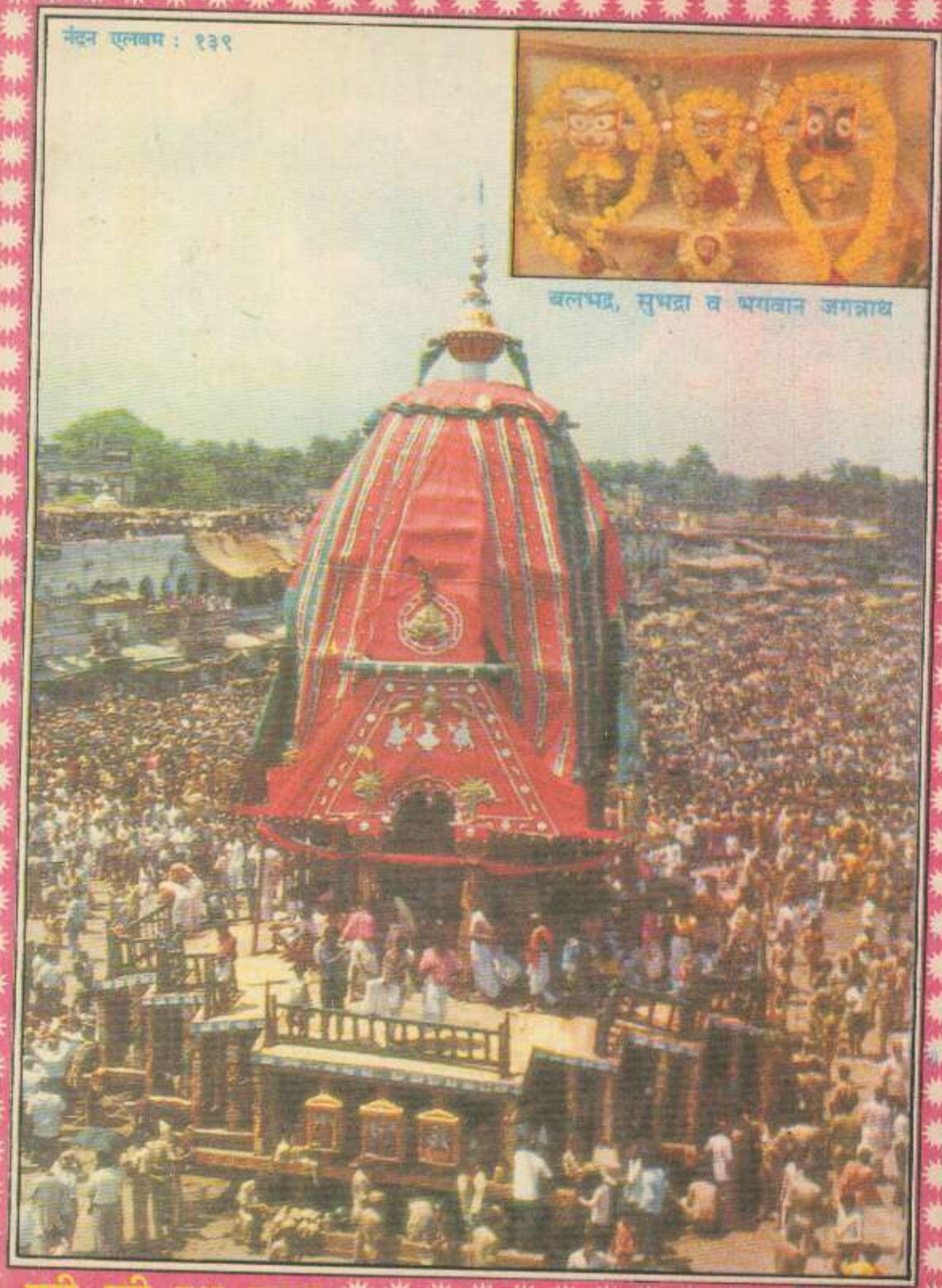

पुरी की रथ यात्रा

किस का धन

—ईश्वर लाल प. वैश्य

सतारा की राजगद्दी पर तब महाराज छत्रपति शिवाजी के पौत्र शाहू महाराज विराजमान थे। उनके राज्य काल में सम्पतराव गोखले नामक एक सज्जन लेन-देन का धंधा करते थे। वे जरूरतमंद लोगों को उधार देने और अतिरिक्त पूंजी वालों का धन अपने यहां जमा भी रखते। अपने रुपयों का जैसे ब्याज लेते थे, वैसे ही जमाकर्त्ताओं को ब्याज देते भी थे। पूरे राज्य में उनकी ईमानदारी की धाक थी। गरीब से गरीब और अनपढ़ व्यक्ति को भी उन्होंने कभी धोखा नहीं दिया था। पूरे राज्य में उनका धंधा फैला हुआ था और सभी उन्हें गोखले महाजन के नाम से ही पुकारते। गोखले महाजन सभी प्रकार से सुखी और संतुष्ट थे। धन तो उनके पास था ही, राजदरबार में मान और समाज में उनकी प्रतिष्ठा भी थी।

जब गोखले महाजन पर बुढ़ापा छाने लगा, तब उन्होंने अपना धंधा समेट लेने की सोची। एक-एक कर अपने सभी जमाकर्ताओं को बुलाकर उनकी पूंजी ब्याज सहित लौटा दी। निश्चय किया कि अब किसी की अमानत नहीं रखेंगे।

एक दिन पड़ोसी गांव का विश्वासराव सिर पर एक गठरी लेकर उनके यहां आया। नमस्कार कर गठरी उनके पैरों के पास रख दी। कहा— "जीवन के इतने वर्ष बेकार गंवा दिए। अब तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा है। ऐसी हालत में सूने घर में धन रख जाना उचित नहीं है। इसलिए जीवन भर की कमाई ये बीस

हजार रुपए आपके यहां रखने आया हूं। आपके यहां ये सुरक्षित रहेंगे।"

गोखले महाजन यह सुनकर परेशान हो उठे। जिस आफत से वह छूटना चाहते थे, वही उनका पड़ोसी फिर से उन्हें सौंप रहा था। गोखले महाजन ने उसे बहुत समझाया कि अब आयु पूरी होने को आई। उन्होंने यह धंधा बंद कर दिया है।

—"वाह! आप अपने भले के लिए सोच रहे हैं। लेकिन हमारा क्या होगा? जिम्मेदारी तो आपको उठानी ही होगी। सारी जिंदगी आपके साथ बिताई है। अब दूसरे के यहां कैसे जा सकता हूं?"

गोखले महाजन संकोच में पड़ गए। विश्वासराव का कहना सच था। गोखले महाजन को सोचते देख, विश्वासराव ने अपनी गठरी वहीं रख दी और जाने लगे। तब गोखले महाजन ने कहा— "अरे भाई! तुम जीते और मैं हारा। लाओ, अपनी बही लाओ। उसमें हिसाब लिख कर मैं अपने दस्तखत कर दूं।"

विश्वासराव खड़े-खड़े ही बोले— "मैं अपनी बही नहीं लाया हूं, न मुझे उसकी जरूरत है।"

गोखले महाजन का संकोच और भी बढ़ गया। बोले— "जरा ठहर जाओ। अलग कागज पर ही लिख देता हूं। नारायण न करे, अगर हम दोनों में से किसी की आंख बंद हो गई, तो पीछे वालों को तकलीफ न हो।"

लेकिन विश्वासराव इसके लिए भी तैयार नहीं हुए। "मुझे कुछ नहीं चाहिए।"— कहते हुए चले गए। तब गोखले महाजन ने हारकर अपनी बही में विश्वास राव की रकम जमा करने के बारे में लिख दिया।

इस बात को कई वर्ष बीत गए।

गोखले महाजन अब धंधा छोड़कर धर्म-कर्म में लग गए थे। बहियों को हाथ भी नहीं लगाते थे। लेकिन एक दिन यूं ही पुरानी बहियों के पन्ने पलटते-पलटते उन्हें विश्वासराव का खाता दिखाई दिया। कई वर्षों से विश्वासराव के बीस हजार रुपए जमा थे। विश्वासराव भी इस दौरान कभी अपनी रकम लेने नहीं आए। गोखले महाजन को मन ही मन शंका

होने लगी। क्या विश्वासराव अभी तक यात्रा से लौटा नहीं होगा? पता करवाना चाहिए।

वह इसी सोच में थे कि एक दिन उन्हें विश्वासराव का बेटा गोपाल दिख गया। गोखले महाजन ने उसे बुलाया और विश्वासराव की कुशल-क्षेम पूछी। गोपाल ने भारी मन से बताया कि यात्रा के दौरान ही उनका देहावसान हो गया। आगे पूछने पर बताया कि अब उसका धंधा भी पहले जैसा नहीं चलता है। बस, किसी प्रकार गुजारा हो जाता है।

गोखले महाजन ने कहा— "देख बेटा, इस बही को। इसमें तेरे पिता के नाम से बीस हजार रुपए जमा हैं। इन्हें ले जा और नए सिरे से अपना धंधा चला। भगवान ने चाहा तो सब ठीक हो जाएगा। तुझे आज रुपयों की जरूरत है और मुझे अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होना है।"

गोपाल एक क्षण के लिए तो भारी सोच में पड़ गया। लेकिन फिर सावधान होकर बोला— "दादा! आपकी बड़ी कृपा है। लेकिन मैं यह पैसा नहीं ले सकता, क्योंकि मेरे पिता की बही में ऐसी कोई

रकम नहीं लिखी है। यदि ऐसी रकम मेरे पिता ने आपके यहां जमा की होती तो वह अपनी बही में भी उसका हिसाब लिखते।"

गोखले महाजन ने गोपाल को कई प्रकार से समझाया, लेकिन वह नहीं माना। गोखले महाजन को तो अपने ऋण से उऋण होना था। वह अपने दिमाग पर अब इस अमानत का बोझ रखना नहीं चाहते थे। आखिर इस प्रकरण को शाहू महाराज के दरबार में न्याय के लिए भेज दिया गया।

शाहू महाराज और उनके दरबारी दोनों की ईमानदारी और सत्यनिष्ठा देख कर दंग रह गए। शाहू महाराज ने भी गोपालराव को बहुत समझाया कि उसको रुपयों की जरूरत है। जब गोखले महाजन कह रहे हैं कि यह उसके पिता का ही धन है, तो उसे ले लेना चाहिए।

लेकिन गोपालराव अपनी जिद पर अड़ा रहा। उसने कहा— "यदि यह धन मेरे पिता का होता तो वह अपनी बही में भी इसके बारे में लिखते। मेरी स्थिति देखकर और मेरे पिता के मित्र होने के नाते गोखले महाजन मेरी सहायता करना चाहते हैं।"

शाहू महाराज बड़े पसोपेश में पड़ गए। धन पाने की इच्छा रखने वाले तो उनके पास बहुत-से आए, मगर धन न लेने का फैसला करवाने वाले पहली बार आए थे।

काफी विचार करने के बाद अपना फैसला सुनाते हुए उन्होंने कहा— "इन दोनों लोगों को मैं अपने राज्य का गौरव मानता हूं। अब चूंकि गोखले महाजन इन बीस हजार रुपयों के बोझ से मुक्त ही होना चाहते हैं और विश्वासराव के पुत्र गोपालराव जरूरत होते हुए भी उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, इसलिए इस बड़ी रकम को मैं सरकारी खजाने में जमा करने का आदेश देता हूं। गोपालराव कल से इस राज्य के शाही खजाने के मुख्य कोषाधिकारी नियुक्त किए जाते हैं।"

दरबार में उपस्थित सभी दरबारियों ने इस न्याय की खूब प्रशंसा की। ●

बचाओ-बचाओ

—डा. ओमप्रकाश सिंहल

सैकड़ों साल पहले अफ्रीका में एक बुढिया रहती थी। एकदम अकेली—न पति, न बच्चे और न ही कोई रिश्तेदार। एक दिन उसने सोचा—'यदि मैंने विवाह कर लिया होता, तो आज यह हालत न होती। पति और बच्चे मेरी खूब देखभाल करते। वे मेरी हर इच्छा पूरी करते। पर अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'

एक दिन बुढ़िया अपनी समस्या सुलझाने के लिए अपने इलाके के प्रसिद्ध जादूगर के पास गई। जादूगर ने उससे पूछा—"तुम क्या चाहती हो—पति या बच्चे?" बुढ़िया ने एक-दो मिनट सोचने के बाद जवाब दिया—"मुझे बच्चे चाहिएं।" जादूगर ने कहा—"तुम तीन देगचियां लेकर अंजीर के ऐसे पेड़ के पास जाओ,जो फलों से अच्छी तरह लदा हो। फिर फल तोड़कर देगचियों को अच्छी तरह से भरना। उन्हें अपनी झोंपड़ी में रखकर शाम तक के लिए घूमने चली जाना।" यह सुन बुढ़िया खुशी-खुशी घर लौट आई।

कई दिन तक बुढ़िया फलों से लदे अंजीर के पेड़ की तलाश करती रही। आखिर उसे मनपसंद पेड़ मिल ही गया। उसने ढेर सारे फल तोड़े। फिर उन्हें देगचियों में भरा। उन्हें अपने सिर पर रखकर झोंपड़ी में ले गई। उसने देगचियों को घर के साफ-सुथरे कोने में रख दिया।

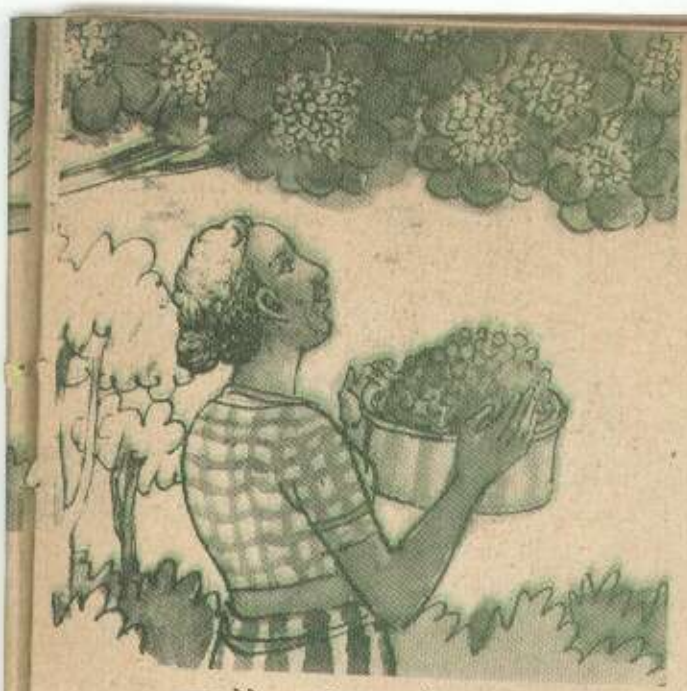

शाम होने पर बुढ़िया घर लौटी । झोंपड़ी के पास पहुंचते ही उसे कुछ शोर सुनाई दिया । वह सोचने लगी—'कहीं मेरी झोंपड़ी में चोर तो नहीं घुस आए । मैं झोंपड़ी में जाऊं या नहीं ?' पर शोर कम ही नहीं हो रहा था । वह आवाज ध्यान से सुनने लगी । कुछ देर बाद वह यह समझ गई कि यह शोर बच्चों का है । वह निडर होकर अपनी झोंपड़ी में गई । वहां उसे बहुत से बच्चे दिखाई दिए ।

बच्चों ने मुसकराकर बुढ़िया का स्वागत किया । झोंपड़ी की हालत देखकर वह आश्चर्य से भर उठी । झोंपड़ी के एक कोने में कई देगचियों में तरह-तरह के व्यंजन रखे थे । दूसरी ओर चमचमाते हुए बर्तन सजे थे । तीसरी ओर बैठने का स्थान सजाया गया था । चौथी ओर सोने के लिए बिस्तर लगा था । बुढ़िया ने यह देखकर बच्चों को शाबाशी दी ।

अब बुढ़िया के दिन आराम से कटने लगे । बच्चे घर-बाहर के सभी कामों में उसका हाथ बंटाते । वे खेत जोतते, निराई करते । फसल तैयार होने पर काटकर घर लाते ।

लेकिन समय के साथ-साथ बुढ़िया के स्वभाव में बदलाव आने लगा । अब अगर कभी कोई बच्चा किसी काम को करने से मना कर देता, तो उसका पारा चढ़ जाता । वह कभी बच्चों को झिड़क देती, तो कभी उनकी पिटाई कर देती ।

बच्चे सोचते कि ऐसी हंसमुख मां चिड़चिड़ी क्यों हो गई ? एक दिन बुढ़िया ने बच्चों को यह भी कह दिया—"तुम सब मेरी संतान न होकर अंजीर के पेड़ की संतान हो ।" बच्चों को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ । लेकिन वे चुप ही रहे ।

दोपहर का समय था । बुढ़िया घर में नहीं थी । तभी बच्चों ने फैसला किया कि चूंकि वे बुढ़िया के बच्चे नहीं हैं, इसलिए उन्हें यह घर छोड़ देना चाहिए । फिर वे अंजीर के पेड़ पर वापस चले गए और फलों के रूप में टहनियों पर लटक गए ।

शाम होने पर बुढ़िया घर लौटी । घर में सन्नाटा था । उसे बच्चे भी दिखलाई नहीं दिए । उसने बच्चों को आवाज लगाई । पर झोंपड़ी में कोई होता, तो आता ।

बुढ़िया जादूगर के पास गई । उसे सारी बात बताई । बच्चों को घर लाने के लिए उससे मदद मांगी, पर जादूगर ने असमर्थता जताई । बुढ़िया ने उससे पूछा—"क्या मुझे फिर से उसी पेड़ के पास जाना चाहिए ?" जादूगर ने जवाब दिया—"कोशिश करके देख लो ।" बुढ़िया घर लौटी । वह देगचियां लेकर अंजीर के पेड़ के पास गई । वह पेड़ पर चढ़ी । उसने फल तोड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, तभी फल उसे घूर-घूरकर देखने लगे । वह डर गई । फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी । उसने दुबारा फल तोड़ने की कोशिश की ।

लेकिन इस बार भी फलों ने उसे पहले की तरह घूरकर देखा तो वह डर गई । कई बार प्रयत्न करने के बाद भी वह फल तोड़ने में सफल न हुई । आखिर उसने नीचे उतरने का फैसला कर लिया । पर यह क्या ? उससे नीचे न उतरा गया । उसे जोर-जोर से आवाज लगानी पड़ी—"मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ !" उसकी गुहार सुनकर लोग पेड़ के पास इकट्ठे हो गए । उन्होंने बड़ी मुश्किल से बुढ़िया को पेड़ से उतारा । इसके बाद बुढ़िया फिर कभी बच्चों को ढूंढ़ने नहीं गई ।

●

www.kissekahani.com

बरगद की बांह

— उमा पंत

देवताओं और असुरों के संग्राम में असुर पराजित हो गए। अब देवताओं के सामने अपने शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्रों की सुरक्षा का सवाल आया। वे सोचने लगे—'अब अस्त्र-शस्त्र ऐसी जगह रखें जाएं, जहां असुर इन तक न पहुंच सकें।'

बहुत सोच-समझकर वे ऋषि दधीचि के आश्रम में पहुंचे। हाथ जोड़कर बोले—"तीनों लोकों में आपका आश्रम ही एक ऐसी जगह है, जहां हमारे हथियार पूरी तरह सुरक्षित रह सकते हैं। आप इन्हें यहां रखने की अनुमति दें, बड़ा उपकार होगा।" उनकी बात सुनकर महर्षि दधीचि ने आश्रम में अस्त्र-शस्त्र रखने की अनुमति दे दी।

ऋषि पत्नी गभस्थिनी बोलीं— 'देवताओं को आश्रम में हथियार रखने की अनुमति देकर आपने अच्छा नहीं किया। हमारे लिए तो सभी बराबर हैं। आश्रम वासियों को सुर-असुरों से क्या लेना-देना ?"

दधीचि सोच में पड़ गए—'अब क्या किया जाए ? एक बार वचन दे दिया तो बदला भी नहीं जा सकता।' वह अस्त्र-शस्त्रों की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठे। उन्होंने मंत्र से जल का अभिषेक किया। उसमें सभी अस्त्र-शस्त्र धो डाले। अस्त्रों का सारा तेज उसी जल में आ गया। वह जल ऋषि पी गए। निस्तेज अस्त्र-शस्त्रों की सुरक्षा की कोई चिंता अब न रही।

उधर दानव अपनी हार का बदला लेने के लिए बेचैन थे। वे फिर आक्रमण की तैयारियां करने लगे।

एक दिन देवगण अपनी धरोहर लेने आ पहुंचे। दधीचि ने उन्हें शस्त्रों के निस्तेज होने की बात बता दी। वे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। कहने लगे—"अब क्या होगा ?"

महर्षि शांत भाव से बोले—"आप लोग चिंता न करें। इन अस्त्र-शस्त्रों की सारी शक्ति मेरी हड्डियों में समा गई है। आप इन हड्डियों से निस्संकोच हथियार बनाएं।" उसी समय योगबल से उन्होंने प्राण त्याग दिए। दधीचि की हड्डियों से विश्वकर्मा ने वज्र तैयार किया। संग्राम में उसी वज्र से देवताओं ने दानवों को पराजित कर दिया।

स्नान कर गभस्थिनी आश्रम में आईं, वहां पति को न पाकर चिंतित हो उठीं। ध्यान किया, तो सारा दृश्य आंखों के आगे आ गया। वह दुखी हो उठीं। कुछ समय बाद गभस्थिनी ने एक स्वस्थ शिशु को जन्म दिया। उन्होंने सोचा—'अब इस शरीर की जरूरत नहीं रही। परंतु मेरे पीछे इस बच्चे की देखभाल कौन करेगा ?'

उन्हें सोच में डूबा देख, आश्रम की वनस्पतियां बोलीं—"आपने हमें मां की तरह पाला है। क्या हम आपके किसी काम आ सकती हैं ?" वनस्पतियों के इस प्रश्न से गभस्थिनी का मन एकदम हल्का हो गया। वह बोलीं—"तुम ही तो हो, जो मेरा काम कर सकती हो। आज मैं अपने कलेजे का टुकड़ा, यह नवजात शिशु तुम्हें सौंपती हूं। आज से इसकी देखभाल तुम सब मिलकर करना।"

"आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, परंतु आप हमें छोड़कर न जाएं।" —यह कहकर पेड़-पौधे सब बिलखने लगे।

"नहीं मेरे बच्चो, अब यहां से विदा लेनी ही होगी। मेरे जाने का समय आ गया है।"—ऐसा कहकर आश्रम की वृक्ष-लताओं, फूल-पौधों, पशु-पक्षियों को अपना नवजात शिशु सौंपकर, गभस्थिनी चल पड़ीं।

वनस्पतियां बच्चे को पाकर धन्य हो उठीं। वृक्ष उसे जीवन-रस पिलाते, जंगल की जड़ी-बूटियां उसके मुंह में अमृत की बूंदें टपकातीं, फूल उसे अपने मुलायम गद्दों पर सुलाते, लताएं झूला झुलातीं और पक्षी मधुर गीत सुनाते। वनस्पतियों द्वारा पाला-पोसा गया वह बच्चा, पिप्पलाद के नाम से जाना जाने लगा।

प्रकृति के हाथों पलता-संभलता वह बड़ा हो गया। धीरे-धीरे वह आश्रम के बाहर दूसरे बच्चों के साथ खेलने-कूदने लगा। मेल-जोल बढ़ा, तो दूसरे

बच्चे उससे माता-पिता के बारे में पूछताछ करने लगे। पिप्पलाद कुछ न कह पाता। उसे कुछ पता ही न था। आखिर एक दिन वह बूढ़े बरगद के पास गया। पूछा—दादा, मेरे माता-पिता कौन हैं ?"

बरगद बोला—"ये वनस्पतियां ही तेरी माता हैं पुत्र। इन्होंने अपना रस पिलाकर तुझे पाला है। ये पेड़ तेरे भाई-बंधु हैं। इन्हीं की छत्रछाया में तू बड़ा हुआ है।"

"यह सब तो ठीक है दादा, मुझे पाल-पोसकर बड़ा करने वाले यही हैं। परंतु मनुष्य रूप में मुझे जन्म देने वाले माता-पिता कौन हैं, मैं यह जानना चाहता हूं ?"—पिप्पलाद ने अधीर होकर कहा।

बरगद ने उसे उसके जन्म की पूरी कहानी सुना दी। एक-एक बात बताई, किस तरह देवताओं ने दानवों से युद्ध जीतने के लिए उसके पिता की अस्थियां प्राप्त कीं। फिर किस तरह उनसे वज्र बनाया। गर्भस्थिनी ने किस तरह धैर्यपूर्वक उसके जन्म की प्रतीक्षा की। जन्म के बाद उसे वनस्पतियों को सौंपकर वह अपने पति के पीछे चली गईं। माता-पिता की कथा सुन, पिप्पलाद देवताओं के प्रति क्रोध से भर उठा। उसे लगा देवताओं के कारण ही उसके माता-पिता की मृत्यु हुई।

-'मेरे पिता ने किस तरह देह त्यागकर देवों को अस्थिदान दिया होगा। मां ने कितना कष्ट सहकर मुझे जीवन दिया होगा। किस तरह मां ने कलेजे पर पत्थर रखकर मुझे वनस्पतियों को सौंप, मृत्यु को गले लगाया होगा।'

यह सोचकर पिप्पलाद का मन देवताओं के प्रति कड़वा हो गया।

वह चिल्लाकर बोला—"मैं हत्यारे देवताओं से बदला लूंगा।"

वनस्पतियों ने बहुत समझाया, परंतु वह न माना। ध्यानमग्न होकर भगवान शंकर से प्रार्थना करने लगा—"मुझे शक्ति दो प्रभु। जिन देवताओं ने मुझसे मेरे माता-पिता को छीना है, मैं उनसे उनका जीवन छीन सकूं।' पिप्पलाद की प्रार्थना से भयभीत होकर देवताओं ने भगवान शंकर के चरण पकड़ लिए। बोले— "पिप्पलाद ने हमसे बदला लेने की ठान ली है।"

देवताओं की प्रार्थना सुन भोलेनाथ मुसकरा उठे। आसन छोड़कर वहां जा पहुंचे जहां पिप्पलाद ध्यान में बैठा, उनकी प्रार्थना कर रहा था।

— "उठो बालक ! तुम महान माता-पिता की संतान हो। तुम्हारे पिता ने परोपकार के लिए देह त्याग दी थी। तुम्हारी मां ने परोपकारी पति का साथ देने के लिए संतान का मोह त्याग दिया। और तुम सिर्फ बदला लेने के लिए देवताओं को नष्ट करना चाहते हो ? क्या मिलेगा बदला लेकर ? तुम अपने माता-पिता के दर्शन चाहते हो, तो सामने देखो।"

पिप्पलाद के सामने उसके माता-पिता खड़े थे। दधीचि बोले—"बदला न लेना मेरे पुत्र, हो सके तो अपने तप से बदला लेने वाले का मन निर्मल कर देना। यही जीवन की सार्थकता है।"

गर्भस्थिनी बोलीं—"तुम्हें दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है, बदला लेकर उसे कलंकित न करना। अपनी सारी शक्ति परोपकार में लगा देना—यही मेरी इच्छा है और यही मेरा आशीर्वाद।"

"ऐसा ही होगा मां !" —पिप्पलाद ने माता-पिता को प्रणाम किया। भीतर सुलगी हुई बदले की आग ठंडी हो गई। उसका मन एकदम शांत और निर्मल हो गया।

बच्चे का खिला हुआ मुखमंडल देख, वनस्पतियां प्रसन्न हो गईं। बूढ़े बरगद ने वात्सल्य भाव से भरकर पिप्पलाद को अपनी बांहों में लपेट लिया। बोला—"महर्षि-पुत्र, तुम्हारे माता-पिता के साथ ही आज उन सारी वनस्पतियों का भी जीवन धन्य हो गया, जिन्होंने अपना रस पिलाकर तुम्हें पाला था।" उस दिन से पिप्पलाद मानव कल्याण के कामों में जुट गया। ●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट**।

कहानी लिखो : १३९

☐ सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ जून '९५ तक कहानी लिखो, नंदन मासिक, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : अगस्त '९५

चित्र-पहेली : १३९

☐ 'चिड़ियाघर की सैर' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए, जो ६"×९" से बड़ा न हो। चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता लिखिए। उसे १५ जून '९५ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र नंदन में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : सितम्बर '९५

पानी का मोल

—हरफूल सुईवाल

तारानगर गांव में भानुप्रताप सिंह जमींदार था। वह लोभी था। उसने खूब धन-संपत्ति जमा कर ली थी। दिनों-दिन बढ़ते धन के कारण वह अपने को खुशकिस्मत समझता था।

जमींदार का एक बेटा था। पुत्र मोह के कारण अक्सर वह सोचा करता—'जिस दिन मेरा पुत्र जमींदार बनेगा, उस दिन उसके पास इतना धन और संपत्ति होगी, जितनी मेरे लिए मेरे पिता भी नहीं छोड़ गए थे। तब मेरे बेटे को मेरे ऊपर खूब गर्व होगा।'

भानुप्रताप के पास एक घोड़ा था। एक दिन घोड़ा बीमार पड़ गया। चार-छह दिन बीते मगर घोड़ा ठीक नहीं हुआ। जमींदार चिंतित हो उठा। वह सोचने लगा—'यदि घोड़ा मर जाएगा तो दूसरा घोड़ा खरीदना पड़ेगा, पैसे खर्च करने पड़ेंगे।'

एक दिन बीमार घोड़े को देखकर, उसके बेटे ने कहा—"पिता जी, यह घोड़ा ठीक होने पर भी कई दिन तक सवारी के काबिल नहीं होगा। यह बहुत कमजोर हो गया है। इसलिए आप दूसरा घोड़ा खरीद लें।"

—"नहीं बेटा, दूसरा घोड़ा खरीदने में तो सैकड़ो रुपए खर्च होंगे। अच्छा तो यह रहेगा कि इलाज करवाकर इसी घोड़े को ठीक कर लें।"

—"लेकिन आपको तो बगीचे और खेतों की देखभाल के लिए अक्सर जाना पड़ता है। जब तक घोड़ा ठीक होगा, क्या पैदल जाएंगे? तब तो आपकी शान को बहुत ठेस लगेगी।"

बेटे की बात सुन, एक बार तो वह सोच में पड़ गया। तभी उसने सोचा—'भला मेरी शान में क्या ठेस लग सकती है? आखिर एकाध बार तो पैदल भी आ-जा सकता हूं। पर मेरा बेटा कैसे पैदल चल सकता है?' तभी उसने कहा—"कल ही दूसरा घोड़ा खरीद लो बेटा। जिस दिन अपना घोड़ा ठीक होकर सवारी लायक हो जाएगा, उसी दिन उसे बेच देंगे।"

अगले दिन जमींदार के घर दूसरा घोड़ा आ गया पर वह तो मन ही मन अब भी यही सोचता—'काश! मेरा घोड़ा बीमार न पड़ता तो यह घोड़ा नहीं खरीदना पड़ता।'

आठ-दस दिन बीत गए, उसका घोड़ा ठीक नहीं हुआ। एक दिन दोपहर से पहले जमींदार बीमार घोड़े की चिंता में बैठा था। तभी उसके बेटे ने आकर बताया—"पिता जी, कर्णपुर गांव का चंद्रमुख पटेल बीमार घोड़ों के इलाज में खूब होशियार है। आप कहें तो मैं उसे बुला लाऊं।"

बेटे की बात सुन, जमींदार की चिंता कुछ कम हुई। लेकिन बाहर तेज धूप देख, उसने बेटे को भेजना ठीक न समझा। खुद ही कर्णपुर जाने की ठान ली। उसने एक थैली में कुछ चांदी के रुपए भरे। थैली लेकर घोड़े पर बैठ गया तो उसके बेटे ने दोपहर बाद जाने की बात कही, लेकिन जमींदार न माना।

कर्णपुर गांव का रास्ता लंबा और सुनसान था। जमींदार का घोड़ा दौड़ा जा रहा था। रास्ते में दोनों ओर कहीं कोई घर और बस्ती नहीं थी। जमींदार एक सुनसान बीहड़ के बीच से गुजर रहा था कि उसे प्यास लगने लगी। तेज धूप और प्यास ने उसका बुरा हाल बना दिया।

इस रास्ते से वह कई बार कर्णपुर आ-जा चुका

था। उसे याद आया कि बीहड़ के पार होते ही आगे एक साधु रहता है, जहां उसे पानी मिल सकता है।

उसी समय जमींदार को दो राहगीर मिले। उनके पास पानी देख उसने कहा—"अरे भाई, मुझे बड़े जोर की प्यास लगी है। थोड़ा पानी पिला दो।"

उसकी बात पर दोनों राहगीरों ने आपस में एक-दूसरे का चेहरा देखा, फिर एक ने कहा—"पिला तो देंगे, पर मुफ़्त में नहीं। पानी की कीमत चुकानी होगी।"

"कितनी कीमत ?"—प्यासे जमींदार ने कमजोर आवाज में कहा।

"ज्यादा नहीं...बस, थैली दे दो जिसमें रुपए भरे हैं।"

पानी की इतनी कीमत उसे पसंद नहीं आई। उसने कहा—"अरे भाई, एक लोटे पानी की इतनी कीमत तो ज्यादा है। हां, तुम चाहो तो चांदी के दो रुपए दे सकता हूं।"

"नहीं।" —कहकर राहगीर आगे बढ़ गए। उन्होंने सोचा, यदि वह सचमुच ही प्यासा है तो उसे पानी की मुंहमांगी कीमत चुकानी ही पड़ेगी।

उनको आगे बढ़ते देख जमींदार ने कहा—"मैं भी इतना मूर्ख नहीं हूं जो थोड़े-से पानी के बदले इतनी बड़ी कीमत चुका दूंगा।" राहगीरों ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और आगे बढ़ने लगे।

बीहड़ पार करके जब जमींदार साधु की झोंपड़ी तक पहुंचा, तो प्यास के मारे उसका बुरा हाल हो गया था। घोड़े से उतरकर वह झोंपड़ी में घुस गया। सामने वही साधु बैठे थे।जमींदार इतना ही कह पाया—"मुझे प्यास लगी है। पानी पिला दो।" कहकर उसने रुपयों की थैली नीचे रखी और खुद एक ओर लुढ़क गया। वह बेहोश हो गया था।

साधु ने उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारे। तब कहीं जाकर जमींदार को धीरे-धीरे होश आया। होश आते ही जमींदार ने झट पानी पिया। फिर साधु की ओर देखकर कहा—"महात्माजी, सचमुच मैं कितना भाग्यशाली हूं, जो प्यासा मरने से बच गया।"

"सच कहते हो। यदि थोड़ी देर भी तुम्हें पानी नहीं मिलता तो शायद बचना मुश्किल था। पर मुझे तो तुम भाग्यशाली होने के बजाए अभागे नजर आते हो।" —साधु ने कहा।

साधु की बात सुनकर जमींदार को बहुत गुस्सा आया। पर शांत होकर वह बोला—"यह तो मेरा सौभाग्य था जो बेहोश भी हुआ तो पानी के पास पहुंच कर। अगर अभागा होता तो कहीं बीच रास्ते में ही बेहोश होकर गिर पड़ता, जहां प्यास के कारण मेरी जान निकल जाती।"

अब साधु ने गंभीर होकर कहा—"मैं जानता हूं। तुम तारानगर के जमींदार भानुप्रताप सिंह हो – अव्वल दर्जे के लोभी। सुनो, भाग्यशाली वह होता है जिसने जो पाया वही खाया। अभागा वह जो मर गया और छोड़ गया।"

एक ही पल में साधु की बात का अर्थ जमींदार की समझ में आ गया। यदि वह राहगीरों को उनकी मुंहमांगी कीमत चुकाकर भी पानी पी लेता तो आज बेहोश होने से बच जाता। अगर वह साधु के पास पहुंचने से पहले ही कहीं रास्ते में बेहोश होकर गिर जाता, तो उसकी मौत निश्चित थी। तब चांदी के रुपयों की थैली उसके क्या काम आती ? ●

गंगा मां आई

— जयप्रभा

मुंगुज गांव में पेरम भट्ट ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नी का नाम लक्ष्मी था। उनके एक पुत्र हुआ जिसका नाम उन्होंने जगन्नाथ रखा। पिता ने जगन्नाथ को खूब अच्छी शिक्षा दी। बड़े होने पर जगन्नाथ कविता करने लगे।

आंध्र प्रदेश छोड़कर वह दिल्ली आ गए। दिल्ली में उन दिनों जहांगीर बादशाह थे। जगन्नाथ की विद्वत्ता देखकर इन्हें दरबार में रख लिया। कुछ समय बाद उदयपुर नरेश जगतसिंह के यहां चले गए। जगन्नाथ ने नरेश की प्रशंसा में 'जगदाभरण' ग्रंथ की रचना की। जब शाहजहां दिल्ली की गद्दी पर बैठे, तो उन्होंने पं. जगन्नाथ को अपने यहां बुलवा लिया। शाहजहां के महल में लवंगी नामक सुंदर कन्या थी। शाहजहां उसे अपनी पुत्री की तरह मानते थे। पं. जगन्नाथ का विवाह लवंगी से हो गया। जगन्नाथ की कविता से प्रभावित होकर शाहजहां ने उन्हें पंडितराज की उपाधि भी दी। अब तो पंडितराज जगन्नाथ के नाम की धूम मच गई।

पंडितराज जगन्नाथ का जीवन सुख से बीतने लगा। उन्होंने कितने ही श्रेष्ठ ग्रंथों की रचना की। कुछ बरस उन्होंने मथुरा में भी बिताए। बूढ़े होने पर पंडितराज काशी आ गए। लेकिन काशी के पंडितों ने इनको मान-सम्मान नहीं दिया। उनका कहना था— 'इनका विवाह यवन कन्या से हुआ है। हम इनका बहिष्कार करेंगे।'

पंडितराज इस अपमान को सहन न कर पाए। वह पत्नी को साथ लेकर गंगा घाट पर रहने लगे। वहां रहते हुए ही उन्होंने गंगा की स्तुति में स्तोत्र रचे। बावन श्लोकों की इस पुस्तक को 'गंगालहरी' नाम दिया गया। इसमें गंगा के अनोखे सौंदर्य का वर्णन है।

कहा जाता है कि पंडितराज पर गंगा प्रसन्न हुई। पंडितराज एक-एक श्लोक गाने लगे, तो गंगा का जल एक-एक सीढ़ी ऊपर उठने लगा। बावनवीं सीढ़ी पर पंडितराज और उनकी पत्नी बैठे थे। बावन श्लोक पूरे होने पर गंगा का जल वहां तक पहुंच गया था। गंगा ने इन्हें अपनी गोद में समा लिया।

गंगा दशहरे पर आज भी 'गंगालहरी' का पाठ करते हैं।

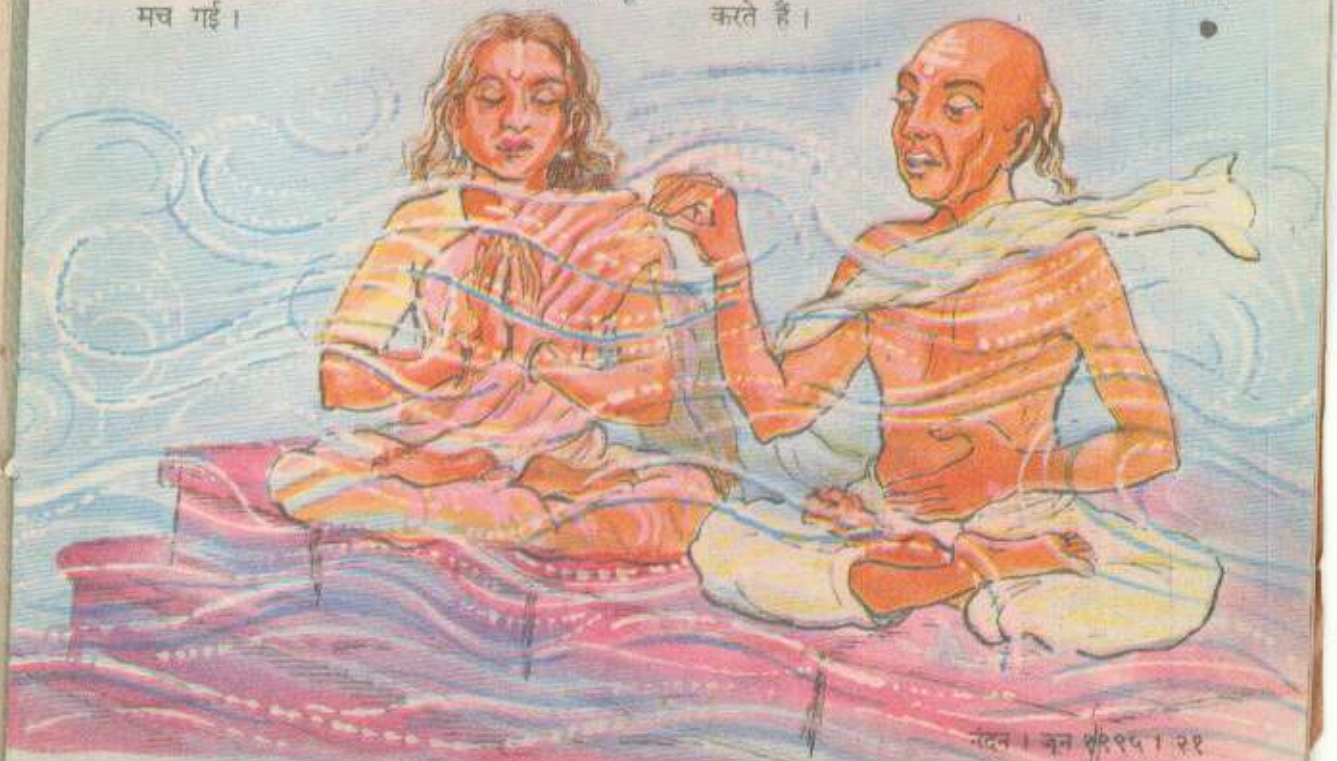

पेड़ों पर रहने वाला मेंढक

ओलम्पिक खेलों के लिए सुंदर स्टेडियम : सदी के आखिरी ओलम्पिक यहां होंगे

बहुत दूर और खूब बड़ा आस्ट्रेलिया

होते हैं तोते ऐसे वहां

ऊन के लिए मशहूर

(विशेष लेख पृष्ठ ५३ पर)

ब्रिसबेन नदी में सैर : रानी नामक जहाज

आस्ट्रेलियाई लड़की : साथ में खिलौना नहीं कोआला

छात्रा : शिक्षा का खेल

सिडनी का आपेरा हाउस : संगीत और नाच

कंगारू का देश

सौजन्य : आस्ट्रेलियन साई कमीशन

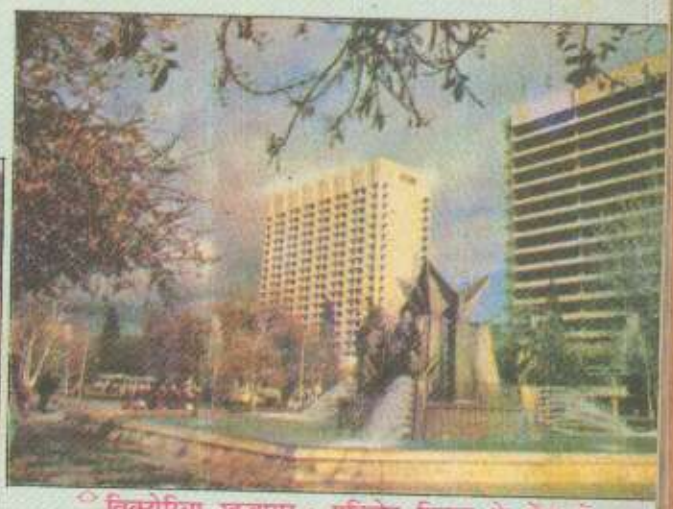

विक्टोरिया स्क्वायर : एडिलेड हिल्टन के केंद्र में

ब्रिसबेन : हर रात दीवाली यहां

www.kissekahani.com

शिला पर लिखा

— सी. एस. लेविस

जिल पोल और स्क्रब एक ही कक्षा में पढ़ते थे। उनके सहपाठी कुछ ज्यादा ही शरारती थे। सीधी-सादी जिल पोल को वे अक्सर परेशान करते रहते। एक दिन जिल विद्यालय के बाग में बैठी थी, तभी उसके सहपाठियों ने उसे घेर लिया। वे जिल की हंसी उड़ाने लगे। उनसे बचने के लिए जिल बाग के दूसरे कोने की तरफ भागी और झाड़ियों के पीछे जा छिपी।

तभी स्क्रब भी वहां आ गया। वहां से बाग की चारदीवारी में बना दरवाजा दिखाई पड़ रहा था। दरवाजा खुला हुआ था। स्क्रब ने जिल की परेशानी समझ ली। उसने कहा—"जिल, आओ उस दरवाजे से हम पीछे वाले मैदान में निकल चलें। मैंने सुना है उस तरफ कोई नहीं जाता।"

एक दूसरे का हाथ थामे जिल और स्क्रब दरवाजे से होकर दूसरी तरफ निकल गए। उन्होंने सुन रखा था कि पीछे ऊबड़खाबड़ मैदान है, लेकिन वहां का दृश्य हैरान कर देने वाला था। धरती मखमल जैसी हरी घास से ढकी थी। सब तरफ ऊंचे-ऊंचे पेड़ खड़े थे। दोनों बढ़ते चले गए। वे जैसे किसी अनजानी जगह पहुंच गए थे। तभी उन्होंने पाया कि वे एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हैं। स्क्रब ने नीचे झांका तो उसका सिर चकरा गया। हवा में एक चीख गूंजी और वह चोटी से नीचे फिसल गया। डर के मारे जिल के होश उड़ गए। वह जल्दी से पीछे हटी तो उसे एक विशाल शेर बैठा दिखाई दिया।

'मैं सपना देख रही हूं।'—जिल धीरे से बड़बड़ाई, लेकिन वह सपना नहीं था। तभी शेर का मुंह खुला। आवाज आई—"डरो मत, बच्ची। मेरा

नाम असलान है। मैंने ही तुम्हारे साथी को नरनिया के विचित्र देश में भेजा है। वह सुरक्षित है। अब तुम ध्यान से मेरी बात सुनो।''

शेर को अपनी तरह बोलते सुन जिल की घबराहट कुछ कम हुई।

शेर कह रहा था—''नरनिया में एक बूढ़ा राजा है कैस्पियन। वह बहुत दुखी रहता है, क्योंकि उसका इकलौता बेटा राजकुमार रिलियन गायब हो गया है। तुम दोनों को मिलकर रिलियन को खोजना है।''

''स्क्रब का पता नहीं है। हम तो छोटे बच्चे हैं। हम राजकुमार का पता कैसे लगाएंगे ?''—जिल ने साहस जुटाकर कहा। स्क्रब के पहाड़ी से गिर जाने के बाद वह बेहद घबरा गई थी। जिल आंसू बहाने लगी।

शेर ने आगे कहा—''तुम दोनों को दानव नगर में जाना होगा।''वहां एक पत्थर पर कुछ लिखा हुआ मिलेगा। जो भी लिखा हो, वैसा ही करना। अगर खोया हुआ राजकुमार मिल जाए और वह मेरा नाम ले तो उसकी सहायता करना।'' कहते हुए असलान ने अपना मुंह पूरा खोल दिया। एकाएक तेज हवा बहने लगी। जिल ने अपने को हवा में उड़ते हुए महसूस किया और वह भी स्क्रब की तरह पहाड़ी से नीचे जा गिरी।

जिल नरम घास पर गिरी। उसे जरा भी चोट नहीं लगी। फिर उसे स्क्रब की आवाज सुनाई दी—''जिल, कैसी हो ?'' स्क्रब को सुरक्षित पाकर जिल खुश हो गई। उसने स्क्रब का हाथ पकड़ लिया।

सामने समुद्र लहरा रहा था। सागर तट पर भव्य भवन बने थे। तट पर एक शानदार नौका खड़ी थी। बहुत भीड़ थी। तभी राजसी वस्त्रों में सजा एक बूढ़ा आदमी नौका में जा बैठा। देखते-देखते नौका तट से दूर चली गई। वहां जमा लोग भी चले गए।

जिल ने स्क्रब को वह सब बता दिया, जो असलान ने उसे बताया था। स्क्रब बोला—''बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। हम कहां आ गए हैं ! असलान कौन है ? उसने हमें खोए राजकुमार को ढूंढ़ने का काम क्यों सौंपा है ? हम अपने घर कैसे लौटेंगे ?''

जिल ने कहा—''तुम ठीक कह रहे हो, हिम्मत रखो। देखो, आगे क्या होता है। राजकुमार रिलियन कौन है, वह कहां खो गया, इस बारे में हमें जानकारी लेनी चाहिए।''

वहां उन्हें एक बौना मिला। उसने कहा—''बच्चो, राजा कैस्पियन ही नौका में यात्रा पर निकले हैं। बेटे के खो जाने के बाद से वह बहुत उदास हैं।'' फिर उसने राजकुमार रिलियन की पूरी कहानी सुना दी।

राजा कैस्पियन नरनिया के विचित्र लोक पर सुख से शासन करते थे। एक बार राजकुमार रिलियन अपनी मां महारानी के साथ सैर पर निकला। उसके साथ अनेक दरबारी और सैनिक भी थे। दोपहर को वे एक छायादार कुंज में रुके।

रानी कुंज में विश्राम करने लगी। तभी झाड़ियों में से एक भयानक सांप निकला। उसने रानी को डस लिया। वह फिर से झाड़ियों में जा छिपा। रानी को तुरंत राजधानी लाया गया। बड़े-बड़े वैद्य आ जुटे, लेकिन रानी के प्राण नहीं बचाए जा सके। नरनिया में शोक छा गया। राजकुमार रिलियन ने प्रण किया कि वह अपनी मां की मौत का बदला अवश्य लेगा।

बस, हर सुबह राजकुमार तलवार लेकर उसी कुंज में पहुंच जाता और झाड़ियों में उस सांप को ढूंढ़ता। शाम घिरने लगती तो निराश होकर लौट आता। एक दिन साथ गए सैनिकों ने कुंज में एक सुंदर स्त्री को देखा—उसने राजकुमार को इशारा किया तो वह उसकी तरफ चला गया। फिर देखते-देखते वह सुंदर स्त्री और राजकुमार रिलियन अदृश्य हो गए। उसके बाद से राजकुमार का कुछ पता नहीं चला। अपने बेटे के दुःख में राजा कैस्पियन समय से पहले बूढ़े हो गए। उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया।

अब स्क्रब और जिल को महसूस हुआ कि असलान ने उन्हें कितना बड़ा काम सौंपा है। उन्होंने बौने से कहा—''हमें दानव नगर जाने वाला रास्ता बताओ। हम राजकुमार की खोज में जाना चाहते

हैं।" जिल के कानों में असलान के शब्द गूंज रहे थे।

बौने ने कहा—"मैं खुद तुम्हारे साथ चलूंगा। राजकुमार रिलियन की खोज में हाथ बटाऊंगा। मैं अपने राजा को सुखी देखना चाहता हूं। आज तक जितने लोग भी राजकुमार की खोज में गए, उनमें से कोई भी लौटकर नहीं आया। न जाने उन सबका क्या हुआ ? अगर तुम राजकुमार का पता लगा सके तो यह नरनिया पर सबसे बड़ा उपकार होगा। हम सब बच जाएंगे।" जिल ने बौने को यह नहीं बताया कि असलान ने उससे क्या कुछ कहा था। उन बातों को वह अभी रहस्य ही रखना चाहती थी।

सबसे पहले उन्हें दैत्यों की घाटी से गुजरना पड़ा। स्क्रब ने रास्ते के एक तरफ बड़े-बड़े पत्थर देखे। जैसे ही ये पत्थरों के निकट गए, वे दैत्यों में बदल गए। पर लंबे-ऊंचे दैत्यों ने इन तीनों को नहीं देखा और ये बचकर आगे निकल गए।

"मान लो,दैत्यों की नजर हम पर पड़ जाती तो..." —जिल ने पूछा और उसका शरीर कांप उठा। तभी दैत्यों का शोर सुनाई देने लगा, जैसे बादल गरज रहे हों। ये तीनों एक गुफा में छिप गए। काफी देर बाद जब सब तरफ शांति छा गई, तभी बाहर निकले और दानव नगर की ओर बढ़ चले।

आगे उन्हें एक विचित्र मैदान से गुजरना पड़ा। हर जगह गहरे नाले खुदे हुए थे जो एक दूसरे को काटते हुए दूर तक चले गए थे। वे बार-बार उनमें गिर जाते। बड़ी मुश्किल से बाहर निकलते। कुछ दूर चलते, फिर नई परेशानी घेर लेती। जैसे-तैसे तीनों ने वह खतरनाक मैदान पार किया। अब तक वे बुरी तरह थक चुके थे।

थोड़ी दूर पर एक खंडहर नगर था। वहां हर चीज का आकार बहुत बड़ा था। शायद यही दानव नगर था। पूरा नगर सुनसान था। वहीं एक पत्थर पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा दिखाई दिया— 'मेरे नीचे देखो।' उसके पास ही एक गड्ढे में रोशनी नजर आई। तीनों उसमें उतर गए। रास्ता संकरा होता जा

रहा था। उस रास्ते पर खिसकते हुए वे जमीन के अंदर ही अंदर उतरते जा रहे थे।

एकाएक उन्हें आवाज सुनाई दी—"कौन हो तुम लोग ? इस पाताल लोक में क्यों आए हो ?"

जिल ने स्क्रब का हाथ दबाकर चुप रहने का संकेत दिया, फिर बोली—"हम रास्ता भटक गए हैं। पता नहीं कहां आ गए हैं।" उसके इतना कहते ही वहां रोशनी छा गई। सामने एक भीड़ थी। पथराए चेहरे वाले लोगों के हाथों में हथियार थे। वे इन तीनों को घेरकर आगे ले चले।"अब क्या होगा ?" —स्क्रब धीरे से बोला।

ये सब एक शानदार महल के पास जा पहुंचे। महल रोशनी में जगमगा रहा था। एक आवाज आई—"मेहमानों का स्वागत है। इन्हें अंदर ले आओ।" अंदर भव्य महल के विशाल कक्ष में एक युवक खड़ा था। उसने राजसी वस्त्र पहन रखे थे। वह हंस रहा था, लेकिन आंखों में उदासी झलक रही थी।

"हम नरनिया के राजकुमार रिलियन की खोज में निकले थे और भटककर यहां आ गए है।" —स्क्रब के मुंह से निकल पड़ा।

"रिलियन ! यह कौन है ! मैंने इसका नाम पहले कभी नहीं सुना। मैं तो यहां की रानी के साथ आराम से रहता हूं। उनकी मुझ पर कृपा है। उन्होंने मुझे पाताल लोक का राजा बना दिया है। मैं बहुत खुश

हूं।" —कहकर वह युवक हंस पड़ा।

जिल, स्क्रब और बौने को महल के विशेष कक्ष में शानदार भोजन कराया गया। भोजन समाप्त होने के के बाद अपने को पाताल लोक का राजा कहने वाला युवक बोला—"मित्रो, अब आप सब एक डरावना दृश्य देखने को तैयार हो जाएं। अभी सेवक आकर मुझे चांदी की इस कुर्सी से बांध देंगे।"

"ऐसा क्यों ?" —स्क्रब ने पूछा।

"इसलिए कि रोज मेरे अंदर एक शैतान प्रवेश करता है। तब मैं पागल हो जाता हूं। मेरे मुंह से बुरे-बुरे शब्द निकलते हैं। उस समय पाताल लोक की रानी मेरे साथ रहती है। अगर वह न रहे तो शैतान मुझे मार डाले। अब आप लोग दूसरे कक्ष में चले जाएं। मैं नहीं चाहता कि आप मेरी वह दशा देखें।"

युवक के कहने पर ये तीनों पास वाले कक्ष में चले गए। पर्दों के पीछे से उन्होंने देखा—कई सेवक युवक को चांदी की कुर्सी से बांध रहे हैं फिर सेवक बाहर चले गए। तब युवक ने जिल और स्क्रब को आवाज देकर बुला लिया। बोला—"मित्रो, मेरी बात सुनो। अब मुझ पर शैतान का असर होने वाला है। मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं तुम्हें बार-बार कहूंगा कि मेरे बंधन खोल दो, पर भूल कर भी ऐसा न कर बैठना। क्योंकि बंधन खुलते ही सबसे पहले मैं तुम तीनों को मार डालूंगा। इस महल को नष्ट कर दूंगा। और फिर मैं भयानक सांप में बदल जाऊंगा।" कहकर वह जोर-जोर से कांपने लगा, चीखने लगा। उसके चेहरे के भाव बदल गए। वह कह रहा था—"मित्रो, मुझे आजाद कर दो।"

ये तीनों चुप खड़े रहे क्योंकि वह इन्हें पहले ही सब कुछ बता चुका था।

वह युवक चीखता रहा, बंधन खोलने के लिए गिड़गिड़ाता रहा। फिर उसके मुंह से निकला—"मैं असलान का नाम लेकर कहता हूं, मेरे बंधन खोल दो।"

"इसके बंधन मत खोलना।"—बौने ने कहा।

लेकिन असलान का नाम सुनते ही जिल का मन बदल गया। उसे असलान की बातें याद आ गईं। उसने स्क्रब को इशारा किया तो वह भी समझ गया।

स्क्रब और जिल ने किसी बात की परवाह किए बिना उसके बंधन काट डाले। क्योंकि असलान ने जिल से ऐसा ही करने को कहा था।

बंधन खुलते ही युवक चिल्लाया—"मैं हूं नरनिया का राजकुमार रिलियन। मुझे एक डायन ने यहां कैद कर रखा था, वही जिसने सांप बनकर मेरी मां को मारा था। वही जो मुझे अपने जादू से पाताल में ले आई थी। आज तुमने मुझे उसके शैतानी जादू के प्रभाव से मुक्त कर दिया है।"

"राजकुमार रिलियन, आप !"—स्क्रब और जिल एक साथ बोले। बौने ने झुककर राजकुमार को नमस्कार किया। वह रिलियन को पहचान गया था। क्योंकि बंधन कटते ही रिलियन अपने असली रूप में आ गया था।

तभी जोर की एक आवाज हुई। एक सुंदर स्त्री अंदर आई। वह चिल्लाई—"रिलियन, तुम मुझसे बचकर नहीं भाग सकते।"

देखते-देखते उसकी जगह एक विशाल सांप लहराने लगा। स्क्रब और जिल डर से चीख उठे। लेकिन राजकुमार रिलियन डरा नहीं। उसने तलवार उठाई और सांप के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उसके मुंह से निकला—"आज मैंने अपनी मां का बदला ले लिया।"

फिर न जाने क्या हुआ—जिल और स्क्रब की आंखें मुंदने लगीं। उन्हें जोर की नींद आ रही थी।

जिल की आंख खुली तो चौंककर उठ बैठी। घास पर स्क्रब सो रहा था। ये दोनों स्कूल की चारदीवारी के अंदर झाड़ियों की ओट में थे। उसने स्क्रब को झिंझोड़ा तो वह भी उठ बैठा और आंखें फाड़-फाड़कर इधर-उधर देखने लगा। धीरे से बोला—"हमने राजकुमार रिलियन को ढूंढ़ निकाला। हम नरनिया से सकुशल लौट आए।" फिर दोनों जोर से हंस पड़े।

(प्रस्तुत : देवेन्द्र कुमार)

सात दिन

—भारतप्रकाश भाटिया

प्राचीन काल में तुंगभद्रा नदी के तट पर एक नगर था। वहां आत्मदेव नाम का एक विद्वान और धनी ब्राह्मण था। उसकी पत्नी धुंधुली सुंदर तो थी, पर वह क्रूर थी। वह कुछ न कुछ उलटा-सीधा बोलती रहती थी।

उनकी कोई संतान नहीं थी। संतान न होने से वे दुखी थे। उन्होंने संतान प्राप्ति के लिए तरह-तरह के पुण्य-कर्म शुरू कर दिए। दीन-दुखियों की मदद करना और दान आदि देना उनका नियम बन चुका था। पर आधा धन समाप्त हो जाने पर भी उन्हें पुत्र अथवा पुत्री का मुख देखने को नहीं मिला। इससे दोनों बहुत उदास हो गए।

एक दिन आत्मदेव बहुत दुखी हुआ और आत्महत्या करने वन की ओर चल दिया। चलते-चलते वह रोने लगा।

सामने से एक संन्यासी महात्मा आ रहे थे। वह आत्मदेव को रोते देखकर बोले—"भाई, तुम रो क्यों रहे हो ? तुम्हें क्या चिंता है ? मुझे अपने दुःख का कारण बताओ।"

"महाराज ! मेरी कोई संतान नहीं। अतः बहुत दुखी हूं। मैं प्राण त्यागने के लिए यहां आया हूं। अब मुझे इस जीवन का कोई मोह नहीं।"—आत्मदेव बोला। यह सुन,महात्मा ने कुछ देर के लिए आंखें मूंद लीं।

कुछ समय बाद संन्यासी ने आंखें खोलते हुए कहा—"तुम पुत्र प्राप्ति का मोह त्याग दो। मैंने अभी ध्यान लगाकर तुम्हारा भविष्य देखा। पता चला कि अगले सात जन्म तक तुम्हें संतान सुख नहीं है।"

आत्मदेव बोला—"महाराज ! पर मुझे पुत्र चाहिए। अन्यथा मैं आप के सामने ही अपने प्राण त्याग दूंगा।"

संन्यासी ने देखा कि आत्मदेव तो किसी प्रकार भी अपना आग्रह नहीं छोड़ रहा है, तो उन्होंने उसे एक फल देकर कहा—"इसे तुम अपनी पत्नी को खिला देना। इससे उसके एक पुत्र होगा। इसके लिए तुम्हारी पत्नी को एक साल तक,एक समय एक ही अन्न ग्रहण करना होगा।"

आत्मदेव फल लेकर घर लौट आया। उसने वह फल अपनी स्त्री को दिया और स्वयं किसी कार्य हेतु चला गया। पर उसकी स्त्री ने फल नहीं खाया।

कुछ समय बाद उसने पत्नी से आकर पूछा—"फल खा लिया ?" उसने कह

दिया—"हां, खा लिया।"

उसी दिन धुंधुली की बहन उसके घर आई। धुंधुली ने अपनी बहन को सारा हाल सुनाया। फिर कहा—"मेरे मन में इसकी बड़ी चिंता है। मैं प्रसव पीड़ा सहन नहीं कर सकती। तुम्हीं बताओ, अब मैं क्या करूं?"

बहन ने कहा—"मेरे पेट में बच्चा है। वह बच्चा पैदा होते ही मैं तुम्हें सौंप दूंगी। मेरे पति धन के लोभ में तुझे अपना बालक दे देंगे। मैं रोज आकर उस बालक को देख लिया करूंगी। तुम यह फल गौ को खिला दो।" यह सुन धुंधुली ने फल गौ को खिला दिया।

कुछ माह बाद धुंधुली की बहन ने एक बेटे को जन्म दिया। बहन के पति ने बेटे को धुंधली के घर पहुंचा दिया। धुंधुली ने उसका नाम धुंधुकारी रख दिया।

एक दिन उस गौ ने भी मनुष्य जैसे बच्चे को जन्म दिया। बच्चा बहुत सुंदर था। उसके कान गौ के कान जैसे थे। अतः आत्मदेव ने उसका नाम गोकर्ण रखा। समय बीता। गोकर्ण बड़ा होकर विद्वान बन गया। पर धुंधुकारी बुरी संगत में फंस कर चोर बन गया। आत्मदेव और धुंधुली ने धुंधुकारी को बहुत समझाया, पर धुंधुकारी की दुष्टता बढ़ती ही जा रही थी। माता-पिता बेटे की चिन्ता में डूब गए। एक दिन उनका निधन हो गया।

अब धुंधुकारी बुरे लोगों के साथ मिलकर चोरियां करने लगा। इसी तरह कुछ समय बीता उसकी दुष्टता बढ़ती गई। एक बार बदमाशों में झगड़ा हुआ। उसमें धुंधुकारी मारा गया।

वह धुंधुकारी अपने पापों के कारण भयंकर प्रेत बना। गोकर्ण को धुंधुकारी की मृत्यु का समाचार मिला।

एक दिन गोकर्ण घूमते-घूमते अपने नगर में आए। वह रात में सोने के लिए अपने घर के आंगन में पहुंचे। धुंधुकारी प्रेत रूप में वहीं रहता था। उसने गोकर्ण को देखा और भारी उत्पात मचाने लगा।

गोकर्ण ने प्रेत से पूछा—"तुम कौन हो? तुम्हें प्रेत योनि कैसे मिली?" यह सुन धुंधुकारी बोला—"मैं तुम्हारा भाई धुंधुकारी हूं।"

गोकर्ण ने कहा—"भाई, मैंने विधि पूर्वक तुम्हारे लिए गया में पिंडदान किया था। फिर तुम प्रेत कैसे बन गए? तुम चिंता न करो। मैं तुम्हारी मुक्ति के लिए हर संभव कोशिश करूंगा।"

गोकर्ण ने सूर्य भगवान को याद किया। सूर्य भगवान ने उसे दर्शन दिए। गोकर्ण ने उनसे प्रार्थना की—"देव, आप मेरे भाई को प्रेत योनि से मुक्त कराने की कृपा करें।" सूर्यदेव ने कहा—"गोकर्ण, तुम सात दिन तक श्रीमद् भागवत का पाठ करो। इससे तुम्हारे भाई की प्रेत योनि से मुक्ति हो सकती है।"

गोकर्ण सात दिन तक कथा सुनाने के लिए तैयार हो गए। जब गोकर्ण कथा कहने लगे, तब धुंधुकारी प्रेत भी वहां आ पहुंचा। वह इधर-उधर बैठने के लिए स्थान ढूंढ़ने लगा। तभी उसकी नजर वहां रखे हुए सात गांठ के बांस पर पड़ी। वह बांस के छिद्र में घुसकर कथा सुनने लगा।

गोकर्ण शाम को कथा के बाद विश्राम करने लगे। तब एक बड़ी विचित्र बात हुई। देखते-देखते उस बांस की एक गांठ तड़-तड़ की आवाज करती हुई फट गई। इसी प्रकार दूसरे दिन सायंकाल दूसरी गांठ फटी और तीसरे दिन तीसरी। सात दिनों में सातों गांठों को फोड़ कर धुंधुकारी बारह स्कन्धों के सुनने से पवित्र हो गया। उसकी प्रेत-योनि से मुक्ति हो गई। तभी वैकुंठ से एक विमान आया। धुंधुकारी विमान पर बैठकर वैकुंठ चला गया। ●

मेरे घर आओ

दिन भर कहां छिपे रहते हो,
हमें बता दो उल्लू जी।

क्या खाते हो, क्या पीते हो
कैसे-कैसे तुम जीते हो।
कहां तुम्हारा घर है जिसमें
चुप-चुप तुम बैठे रहते हो
दिन भर बैठे क्या करते हो,
साफ बता दो उल्लू जी।

तुमको सारी दुनिया वाले
क्यों करते इतना बदनाम।
तुम भी पढ़ना-लिखना सीखो
कर लो जग में अपना नाम।
तुम चाहो तो मैं सिखला दूं,
पढ़ना-लिखना उल्लू जी।

तुम वाहन हो लक्ष्मी जी के
कुछ अपना करतब दिखलाओ।
एक दिवस लक्ष्मी मां को ले
चुपके से मेरे घर आ जाओ
यह उपकार सदा मानूंगा,
सच कहता हूं उल्लू जी।

—कल्पनाथ सिंह

शिमला जाएंगे

गरमी आई, गरमी आई,
जाड़े की हो गई विदाई।
हटी रजाई, कम्बल काले,
जर्सी, स्वेटर, शाल-दुशाले,
'हीटर' ने भी छुट्टी पाई
गरमी आई, गरमी आई।
अब हम खाएंगे खरबूजे,
लीची, आम और तरबूजे,
खाएं आइसक्रीम, मलाई
गरमी आई, गरमी आई।
पापा! शिमला जाएंगे हम,
छुट्टी वहीं बिताएंगे हम,
बात सभी के मन को भाई
गरमी आई, गरमी आई।

—शान्ति अग्रवाल

चाट वाला

आ गया चाट वाला आया।
ले आया आलू की टिकिया,
काबुली मटर बढ़िया-बढ़िया,
है लिए बताशे पानी के,
पा गया मजा जिसने खाया!
बेचता समोसे गरम-गरम,
रखे हैं खस्ते नरम-नरम,
पपड़ी है कितनी मजेदार,
है स्वाद पकौड़ी का भाया।
प्यारे-प्यारे हैं दही बड़े,
हैं सभी खा रहे खड़े-खड़े,
हैं छोले और भटूरे भी,
दोसे ने क्या सुख पहुंचाया।

—विनोदचंद्र पांडेय 'विनोद'

सैर करेंगे

ताक धिना धिन, ताक धिना धिन,
मोटे बस्ते से कुट्टी है
छुट्टी है, भाई छुट्टी है,
शाला के दिन कटते गिन-गिन!
खेलें-कूदें, मौज मनाएं
नाचें-गाएं धूम मचाएं,
बढ़िया लगते छुट्टी के दिन!
दूर-दूर की सैर करेंगे
मन में नई उमंग भरेंगे,
मजा रहेगा हर पल, हर छिन!
अच्छी-अच्छी, नई पुरानी
खूब पढ़ेंगे कथा-कहानी,
सूना लगता नानी के बिन!

—कृष्णकांत तैलंग

मैना की शादी

भेजी थी मैना ने
सबको ही पाती,
मैना की शादी थी
तोते बराती।
शामिल थे शादी में
सब संगी-साथी,
नाच रहे बाजे की
धुन पर थे हाथी।

बुलबुल भी फुदक खूब
हंसती थी गाती,
घी की जलाई थी
सबने ही बाती।
पंडित थे बंदर जी
झपकी आ जाती,
चुपके से कोयल जी
डांट तब पिलातीं।

मोहक थी गंध खूब
भोजन से आती,
भर-भर कर थाल खूब
चुहिया जी लातीं।
खा-खाकर मस्त हुए
सारे बराती,
याद रही वर्षों तक
मैना की शादी।

—रमेशचंद्र पंत

भाई-भाई

—राकेशकुमार श्रीवास्तव

कुसुमपुर में सोमनाथ नाम का ईमानदार और कुशल व्यापारी रहता था। वह अनाज, वस्त्र और गरम मसालों का व्यापार करता था। संत-महात्माओं और निर्धनों के लिए उसका द्वार सदैव खुला रहता था। गांव में उसका काफी मान-सम्मान था।

इसी कारण गांव के कुछ जमींदार और व्यापारी उसके शत्रु हो गए थे। सम्पतलाल भी ऐसे ही विरोधियों में से एक था।

सोमनाथ की दो शादियां हुई थीं। सुनंदा की मृत्यु के बाद ज्योति आई थी। सुनंदा का पुत्र शशिकांत सौम्य और विनम्र था, जबकि ज्योति का पुत्र सूर्यकांत कुछ उग्र स्वभाव का था।

शशिकांत बड़ा हुआ तो व्यापार के सिलसिले में पिता के साथ दूसरे प्रांतों की यात्रा पर जाने लगा। धीरे-धीरे वह व्यापार में तेज हो गया। सूर्यकांत का व्यवहार अच्छा न था। फिर भी घरवालों ने सूर्यकांत को बहुत समझाया, किंतु सब बेकार। सूर्यकांत की चिंता ने सोमनाथ को बीमार कर दिया।

एक दिन उसने दोनों पुत्रों को बुलाकर कहा—"मेरा अंत समय निकट है। मैं चाहता हूं मेरे बाद तुम दोनों खूब फलो-फूलो। जीवन में आगे बढ़ो। मेरे पास जो कुछ भी धन है उससे मिल जुलकर कारोबार करो।"

कुछ दिन बाद सोमनाथ की मृत्यु हो गई। सम्पतलाल खुश था क्योंकि अब वह आसानी से इन दोनों भाइयों को अलग कर सकता था।

पिता के निधन के बाद घर और व्यापार का सारा बोझ शशिकांत पर आ गया। वह सूर्यकांत और उसकी मां ज्योति को बहुत मानता था। सूर्यकांत भी शशिकांत के काम में हाथ बंटाने लगा था। यह सम्पतलाल को अच्छा नहीं लगता था।

एक बार शशिकांत अपनी सौतेली मां ज्योति के साथ शहर गया था। सम्पतलाल को जैसे ही यह पता चला, वह दौड़ा-दौड़ा सूर्यकांत के पास पहुंचा। बोला—"बेटा, तुम्हारे पिता मुझे अपना बड़ा भाई मानते थे। शशिकांत भला है। पर न जाने कब उसका मन बदल जाए। वह तुम्हें घर से बाहर कर दे और खुद घर का मालिक बन बैठे।"

यह सुन सूर्यकांत हैरान रह गया। पर उसे अपने भाई पर अटूट विश्वास था। बोला—"लाला जी, आपकी बात मुझे पूरी तरह समझ में नहीं आ रही है।

फिर भी मैं इतना जानता हूं कि भैया शशिकांत मुझे बहुत चाहते हैं। वह मेरे साथ विश्वासघात नहीं करेंगे।" यह सुन सम्पतलाल हंसा। बोला—"समय आएगा, तो सब समझ जाओगे। अच्छा यही है कि तुम अपना कारोबार अलग कर लो। दुनिया में मजे से रहो।" कहता हुआ सम्पतलाल चला गया। पर सूर्यकांत का मन अशांत हो गया। इसी प्रकार दिन बीतते गए। सम्पतलाल लगातार अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से सूर्यकांत को बरगलाता रहता था।

एक रात शशिकांत के घर चोरी हो गई। सूर्यकांत की मां ज्योति के गहने चोरी में चले गए। सूर्यकांत को लगा—'यह चोरी शशिकांत ने कराई है।' फिर वह गुस्से में शशिकांत के पास गया। बोला—"भैया, मुझे आप पर बहुत विश्वास था। पर आपने मेरी मां के गहने चोरी कर मेरा विश्वास तोड़ दिया। अब मैं आपके साथ नहीं रहना चाहता। आप बंटवारा कर दें।"

यह सुन शशिकांत चौंक गया। उसने सूर्यकांत को लाख सफाई दी, पर सब बेकार! फिर दोनों भाइयों में बंटवारा हो ही गया। यह देख सम्पतलाल बहुत खुश था।

शशिकांत ने अपना कारोबार जल्दी ही संभाल लिया। पर सूर्यकांत व्यापार में पिछड़ गया। कारण उसका व्यवहार ठीक न था। उसे व्यापार में भारी हानि उठानी पड़ी। यहां तक कि उसने सम्पतलाल से कुछ रुपए भी उधार ले लिए।

शशिकांत भाई की दशा देखकर परेशान था। वह अपने मित्रों द्वारा उसे समय-समय पर नेक सलाह भी देता रहता था। पर सूर्यकांत अपने बड़े भाई की एक बात भी नहीं मानता था।

एक दिन सम्पतलाल ने सूर्यकांत से कहा—"बेटा, अब तुम भारी कर्जदार हो गए हो। मेरी एक बात मान लो, तो सारा कर्जा निपट जाएगा और तुम भी मजे से रहोगे।" सूर्यकांत ने पूछा, तो सम्पतलाल बोला—"पड़ोस के गांव में दो लठैत रहते हैं—कलुआ और दामोदर। उनसे कहो कि वे शशिकांत के घर चोरी कर लें। जो मिलेगा उसमें से थोड़ा-बहुत उन्हें दे देना।"

सूर्यकांत को सलाह जंच गई। वे दोनों लठैतों के घर गए। उनसे इस बारे में बात की। वे चोरी के लिए राजी हो गए।

अमावस्या की रात थी। कलुआ और दामोदर शशिकांत के घर में घुसे। वहां जो कुछ मिला, उन्होंने उसे एक कपड़े में बांध लिया। कलुआ दिमाग का तेज था। उसने दामोदर से कहा—"लगे हाथ सूर्यकांत के यहां भी चोरी कर लेते हैं। फिर सारा माल लेकर गायब हो जाएंगे। सूर्यकांत को भी भाई से धोखा करने का फल मिल जाएगा और हमें माल मिल जाएगा।"

फिर क्या था! दोनों लठैत बहुत खुश थे। उन्होंने सूर्यकांत को कोठरी में बंद कर दिया। वहां जो कुछ माल हाथ लगा, उसे बटोरा। वे निकलने ही वाले थे कि गांव के कुछ लोग उन पर टूट पड़े। लोगों ने उन्हें दबोच लिया।

शशिकांत ने पूछा, तो लठैतों ने सम्पतलाल और सूर्यकांत की सारी मक्कारी बता दी। गांव वालों ने कोठरी खोलकर वहां से सूर्यकांत को बाहर निकाला। दोनों अपने ही बुने जाल में फंस गए थे। सम्पतलाल ने अपनी गलती मान ली।

सूर्यकांत फूट-फूटकर रो पड़ा। शशिकांत ने उसे गले लगाया। कहा—"सूर्यकांत, सुबह का भूला शाम को अपने घर आ जाए, तो वह भूला नहीं कहलाता। अच्छा है, तुम जल्दी संभल गए।"

—"हां भैया, नहीं तो न जाने मेरा क्या हाल होता। अब मैं आपके साथ मिल-जुलकर कारोबार करूंगा। आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगा।" यह कहते हुए सूर्यकांत बड़े भाई शशिकांत के पैरों से लिपट गया। यह देख सम्पतलाल का भी मन बदल गया। ●

कुएं में नींद

शहर के पास पुराने किले के खंडहर थे। किले के दरवाजे पर पत्थर की दो बड़ी मूर्तियां बनी हुई थीं।

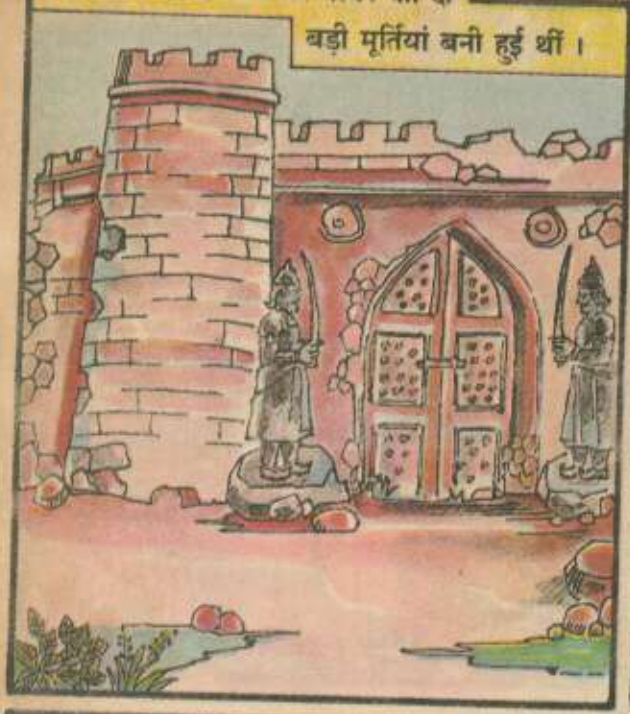

लोग तरह-तरह की कहानियां कहते। बड़े-बूढ़े बताते कि किले के पीछे एक गहरा गड्ढा है। एक राजा अपनी सेना के साथ उसी गड्ढे में समा गया था। फिर वह नहीं लौटा।

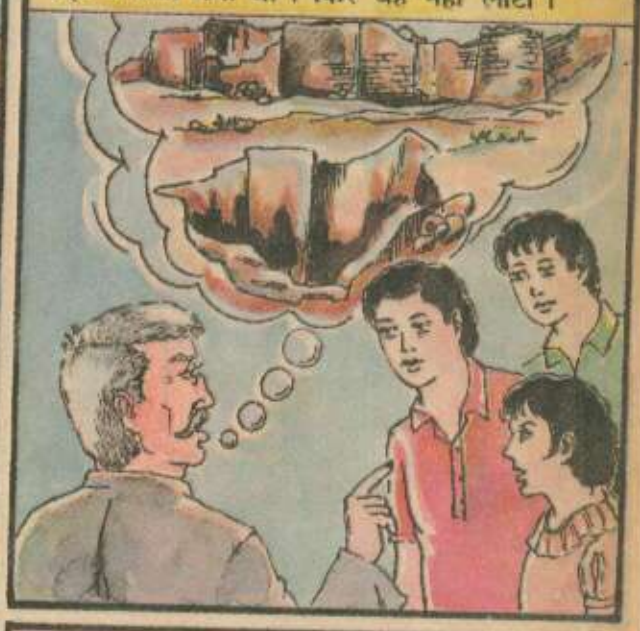

किसान की लड़की थी मारिया। बहुत साहसी थी। एक दिन अकेली ही किले के पीछे जा पहुंची।

वहां सचमुच चौड़े मुंह का सूखा कुआं था। अंदर अंधेरा था। मारिया वहां बैठी रही। सांझ हो गई।

उसने बड़ा पत्थर उठाया और उसमें फेंक दिया। कुआं इतना गहरा था कि देर तक आवाज नहीं हुई। फिर अचानक शोर हुआ।

थोड़ी देर बाद कितने ही घुड़सवार गड्ढे से निकले। घोड़े दौड़ाते हुए वे किले की ओर चले गए। चट्टान के पीछे छिपी मारिया हैरानी से यह देखती रही।

किले का बंद रहने वाला फाटक अपने आप खुल गया। सैनिक गड्ढे में से निकल-निकल कर किले के भीतर जाते रहे।

कुछ देर बाद वहां अंधेरा हो गया। पर दूर किले में रोशनी नजर आ रही थी। मारिया किले में जाना चाहती थी, पर उसे घर जाने को बहुत देर हो गई थी।

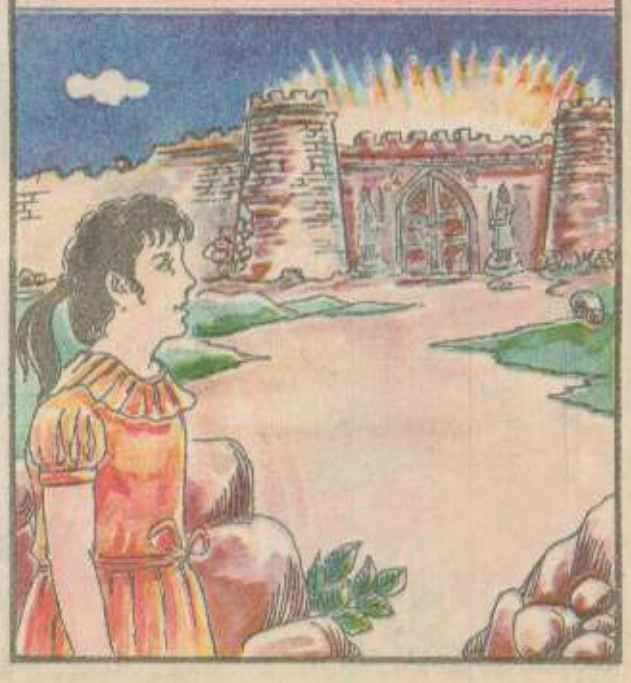

लौटकर मारिया ने माता-पिता को पूरी घटना बताई। उन्होंने सोचा कि मारिया का दिमाग फिर गया है। भला ऐसा भी कहीं होता है

दूसरे दिन मारिया किले में गई। पर वहां न कोई सैनिक दिखा, न ही कोई घोड़ा। हां, एक दरवाजा नजर आया।

वह भीतर चली गई। सीढ़ियां उतरती चली गई। अंत में एक और दरवाजा मिला। कमरे में पहुंची, तो वहां एक सुंदर लड़की मिली

लड़की रो रही थी। उसके हाथ जंजीर से बंधे थे। जंजीर का सिरा दाढ़ी वाले एक बूढ़े के हाथ में था। बूढ़ा बैठे-बैठे सो रहा था।

लड़की ने मारिया से कहा— ''तुम बहादुर हो। कल पत्थर फेंककर तुमने मेरे पिता और सैनिकों को जादू की नींद से जगा दिया, अब मुझे भी इस दुष्ट जादूगर की कैद से छुड़ा दो।''

मारिया ने बहुत जोर लगाकर जंजीर तोड़ डाली। लड़की उठकर खड़ी हो गई। बूढ़ा अभी भी सो रहा था।

दोनों निकलकर किले के फाटक पर आए। अब मूर्तियों की निगाहें सामने एक दीवार पर टिकी हुई थीं। लड़की ने मारिया को बताया— ''दीवार में खजाना दबा है। तुम उसे ले सकती हो।'' यह कहकर वह न जाने कहां गायब हो गई।

मारिया घर गई। पिता को साथ लेकर आई। कुदाल से दीवार को खोदा। तांबे के दो घड़े मिले। उन में सोने की मोहरें थीं। दूसरे दिन उन्होंने वह गांव छोड़ दिया। वहां रहते तो अमीर होने पर लोग शक करते।

www.kissekahani.com

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

—बच्चों का अखबार—

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ६५ रुपए
दो वर्ष : १२५ रुपए

वर्ष : ३१ अंक : ८ जून'९५, नई दिल्ली; ज्येष्ठ आषाढ़, शक सं. १९१७

साठ प्रतिशत बच्चे 'नंदन' पढ़ते हैं

नई दिल्ली। दस विद्यालयों का सर्वेक्षण करने पर पता चला है कि साठ प्रतिशत बच्चे 'नंदन' पढ़ते हैं। सिर्फ बच्चे ही नहीं उनके माता-पिता और दादा-दादी भी 'नंदन' को पसंद करते हैं। यह सर्वेक्षण दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र अनीरचंद लाल ने किया। वह फिजी के निवासी हैं।

सर्वेक्षण में यह बात भी सामने आई कि कथा-कहानियों के अलावा बच्चों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय स्तम्भ 'तेनालीराम' है। 'आप कितने बुद्धिमान हैं' और 'चीटू-नीटू' को भी बच्चे बहुत पसंद करते हैं। छोटी-छोटी कविताओं के माध्यम से कही गई बातें भी बच्चों को अच्छी लगती हैं।

बालक-बालिकाओं ने अलग-अलग बातें भी बताई। जैसे कि बच्चों को यदि 'तेनालीराम' पसंद है तो बच्चियों को सबसे अधिक परियों और राजा-रानियों की कहानियां पसंद हैं।

बच्चों के माता-पिता भी 'नंदन' पढ़ते मिले। कई माता-पिता की तो राय थी कि 'नंदन' जैसी पत्रिका अंग्रेजी में भी प्रकाशित होनी चाहिए।

फिजी से आए अनीरचंद लाल 'नंदन' की लोकप्रियता से बहुत प्रभावित हुए। वह चाहते हैं— उनके देश से भी 'नंदन' जैसी कोई पत्रिका प्रकाशित होनी चाहिए, जो मनोरंजन के साथ-साथ अपनी संस्कृति के बारे में भी बच्चों को बताए।

चीनी भाषा में गीता

पेइचिंग विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्वान चांग पाओ शंग ने मूल संस्कृत से भगवद्गीता का चीनी भाषा में सरस पद्यानुवाद किया है। यह अनुवाद चीन में बहुत लोकप्रिय हुआ है। अब तक इसके तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। चौथा संस्करण शीघ्र ही छपने वाला है। चीन में गीता की लोकप्रियता का मुख्य कारण यह है कि उसमें कर्म करने की प्रेरणा दी गई है।

नं.बा.स. ३६ अ

नन्हा पायलट

न्यूयार्क। चिराग शाह आठ वर्ष का है। विमान उड़ाकर वह अमरीका का सबसे कम उम्र का पायलट बन गया है। अमरीका में आठ वर्ष के बच्चे को विमान उड़ाने का लाइसेंस नहीं मिल सकता, इसलिए चिराग के प्रशिक्षक उसके साथ थे।

शिवाजी भक्त शेख

बम्बई। शबीर शेख महाराष्ट्र की सरकार में श्रम मंत्री हैं। वह शिवसेना की तरफ से चुनकर आए हैं। शबीर शिवाजी को अपना आदर्श मानते हैं। उनका कहना है कि हिंदू धर्म में हवा को पूजते हैं क्योंकि वह हमारे जीवन के लिए जरूरी है। इसी तरह गाय को माता कहते हैं क्योंकि उसका दूध सबसे अच्छा है। सभी लोगों को इन बातों को मानना चाहिए। शेख के पिता भी शिवाजी के भक्त थे।

विश्व बाल-साहित्य दिवस

नई दिल्ली। ५ अप्रैल १९९५ को रूसी विज्ञान एवं सांस्कृतिक केंद्र में विश्व बाल-साहित्य दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन साहित्य अकादमी के सचिव प्रो. इंद्रनाथ चौधरी ने किया। अध्यक्षता जौरी ए. सिकोलिया ने की।

इस अवसर पर भारत-रूसी साहित्य क्लब ने बाल-साहित्य के इन आठ रचनाकारों को सम्मानित किया— बाल स्वरूप राही, जयप्रकाश भारती, शेरजंग गर्ग, रमेश कौशिक, डा. मधु पंत, मनोरमा जफा, वैजयंती टोनपे तथा दिविक रमेश।

स्कूलों से आए बच्चों ने भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। विषय था— 'हमें कैसा बाल-साहित्य चाहिए।' प्रथम पुरस्कार गरिमा दुर्गा, द्वितीय दीपू अहूजा तथा तृतीय पुरस्कार समरविला की छात्रा को मिला। पुरस्कार 'नंदन' के सम्पादक ने दिए।

बाल साहित्यकारों तथा बच्चों का मिला-जुला कवि सम्मेलन भी हुआ। इसमें अनेक रूसी बाल कवियों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डा. प्रेम जनमेजय ने किया।

पाठकों से

'बच्चों के अखबार' में हम बच्चों के चित्र छापना चाहते हैं। नाटक, नृत्य, खेल-कूद तथा समारोह के अच्छे चित्र भेजिए। जो चित्र छपेंगे उन पर इनाम मिलेगा।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

—बच्चों का अखबार—

नंदन बाल समाचार

मनुष्य की महानता उसके कपड़ों से नहीं, व्यवहार से आंकनी चाहिए।
—महात्मा गांधी

बालक कहे अपनी बात

समय बीतता है, मौसम बदलता है। समय के साथ-साथ समाज भी बदलता है। पहले बालक में भगवान की छवि देखते थे। आज वैसा सोचने वाले कम हैं। हमारा पड़ोसी जम्मू-कश्मीर में बालकों को पकड़ लेता है। उन्हें अपराध करने और नफरत करना सिखाकर वापस भेजा जाता है। कश्मीर के लोग इससे डरे हुए हैं।

बात केवल कश्मीर तक ही तो नहीं, बच्चों का जीना दिनों-दिन कठिन और जटिल होता जा रहा है। कभी पास-पड़ोस का या कोई अनजान बच्चों के साथ गलत व्यवहार करता है। उन्हें गलत कामों में लगाता है, भोले बच्चे विरोध करते हैं तो उन्हें डराया-धमकाया जाता है। वे माता-पिता से भी कह नहीं पाते। कई तरह के अपराधी गिरोह भी बालक के प्राणलेवा बन जाते हैं। ऐसे में क्या करें ? निडर होकर बालक अपनी बात कहना सीखें—यह जरूरी है।

समुद्र में सड़क

सोल। दक्षिण कोरिया के जिंडो इलाके में हर साल ईस्टर के दिन समुद्र के बीचोंबीच एक इंद्रधनुषी सड़क दिखाई देती है। इस दिन सड़क के कारण कुछ घंटों के लिए दो द्वीप जुड़ जाते हैं। वैज्ञानिक इसे ज्वार-भाटे के कारण हुई घटना मानते हैं। इसी कारण रंगीन पत्थर सड़क की तरह दिखाई देते हैं और दो द्वीपों को जोड़ देते हैं। यहां के लोग इस दिन ढोल-नगाड़े बजाकर खूब उत्सव मनाते हैं।

भूखी मां

बीजिंग। चीन में दो वैज्ञानिकों ने पांडा की आदतों का अध्ययन किया। एक पांडा शिशु जब सिर्फ एक दिन का था, वैज्ञानिक तभी से उसकी आदतों पर नजर रखे थे। उन्होंने बताया कि मां पांडा अपने बच्चे की देखभाल करते हुए पचास दिन तक भूखी रहती है। उसके बाद जब वह खाने जाती है तो घंटों तक खाती ही रहती है।

आम और आम

मद्रास। तमिलनाडु के सलेम धर्मपुरी इलाके में सबसे अधिक आम लगते हैं। यहां आम का मौसम अप्रैल में ही शुरू हो जाता है। साढ़े तीन महीने के इस मौसम में एक लाख टन आम उत्पन्न होते हैं। ये पचास किस्म के होते हैं।

आशीष प्रथम

रांची। बिहार के छात्र आशीष मिश्र ने भारतीय राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड १९९५ में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आशीष ग्यारहवीं कक्षा का छात्र है। वह रांची के डी.ए.वी. जवाहर विद्या मंदिर में पढ़ता है।

नए टेलीफोन

कैलिफोर्निया। अमरीका में नए किस्म के टेलीफोन मिलने लगे हैं, इन पर एक छोटा-सा स्क्रीन लगा रहता है। टेलीफोन की घंटी बजते ही फोन करने वाले का नम्बर भी स्क्रीन पर आ जाता है। फोन के जरिए धमकी देने वालों के लिए यह एक चेतावनी है।

गुड़ियों का गांव

महेशपुर। मध्य प्रदेश की चम्बल घाटी के पास बसा है गांव महेशपुर। यहां तरह-तरह की गुड़ियां बनाई जाती हैं। मिट्टी, कपड़ा, रूई, लकड़ी यहां तक कि प्लास्टिक और चमड़े से बनी रंग-बिरंगी पोशाकों से सजी ये गुड़ियां अनोखी लगती हैं। यहां की गुड़ियों की विश्व बाजार में अच्छी मांग है। जो व्यापारी गुड़ियां खरीदने जापान की तरफ जाते थे, वे अब महेशपुर आते हैं। गांव की ज्यादातर महिलाएं गुड़िया बनाने के काम में लगी हैं। इन गुड़ियों में अलग-अलग प्रदेशों के दूल्हे-दुल्हन की भारी मांग है।

बच्चे न डरें

नई दिल्ली। दिल्ली के पुलिस आयुक्त श्री निखिल कुमार का कहना है कि बच्चों को पुलिस से डरने की जरूरत नहीं है। पुलिस से तो उन्हें डरना चाहिए जो गैर-कानूनी हरकत करते हैं। पुलिस आयुक्त हारवर्ड अकादमी के समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने अकादमी के बच्चों को पुरस्कार दिए। इस अवसर पर बच्चों ने एक रंगारंग कार्यक्रम भी किया।

खुदाई में खजाना

येरुशलम। इस्राइल में खुदाई के कारण तीन बरतन निकले। इनमें सोने-चांदी के जेवर और सिक्के भरे हुए थे। समझा जाता है कि ये सिक्के तीन हजार साल पुराने हैं।

पलक बनाई

बीजिंग। नत्रन नाम के बच्चे की एक आंख की पलक नहीं थी। डाक्टरों ने उसकी मां के तालू से ऊतक लेकर उसकी पलक बना दी। अब उसकी आंख ठीक से खुल-बंद हो सकती है। डाक्टरों का कहना है कि बच्चे की आंख थोड़े दिनों में बिलकुल प्राकृतिक आंख जैसी दिखने लगेगी।

गुरु-मित्र

टोंक । राजस्थान में इन दिनों 'गुरु-मित्र' योजना काफी सफल हो रही है । इस योजना में शिक्षक पहली कक्षा के बच्चों को खेल-कूद के माध्यम से पढ़ाते हैं । राजस्थान के इस जिले में बच्चे पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देते हैं । गुरु-मित्र के जरिए बच्चों में पढ़ने के प्रति लगाव पैदा किया जा रहा है ।

सोना-सोना

नई दिल्ली । वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के अनुसार दुनिया भर में केवल अट्ठावन कम्पनियां हैं जो सोने के सिक्के, बिसकुट और छड़ें बनाती हैं । दुनिया की सबसे बड़ी और भारी सोने की छड़ का वजन बारह किलो है । स्विट्जरलैंड में सोने के रंगीन, डिजाइनयुक्त बिसकुट बनाए जाते हैं ।

नया चावल

कटक । केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने चावल की नई किस्म 'लुनीश्री' तैयार की है । इस चावल की फसल भी ली जा चुकी है । वैज्ञानिकों का कहना है कि यह दुनिया का बेहतरीन किस्म का चावल है । इसकी पैदावार भी अच्छी होती है ।

ईमानदार सिपाही

नई दिल्ली । नत्थूराम नाम के सिपाही को रास्ते में एक बैग पड़ा मिला । बैग में दो लाख रुपए थे । सिपाही ने ये रुपए थाने में जमा करा दिए । थोड़ी देर बाद सुंदर गुप्ता नामक व्यापारी ने अपना बैग खो जाने की रपट लिखाई । पूछताछ के बाद बैग व्यापारी को सौंप दिया गया । व्यापारी ने सिपाही को पांच हजार रुपए इनाम में दिए । पुलिस उपायुक्त ने भी सिपाही को पुरस्कार देने की घोषणा की साथ ही स्कूली बच्चों ने भी नत्थूराम का अभिनंदन किया ।

नं.बा.स. ३६ स

कूड़ेदान में धन

रोम । इटली में एक युवक को कूड़ेदान में लाटरी का टिकट मिला । इस टिकट पर सत्रह लाख, सत्तर हजार रुपए का इनाम निकल चुका था । विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र मारसेलो को यह टिकट मिला । उसने मालिक को ढूंढ़ कर, उसे टिकट लौटा दिया । यह टिकट एक गूंगे-बहरे लड़के का था । उसने इसे बेकार समझकर फेंक दिया था ।

जेलों में बच्चे

कलकत्ता । बंगाल की जेलों में सात सौ बच्चे हैं । ये बच्चे बहुत बुरी हालत में हैं । इनके साथ शातिर अपराधियों जैसा व्यवहार किया जाता है । इनमें से कुछ बच्चे तो बहुत छोटे हैं । एक बच्चे की उम्र मात्र चार साल है । इन बच्चों पर अब तक कोई अपराध भी सिद्ध नहीं किए जा सके हैं ।

जानवर और एक्यूपंक्चर

बान । यहां जानवरों के इलाज में एक्यूपंक्चर की मदद ली जाती है । उनको होम्योपैथी की दवाएं भी खिलाई जाती हैं । डाक्टरों का कहना है कि कुत्ते, बिल्लियों को अक्सर पीठ दर्द की शिकायत हो जाती है । इस दर्द को भी एक्यूपंक्चर की मदद से ठीक किया जा सकता है ।

कुत्ते का नाच

ताइपे । ताइवान में हमारे यहां के भालू और बंदरों की तरह कुत्ते नाच दिखाते हैं । ये कुत्ते साहबी ठाठ-बाट से खूब सजे-धजे रहते हैं । टाई-टोप, चश्मा और झालरदार कपड़े पहनते हैं । जगह-जगह इन्हें पिछली दो टांगों पर खड़ा होकर नाचते देखा जा सकता है । ये अपनी पिछली दो टांगों पर पांच मिनट तक चल सकते हैं ।

नन्हे समाचार

□ इंग्लैंड में रहते हैं, टाम मार्टन । उन्हें हजारों टेलीफोन नम्बर याद हैं, इसीलिए उन्हें चलती-फिरती टेलीफोन निर्देशिका भी कहते हैं लोग ।

□ गुजरात का गीर अभय वन एशिया में शेरों का अकेला घर है । वहां रहने वाले शेरों की संख्या बढ़ रही है ।

□ आयरलैंड में कथा-साहित्य पर पुरस्कार स्थापित किया गया है । राशि है— पचास लाख रुपए ।

□ एक नाव तट से बंधी थी । उसकी रस्सी खुल गई और वह समुद्र में बह चली । उसमें कोई सवार नहीं था । नाव हिंद महासागर में ५००० मील की यात्रा के बाद मोजाम्बिक के तट पर आ लगी एकदम सही सलामत ।

□ सतीश धवन और यू.आर. राव को अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में काम करने के लिए आर्यभट पुरस्कार प्रदान किया गया है ।

□ बांग्लादेश के रंगपुर प्रांत में पिछले दिनों मेढकों के ब्याह रचाए गए— कहा जाता है कि इससे बारिश होती है ।

□ चीन में बर्फ से ढके ऊंचे पहाड़ों पर कई बार मनुष्य के बहुत बड़े पंजों के निशान देखे गए हैं । लोगों का मानना है कि ये पदचिह्न हिम मानव या येती के हैं । वैज्ञानिकों का दल हिम मानव की खोज कर रहा है ।

□ जोकरों को देखकर सिर्फ हंसना काफी नहीं । लंदन में जोकर संग्रहालय बनाया गया है, जो इस कला का और कलाकारों का इतिहास बताता है ।

□ अमरीका में मनिटोबा में तांबे की पुरानी खानों का अनूठा उपयोग हो रहा है । जमीन के अंदर १००० फीट नीचे फल और सब्जियां उगाई जाती हैं । सर्दी में जब ऊपर हर चीज बर्फ से ढकी होती है तो धरती के नीचे फूल खिलते हैं ।

सचित्र समाचार

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने इंदिरा स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता जीती ।

श्रीहरिकोटा का सतीश रामचंद्रन भरतनाट्यम् में खूब निपुण है ।

इंडोनेशिया में मलंग मैराथन हुई । भारत की रिगजेन अंगमो ने यह दौड़ जीती ।

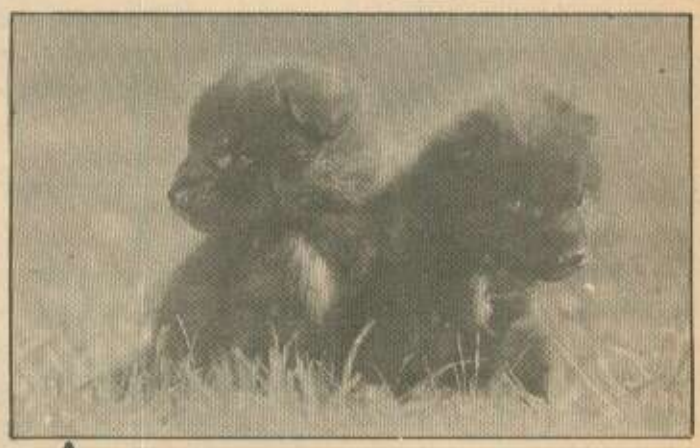

पहचानो तो जानें ! ये कुत्ते या भालू नहीं लोमड़ी के बच्चे हैं ।

लंदन के अस्पताल में एम्मा कैथरीन जन्मी तो वह इतनी दुबली थी कि उसकी बांह अंगूठी से निकल सकती थी । डाक्टरों ने उसे बचा लिया ।

आंखों की सही देखभाल प्रतियोगिता । ब्रिटेन में होने वाली इस प्रतियोगिता में बहुत-से लोग भाग लेते हैं । इस बार लिसा बर्गेस को प्रथम पुरस्कार मिला ।

www.kissekahani.com

पोंगा पंडित

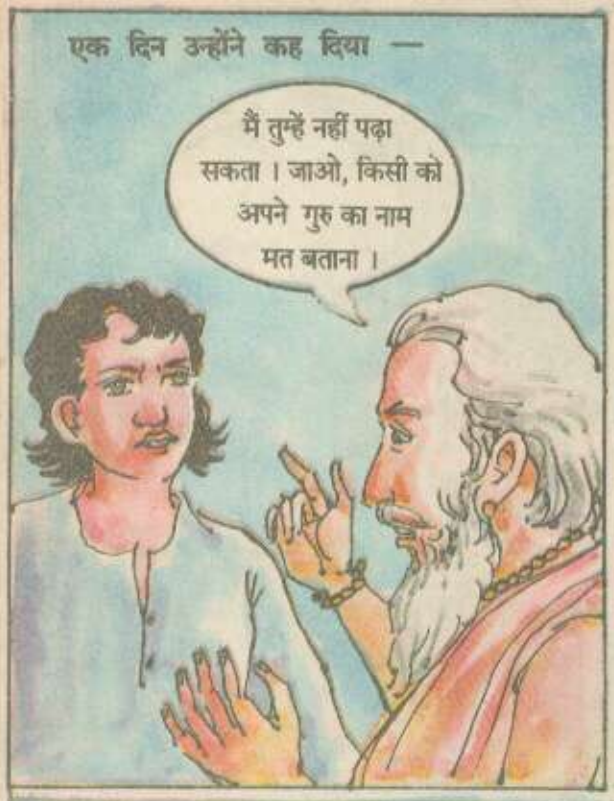
एक दिन उन्होंने कह दिया —
मैं तुम्हें नहीं पढ़ा सकता । जाओ, किसी को अपने गुरु का नाम मत बताना ।

अपने को महान पंडित समझता रामनाथ घर लौटा । पिता सब जान चुके थे । रामनाथ ने कहा —
मैं शास्त्रार्थ करके धन कमाऊंगा ।

दिन ढले एक गांव में पहुंचा । एक घर में आश्रय मांगा । वहां टिक गया ।

सुबह पति काम पर गया । रामनाथ उसकी पत्नी के सामने ज्ञान बघारने लगा । वह संस्कृत जानती थी । बोली—
पड़ोस में विद्वान रहते हैं । उनसे शास्त्रार्थ करो ।

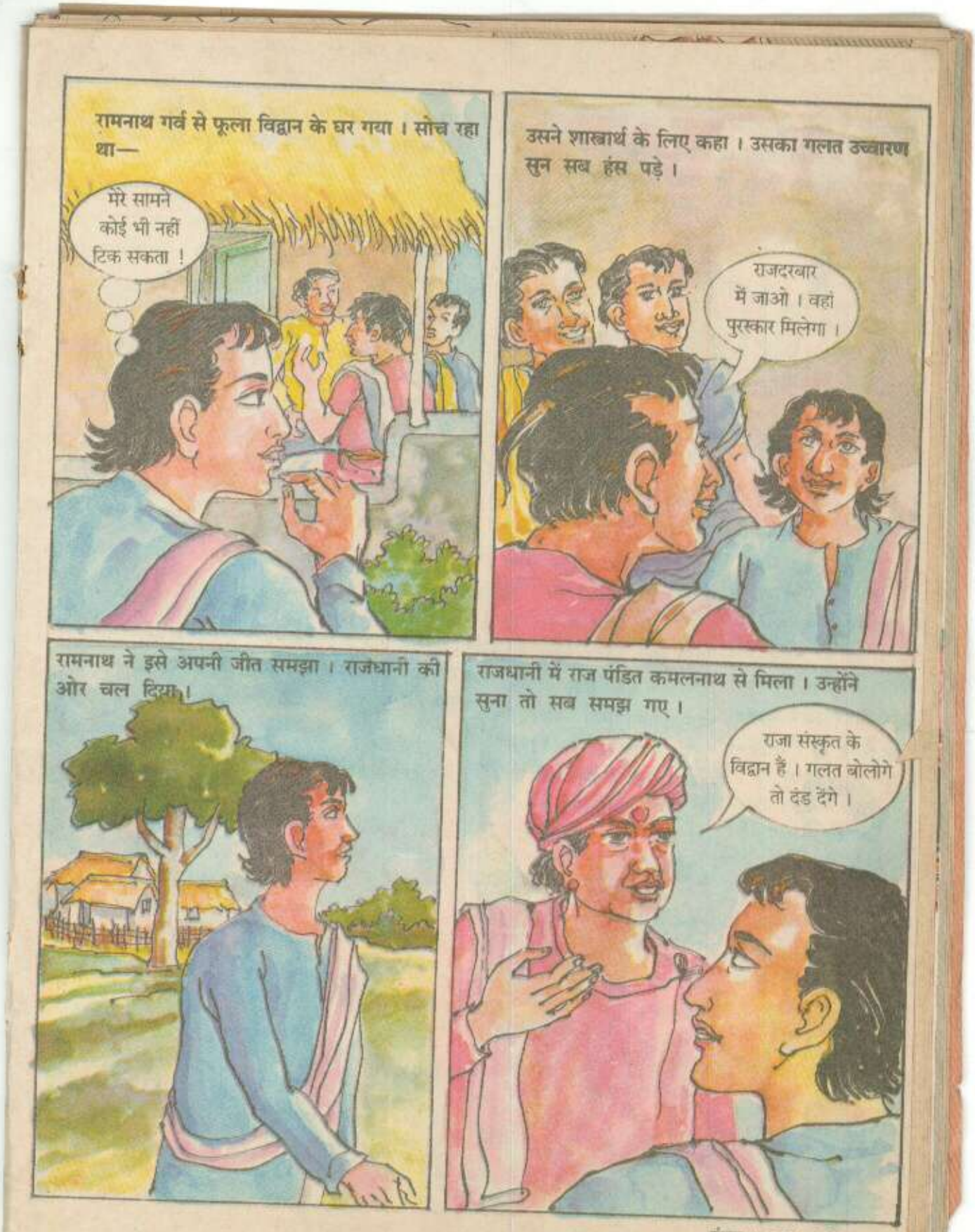
रामनाथ गर्व से फूला विद्वान के घर गया । सोच रहा था—
मेरे सामने कोई भी नहीं टिक सकता !
उसने शास्त्रार्थ के लिए कहा । उसका गलत उच्चारण सुन सब हंस पड़े ।
राजदरबार में जाओ । वहां पुरस्कार मिलेगा ।
रामनाथ ने इसे अपनी जीत समझा । राजधानी की ओर चल दिया ।
राजधानी में राज पंडित कमलनाथ से मिला । उन्होंने सुना तो सब समझ गए ।
राजा संस्कृत के विद्वान हैं । गलत बोलोगे तो दंड देंगे ।

रामनाथ ने जिद की तो कमलनाथ उसे राजा के पास ले गए। राजा अस्वस्थ थे। उन्होंने बुलवा लिया। रामनाथ संस्कृत बोला तो राजा हंसने लगे।

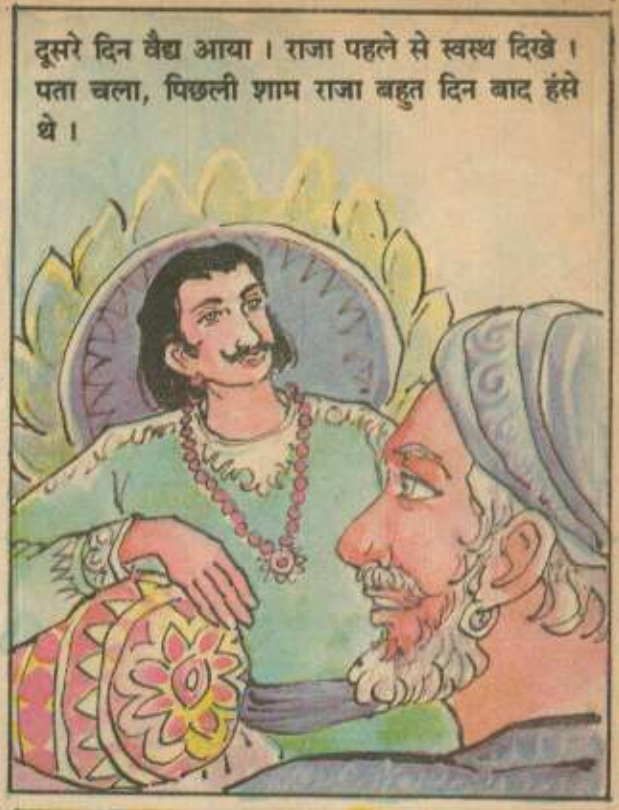
दूसरे दिन वैद्य आया। राजा पहले से स्वस्थ दिखे। पता चला, पिछली शाम राजा बहुत दिन बाद हंसे थे।

राजा ने रामनाथ को बुलवाकर स्वर्ण मुद्राओं की थैली दी। कहा—
कल तुम्हारे आने से हमारी तबीयत सुधरी। यह लो। इसी समय हमारे राज्य को छोड़ जाओ। सच्चे विद्वान बनकर ही हमारे सामने आना।

रामनाथ लज्जित हुआ। जाते समय वह संकल्प ले रहा था।
महाराज को तभी मुंह दिखाऊंगा जब...

अदल-बदल

—रश्मि स्वरूप जौहरी

माणिकपुर नाम का एक प्राचीन नगर था। नगर में एक विद्वान रहते थे सुशील। उनके दो पुत्र थे— सुव्रत और व्रत। उनमें सुव्रत बड़ा था। दोनों में बड़ा प्रेम था। वे भाई ही नहीं, अच्छे मित्र भी थे। वे एक-दूसरे के लिए अपना जीवन निछावर करने के लिए तैयार रहते थे।

एक दिन सुव्रत और व्रत ने मंदिर जाने का निश्चय किया। वहां रात्रि में उत्सव था। दोनों भाई शाम को घर से निकले। अभी वे थोड़ी ही दूर चले थे कि उन्हें कहीं से नाच-गाने की आवाज सुनाई पड़ी। वे ठिठककर खड़े हो गए। फिर उसी दिशा में चल दिए जिधर से आवाज आ रही थी। उन्होंने एक जगह देखा— सजा हुआ भवन था। वहां नाच-गाने का कार्यक्रम चल रहा था। सुव्रत ने व्रत से कहा— "चलो, अंदर चल कर देखते हैं।" दोनों भाइयों ने भवन में प्रवेश किया। मंच पर गायक और बाजे वाले बैठे थे। सुंदर नर्तकियां रंग-बिरंगे, मनमोहक वस्त्रों में साज की आवाज पर नृत्य कर रही थीं। लोग राग-रंग का आनंद ले रहे थे।

दोनों भाइयों ने ऐसा कार्यक्रम कभी नहीं देखा था। सुव्रत मंच के सामने बैठने जा रहा था, तभी व्रत ने कहा— "भइया, आप कहां जा रहे हैं ? मंदिर में उत्सव शुरू होने वाला होगा।" सुव्रत ने कुछ सोचकर कहा— "व्रत, आज यहीं रुक जाते हैं। मंदिर फिर कभी चलेंगे।"

सुव्रत की बात सुन, व्रत आश्चर्य में पड़ गया — 'मेरे भाई ने कभी भी भगवान की पूजा नहीं छोड़ी थी। फिर आज वह ऐसा क्यों कर रहे हैं ?' वह बोला— "ठीक है भइया। आप यहीं रुकें। मैं मंदिर जाता हूं। पूजा कर, मैं आ जाऊंगा।" यह कहता हुआ व्रत मंदिर की ओर चल दिया।

कुछ ही समय में व्रत मंदिर पहुंच गया। वहां श्रीकृष्ण का जन्म उत्सव चल रहा था। मंच पर

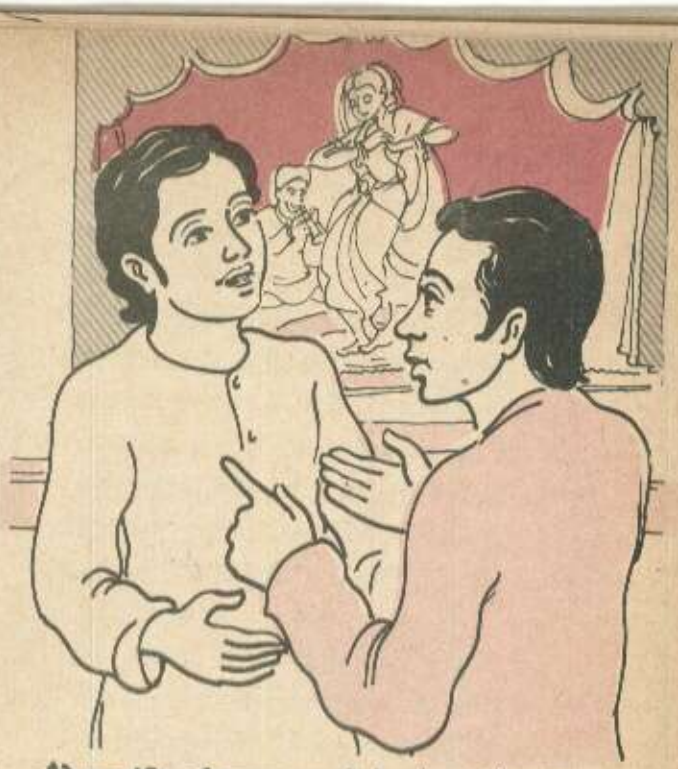

बैठे एक पंडित जी प्रवचन कर रहे थे। व्रत भी बैठकर प्रवचन सुनने लगा।

प्रारम्भ में तो, व्रत का मन प्रवचन में लगा किंतु फिर वह ऊबने लगा। उसने सोचा— 'मैं बेकार में मंदिर आ गया। भाई सुव्रत के साथ मैं भी नाच-गाने का आनंद लेता।' इसी सोच-विचार में वह नाच-रंग के ध्यान में इतना खो गया कि उसे मंदिर में ही नर्तकियां नजर आने लगीं। मंदिर में पूजा कब समाप्त हो गई, उसे पता नहीं चला। उसका ध्यान तो तब टूटा, जब पुजारी ने कहा— "बेटा, आरती लो।" व्रत ने आरती ली और बुझे मन से सुव्रत के पास चल पड़ा।

उधर सुव्रत भी नाच-गाने का आनंद अधिक देर तक न ले सका। उसने सोचा-'मंदिर न जाकर मैंने अनर्थ कर डाला। इससे बड़ा कोई अपराध नहीं हो सकता। व्रत बहुत भाग्यशाली है जो इस समय मंदिर में है। मैंने उसकी बात क्यों नहीं मानी ? वरना मेरा भी जीवन सफल हो जाता।' इसी तरह वह स्वयं को कोसता हुआ नाच-रंग को भूल, भगवान के ध्यान में खो गया।

नाच समाप्त होने पर सुव्रत भवन से बाहर आया

और व्रत की प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही सुव्रत को व्रत आते दिखा, वह उसकी ओर लपका। दोनों भाई आपस में मिलने ही वाले थे कि अचानक भगवान विष्णु और यमराज के दूतों ने उन्हें घेर लिया। वे दोनों घबरा गए। सुव्रत ने साहस बटोरते हुए कहा— "आप लोग कौन हैं ?" इस पर प्रमुख विष्णुदूत ने अपना परिचय दिया और कहा— "कुछ ही समय में आप दोनों की मृत्यु होने वाली है। सुव्रत, आप स्वर्ग जाएंगे। आपको वहां ले जाने के लिए विष्णु के दूत आए हैं। पर आपका भाई नरक में जाएगा। उसे वहां ले जाने के लिए यम दूत आए हैं।"

सुव्रत ने चिंतित होकर कहा— "महाराज ! यह अन्याय है कि मैं स्वर्ग में जाऊं और व्रत नरक में। हम दोनों तो सदैव एक-सा ही व्यवहार करते थे। मैं कल राग-रंग का आनंद ले रहा था। मेरा भाई मंदिर में पूजा कर रहा था। यदि इस बात का दंड मिल रहा है, तो मुझे नरक मिलना चाहिए। व्रत स्वर्ग का अधिकारी है।"

प्रमुख विष्णुदूत ने हंसकर कहा— "नहीं बेटे, तुम कल-रात नाच-गाने में रहकर भी मन से मंदिर में थे क्योंकि तुम वहां भी भगवान के बारे में सोच रहे थे। किंतु तुम्हारा भाई मंदिर में रहकर भी नाच-गान के विचारों में खोया रहा। जहां मनुष्य का मन होता है, वास्तव में मनुष्य तो वहीं होता है। इसी कारण तुम्हें स्वर्ग और व्रत को नरक मिल रहा है।" यह कहते हुए विष्णुदूत सुव्रत की ओर बढ़े। यम के दूतों ने व्रत को पकड़ लिया।

सुव्रत ने कहा— "महाराज, मैं अपने भाई के बिना जीवित नहीं रह सकता। मैं अकेला विष्णु धाम नहीं जाऊंगा।"

प्रमुख विष्णुदूत ने कहा— "सुव्रत, यदि तुम अपने बचे हुए अच्छे कर्म व्रत को दे दो तो वह भी तुम्हारे साथ स्वर्ग जा सकता है।"

यह सुन सुव्रत का चेहरा खिल उठा। उसने विष्णुदूत का कहा मान लिया। विष्णुदूत दोनों भाइयों को स्वर्ग में ले गए। ●

पुतली का मुकुट

—गणेश मुनि महाराज

वीतशोका नगरी के राजा थे महाबल। उनका एक पुत्र था बलभद्र। जब बलभद्र युवा हो गया, तो राजा ने उसे राजपाट सौंप दिया। पुत्र से कहा—"अब तुम ठीक से प्रजा का पालन करना। मैं संन्यास ले रहा हूं। मैं शेष जीवन में तप करना चाहता हूं।" —ऐसा कहकर वह वन में जाने लगे।

तभी उनके छह मित्रों को उनके संन्यास लेने का पता चला। वे राजा के पास आए। मित्रों ने कहा—"हम भी आपके साथ चलेंगे।" राजा ने उन्हें वन जीवन की कठिनाई बताकर रुकने के लिए कहा। मित्रों ने कहा—"महाराज, सच्चे मित्रों की पहचान तो यही है कि वे अपने मित्र का वन और महल दोनों में साथ दें।"

महाबल मित्रों का आग्रह न टाल सके। छहों मित्र सहित राजा ने संन्यास ले लिया। मुनि बन वह जंगल में चले गए। महाबल ने अपने मित्रों से कहा—"जब हम संन्यासी हो ही गए हैं, तो सब एक जैसा तप करेंगे।" अंत में तय हुआ, एक महीने तक तपस्या

करने के बाद व्रत खोलेंगे। वे तपस्या करने लगे। तपस्या करते हुए जब एक माह बीत गया, तो एक दिन मित्र तापसों ने उन्हें व्रत खोलने की याद दिलाई। महाबल बोले—"तुम दोबारा एक मास तक तप कर व्रत खोलोगे, तब मैं व्रत खोलूंगा, पहले नहीं।"

मित्र तपस्वियों को यह बात अच्छी नहीं लगी। वे बोले—" राजर्षि, यह बात कहीं सच्ची मित्रता में दरार न डाल दे ! आपने एक-सा तप, एक-सी साधना का वचन दिया था। फिर हम मित्रों से आप अधिक दिनों का तप क्यों कर रहे हैं ?"

एक मित्र तपस्वी ने कहा—"महाबल हमारे मित्र हैं तो क्या हुआ ! हैं तो राजर्षि । मित्र तापसों में और महाबल में कुछ तो विशेषता हो ही सकती है। इस बार सब तपस्वियों का व्रत एक साथ खुलेगा।" महाबल तब भी चुप रहे। दोबारा एक माह की तपस्या सातों मित्रों की शुरू हो गई।

महीना बीत गया, तो व्रत की पूर्णाहुति पर मित्र तपस्वियों ने महाबल मुनि से कहा—"आज व्रत खोलने का दिन है।" राजर्षि ने पलकें मूंदे रखीं। तापसों ने समझ लिया, इस बार महाबल हमारे साथ ही व्रत खोलेंगे। पर छहों मित्र पारणा कर चुके, तब भी उन्होंने व्रत नहीं खोला।

सातों मित्रों ने तीसरी बार भी एक माह का तप किया। निश्चित समय पर महाबल से निवेदन किया—"महाराज, आज तपस्या पूरी हो गई है। अब व्रत खोलने की बारी है।"

महाबल विशिष्ट तपस्या करना चाहते ही थे। मित्र तापसों के बोलने पर वह चुप्पी साध गए। ऐसा करते हुए छह बार में एक बार भी उन्होंने तपस्या तोड़ पारणा नहीं किया।

इस तरह महाबल और उनके छहों तपस्वी मित्रों ने तपस्या करते-करते अपना जीवन बिता दिया। पर सातों तपस्वियों को तप का फल अलग-अलग मिला।

मिथिलापुरी के राजा कुंभ थे और रानी प्रभावती। प्रभावती ने एक सुंदर कन्या को जन्म दिया। नाम रखा मल्लीकुमारी। कन्या के युवती हो जाने पर पिता कुंभ को उसके विवाह की चिंता हुई। कुंभ ने पूछा—"बेटी, तुम कैसा वर चाहती हो ?" बेटी विदुषी थी। बोली—"पिता जी, मैं विवाह नहीं करना चाहती हूं।"

राजा ने कहा—"बेटी, यह कैसे हो सकता है ! विवाह तो तुम्हारा होगा ही। मैं यह कर सकता हूं कि तुम जिससे कहोगी, उसी के साथ तुम्हारा विवाह कर दूं।" मल्लीकुमारी ने ऐसे समय पर चुप रहना ही उचित समझा।

कुंभ को अपनी बेटी के सुंदर और बुद्धिमती होने का अभिमान था। स्वयंवर की घोषणा करने पर अनेक राज्यों के राजकुमार और राजा, मल्ली को पाने के लिए प्रयत्न करने लगे। कुंभ के पास मल्लीकुमारी से विवाह करने के अनेक प्रस्ताव आए। कुंभ को अपनी बेटी के योग्य उनमें कोई वर नहीं दिखलाई दिया। राजा ने सबके प्रस्ताव ठुकरा दिए। विवाह के लिए आए युवकों को बड़ा गुस्सा आया। इस पर चम्पा, श्रावस्ती, वाराणसी, साकेतपुर, हस्तिनापुर और कम्पिलपुर के राजाओं ने आपस में सलाह करके कुंभ को पाठ पढ़ाने की योजना बना ली।

उन्होंने कुंभ के पास अलग-अलग दूत भेजकर

सूचित कर दिया कि यदि मल्ली कुमारी से उनका विवाह नहीं हुआ, तो युद्ध होगा। जीतकर वे मल्ली कुमारी को अपनी रानी बनाएंगे।

एक के बाद एक छह राजाओं की चुनौती मिलने पर कुंभ का धीरज टूट गया। मन कांप उठा। राजा के चेहरे पर घबराहट देख, मल्लीकुमारी ने कारण पूछा। राजा को कारण बताना पड़ा।

मल्ली ने पिता को साहस बंधाया। बोली—"पिता जी, मैं जैसा कहूं आप वैसा कीजिए सब कुछ ठीक हो जाएगा।" राजा ने मल्ली को उसके कहे मुताबिक करने की मंजूरी दे दी। तब मल्ली बोली—"माणिक का एक सिंहासन बनवाकर उसमें हीरे-जवाहरात जड़वा दीजिए।" राजा ने वैसा करवा दिया। इसके बाद मल्ली ने कहा—"अब हूबहू मेरे जैसी एक पुतली बनवा दीजिए। वह पुतली ऐसी हो, जिसका मुकुट हटाने पर अगर उस में कुछ डाला जाए, तो वह सीधा पेट के गड्ढे में चला जाए।"

जब मल्ली के कहे मुताबिक सब काम हो गया, तो उसने राजा से कहा—"बस पिता जी, अब आप किसी प्रकार की चिंता मत कीजिए। सब ठीक हो जाएगा।"

मूर्ति बनकर तैयार हो गई। मल्ली हर दिन चौबीस घंटे में एक बार भोजन का ग्रास पुतली का मुकुट उठाकर उसमें डालने लगी। वह ग्रास सीधा पुतली के पेट में चला जाता। ऐसा करते हुए उनतीस दिन बीत गए। तीसवें दिन छहों राजा दलबल सहित मिथिलापुरी आ धमके। कुंभ ने उनका अलग-अलग स्वागत किया। उन्हें अलग-अलग कमरों में ठहरा दिया गया। कमरों की खिड़की खोलने पर सभी को मल्ली की मूर्ति दिखाई दे सकती थी।

अगला दिन स्वयंवर का दिन था। सभी राजा स्नान कर, सुंदर वस्त्र पहन तैयार हो गए। प्रतीक्षा करने लगे कि अब स्वयंवर के स्थान पर पहुंचने का निमंत्रण आएगा। पर ऐसा नहीं हुआ।

राजा के छह दूत एक साथ छहों कमरों में गए। वहां की खिड़कियां खोल दीं। राजाओं से कहा गया—'सामने देखिए, राजकुमारी मल्ली सिंहासन पर बैठी है।'

राजाओं ने मल्ली की मूरत देखी, तो मुग्ध हो गए। सभी एक सी बात सोचने लगे—'मल्ली अभी उठेगी और मेरे गले में वरमाला पहना देगी।' पर वह सचमुच की मल्ली तो थी नहीं।

तभी मल्ली वहां पहुंची। वह पुतली के पास जाकर खड़ी हो गई। अपने-अपने कमरों की खिड़की से झांकते राजाओं ने एक स्थान पर दो मल्लीकुमारी देखीं, तो अचम्भे में पड़ गए। अचानक मल्लीकुमारी ने पुतली का मुकुट उठा दिया। मुकुट उठाना था कि मूरत से भारी दुर्गंध आने लगी। अब राजाओं का कमरों में ठहरे रहना कठिन हो गया। नाक पर रूमाल रख, सभी राजा कमरों से भागने लगे। बाहर निकलने का रास्ता मूरत के बराबर से होकर था।

जब वे मल्ली की मूरत के पास से होकर भाग रहे थे, तभी सचमुच की मल्ली ने कहा—"अरे, कुमारो भागे कहां जा रहे हो ? क्या तुम मुझसे विवाह नहीं करोगे ?"

भागते राजा क्षण भर रुके। बोले—"हमें विवाह नहीं करना है।"

"क्यों ?"—मल्ली ने पूछा ?

"मल्ली के अंदर दुर्गंध है।" —सभी राजा एक साथ बोले।

मल्ली बोली—"मल्ली में दुर्गंध नहीं है। उसकी मूरत में दुर्गंध है। मैंने तुम्हें सच्चाई बताने के लिए ही ऐसा किया था। इससे भी बड़ा सच यह है कि शरीर में सौंदर्य नहीं होता। असली सुंदरता मन की है। याद करो उस तपोवन को, जहां हम सातों तप कर रहे थे। आओ, उस अधूरी रह गई तप साधना को फिर से साथ-साथ शुरू करें।"

मल्ली का यह कहना था कि उन्हें अपना तपोवन याद आ गया। सातों फिर से मुनि बन तप करने वन की ओर चल पड़े। ●

मोहरें

—सुनीति

ईरान में फिरदौसी नाम के एक बहुत बड़े शायर थे।

ईरान का शाह उनकी कविता को पढ़कर बहुत खुश हुआ। उसने फिरदौसी से कहा— "आप मेरे लिए भी एक शाहनामा लिखकर तैयार करें। मैं आपके हर शेर के लिए आपको सोने की एक मोहर दूंगा।"

फिरदौसी शायर थे। उनको पैसे का अधिक मोह नहीं था। उनकी एकमात्र संतान उनकी छोटी-सी एक बेटी थी। जिसका नाम उन्होंने बड़े प्यार से गुलाब रखा था। मां न होने के कारण, शायर ने उसे मां और बाप दोनों का प्यार दिया था। कभी-कभी वह अपने अब्बा से जिद करते हुए कहती— "अब्बा, आप हमारे लिए एक सुंदर-सा घर क्यों नहीं बनवाते, जहां हम एक बाग और फव्वारा भी लगा सकें। वहां बैठकर मैं अपनी सहेलियों के साथ खूब खेला करूंगी।"

शाह ने जब शाहनामा की बात कही तो कवि ने सोचा कि वह जल्दी ही शाहनामा पूरा करेगा। शाह जो धन देगा उससे वह बेटी के लिए घर बनवाएगा। कठिन परिश्रम करने पर भी शाहनामा को लिखने में कई साल लग गए। इसके लिए उन्होंने साठ हजार शेर लिखे। शाहनामा तैयार हो गया। उसे शाह की सेवा में पेश किया गया। उसे देखकर शाह बल्लियों उछल पड़ा—वाह! इतना खूबसूरत। मैं और मेरा खानदान हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो गया। जब मोहरें देने की बारी आई, तो उसका मन बेईमान हो गया। उसने सोचा— 'यह गरीब शायर इतनी मोहरें लेकर क्या करेगा?' उसने साठ हजार सोने की मोहरों की जगह, साठ हजार चांदी के रुपए उसके पास भिजवा दिए।

शाह की धोखेबाजी देखकर शायर के दिल में आग लग गई। उसने वे रुपए पालकी लाने वाले कहारों तथा दूसरे सेवकों में बांट दिए। यही नहीं उसने शाहनामा में एक शेर शाह की निंदा में जोड़ दिया।

यह खबर पाकर शाह आग-बबूला हो उठा। उसने फिरदौसी का सिर काटकर लाने के लिए सिपाही भेजे। फिरदौसी को इस बात का पता पहले ही चल गया।

उसने रोते-रोते छोटी-सी बेटी को पड़ोसिन को सौंपा और स्वयं वहां से भाग निकला। सातवें दिन जब वह ईरान की सीमा पार कर गया, उसे अपनी बेटी की याद सताने लगी। सोचने लगा— 'अभी तो वह इतनी छोटी है। मां और बाप दोनों के बिना कैसे रहेगी? जिस शाह के लिए मैंने दिन-रात एक कर दिए, उसने मुझे कहीं का न रखा। जान लेने पर भी उतारू हो गया। कहीं वह मेरी बेटी को भी न सताए।'

शाह ने फिरदौसी की बेटी से कुछ नहीं कहा। फिरदौसी कई साल तक कभी अफगानिस्तान और कभी काबुल, कंधार, कश्मीर घूमता रहा। अंत में जब उससे नहीं रहा गया, तो वह अपनी बेटी के पास लौट आया।

तब तक शाह को भी अपनी भूल समझ में आ गई थी। उसने फिरदौसी को पत्र लिखकर उससे क्षमा मांगी और साठ हजार मोहरें उसके पास भेजीं।

लेकिन तब बहुत देर हो चुकी थी।

फिरदौसी के ऊपर इधर-उधर भटकने का बहुत बुरा असर पड़ा था। उसका स्वास्थ्य बर्बाद हो गया था। इधर ऊंटों पर लदी हुई मोहरें उसके घर के दरवाजे पर पहुंची और उधर घर से उसका जनाजा निकल रहा था।

शाह ने फिरदौसी की बेटी गुलाब से वे मोहरें कबूल करने के लिए कहा।

गुलाब ने कहा— "मैं इन्हें लेकर क्या करूंगी? इन्हीं के कारण मेरे अब्बा की जान चली गई।"

शाही काफिले के खजांची ने सरदार से कहा— "दोस्त, इस बार भी शाही खजाने की भारी तौहीन हुई है। लेकिन न जाने क्यों मेरा दिल खुशी से उछल रहा है। खुदा! बेटी दे तो ऐसी दे।" ●

बुढ़ी माई

—आशिमा गुप्त

बुढ़ी माई का जंगल देखा है ? रुडियार्ड किपलिंग ने अपनी किताब 'जंगल बुक' यहीं लिखी । कहते हैं बुढ़ी माई के इसी जंगल में कई परियां रहती थीं । उनमें से एक परी आज भी घूमती है । गज्जु कोरकू ने खुद उसे देखा है । उसकी आवाज सुनी है । मोरम नदी की गुफा में उसकी बनी सुंदर चित्रकारी देखी है ।

बुढ़ी माई का जंगल आखिर है कहां ? मध्य प्रदेश में एक जगह है सिवनी-मालवा । यहीं है यह जंगल । एक बार चांदनी रात में एक आदिवासी चला जा रहा था । नाम था उसका गज्जु कोरकू । बड़ा ही बहादुर । बुढ़ी माई का जंगल । उसका अपना जंगल । चप्पे-चप्पे की पूरी जानकारी है उसे । कंधे पर कुल्हाड़ी, फिर डर काहे का ?

छम...छमा...छम ! चलते-चलते अचानक गज्जु कोरकू के कान खड़े हो गए । घने जंगल में पायलों की आवाज कैसी ? जंगल में औरत कहां से आएगी ? फिर उसने चाल तेज कर दी ।

चार कदम चलने के बाद फिर वही आवाज । जरूर कोई गड़बड़ है । उसे नानी की याद आ गई । बचपन में नानी मां ने गज्जु को समझाया था—'चांदनी रात में अगर जंगल में चलो, तो पीछे पलटकर मत देखना । वहां भूत-प्रेत और चुड़ैलें भी खूब घूमती हैं ।' तब गज्जु नहीं डरा था । उसने नानी मां से कहा था—'चुड़ैलें ही क्यों ? परी भी तो हो सकती है । परी सबकी मदद करती है । वह किसी का बुरा नहीं करती ।'

तब गज्जु ने नानी मां को बताया था कि परी सफेद-चमकीले कपड़ों में रहती है । उसके सुंदर पंख होते हैं । वह जहां जाती है,वहां सुगंध फैल जाती है । जब चलती है, तो उसके पैरों की पायल बजती है—छम...छमा...छम !

गज्जु को याद आया, तब नानी ने उससे कहा था—' तू तो बड़ा चालाक हो गया रे ! क्या कहीं तूने बोररानी परी को देख लिया ?' गज्जु ने सिर हिलाकर हामी भरी थी । असल बात यह थी कि उसने परी बोररानी के बारे में सुना भर था । उसके दोस्त फज्जु ने उसे बताया था । इसी सोच-विचार में वह फिर आगे बढ़ा ।

कुछ देर बाद फिर छम...छमाछम...छम की आवाज सुनाई दी । अब गज्जु की पकड़ अपनी कुल्हाड़ी पर मजबूत हो गई । वह सावधानी से आगे बढ़ता रहा ।

अचानक पीछे से आवाज आई । कोयल-सी कूकती मीठी आवाज । कोई पुकार रहा था—'जीजा ! जीजा ! तनिक ठहर जाओ । मैं भी आ रही हूं । मेरी पायल गिर गई है । बिछिया खो गई है । उसे खोज लूं, फिर साथ चलती हूं ।'

अब तो गज्जु की हिम्मत जवाब देने लगी । दौड़ने की कोशिश की, तो पैर उठे ही नहीं ।

गज्जू कोरकू ने दिमाग दौड़ाया । बचपन के सारे किस्से याद आ गए । अम्मा ने पहले ही कहा था—'रात में जंगल में अकेले मत जाना । पलटकर मत देखना ।'

गज्जु को अपने बचपन के दोस्त फज्जु की याद आ गई । फज्जु का सामना भी बोररानी परी से हो चुका था । उसने तो पलटकर देखा भी था । आवाज भी सुनी थी । फज्जु कहता था—'बोररानी तो परियों की रानी है । जहां से निकले,वहीं सुगंध फैल जाए । बुढ़ी

माई के जंगल में राज है उसका।

हां ! परी बोररानी को पायल और बिछिया पसंद है। फज्जु ने कहा था—'वह आंवले के पेड़ के पास रहती है। उसकी बिखरी पत्तियों में ही पायल-बिछिया ढूंढ़ती रहती है।' बोररानी से बचने के लिए फज्जु ने पहले तो देवी को याद किया। फिर आंवले की बहुत-सी पत्तियां तोड़ीं। पूरी पगडंडी पर वह पत्तियां डालता गया। परी बोररानी उन पंक्तियों में अपनी पायल-बिछिया खोजती रह गई। फज्जु सही-सलामत जंगल से बाहर आ गया। अब वह चांदनी रात में जंगल में अकेले नहीं घूमता।

गज्जु ने भी यही तरकीब अपनाई। आंवले की पत्तियां तोड़ीं। पूरी पगडंडी पर उन्हें बिखरा कर वह भाग चला। परी बोररानी पायल-बिछिया खोजती रही। गज्जु जंगल से सही-सलामत बाहर आ गया।

बस्ती में पहुंचकर गज्जु कोरकू ने यह किस्सा सबको सुनाया। गज्जु की बात पर भला कौन भरोसा करता ? भले ही गज्जु कहता रहा कि वह दिन में भी बोररानी का ठिकाना बता सकता है। मोरम नदी के पास झाड़ियों में एक गुफा है। बोररानी उसी गुफा में रहती है। बोररानी के चक्कर में भला कोई क्यों पड़े ? कहीं पीछे लग गई तो जान के लाले। गुफा देखने कोई नहीं गया।

गज्जु कोरकू बूढ़ा हो गया, पर बोररानी की बात नहीं भूला। जो भी उससे मिलता है, उसी को पूरा किस्सा सुनाता है। पर लोग गज्जु कोरकू को सनकी समझते हैं। एक दिन उसे एक खोजी महाशय मिल ही गए। डा. धर्मेंद्रप्रसाद था उनका नाम। जंगल-जंगल, गुफा-गुफा मारे-मारे फिरते थे। क्या पता किस गुफा में कोई नई बात दिख जाए ? उन्हें गज्जु कोरकू की कहानी में मजा आया। वे उसके साथ बुढ़ी माई के जंगल में जा पहुंचे। मोरम नदी के पास गज्जु ने दूर से गुफा दिखा दी। वह बाहर ही खड़ा रहा। डा. धर्मेंद्र अकेले घुस गए गुफा में। गुफा की दीवार पर कई अनोखे चित्र बने थे। सामने एक नहीं दो-दो दैत्याकार मकड़ों के चित्र थे। बड़ी-बड़ी आंखें और दर्जन भर पांव। मकड़े को पांच घुड़सवार घेरे खड़े थे। सभी के हाथ में बड़े-बड़े भाले। एक और चित्र में दो आदमी खड़े हैं। सात हिरणों का झुंड उन्हें घेरे है। एक सिपाही ढाल लिए भाग रहा है। मकड़े के डर से भाला दूर फेंक दिया है। एक रेखाचित्र नाचते हुए आदमी का है। ऐसे ही कई चित्र उन्हें दिखाई दिए।

डा. धर्मेंद्र ने गज्जु को आवाज दी। डरते-डरते उसने गुफा में कदम रखा। दीवार पर अनोखी चित्रकारी देखकर उसकी आंखें अचरज से फैल गईं। वह बोला—"देखा साहब ! मैंने सच ही कहा था कि बोररानी इसी गुफा में रहती है। पिछली दीवाली की रात दुलहन की तरह सज-धजकर उसीने ये चित्रकारी की है। बोररानी हर दीवाली की रात यहां जरूर आती है। फज्जु को भी मालूम है। चाहो, तो पूछ लो !"

डा. धर्मेंद्र ने उसे बहुत समझाया—"भाई, ये आदिमानवों की कलाकारी है। वे शायद इस गुफा में हजारों साल पहले रहते होंगे।" पर गज्जु कोरकू भला उनकी बात क्यों मानता!

बुढ़ी माई के जंगल में आज भीवहगुफा है। परी बोररानी की गुफा के नाम से ही सब उसे जानते हैं। गज्जु कोरकू अब इसी सबूत के दम पर अकड़कर कहता है—"भरोसा न हो, तो चांदनी रात में बुढ़ी माई के जंगल में चलो। आज भी परी वहां आती है। दिल मजबूत हो, तो सुनो परी बोररानी की पायलों की छम...छमा...छम... !" ●

www.kissekahani.com

□ दारोगा —तुमने इतनी बड़ी चोरी अकेले ही की ?

चोर—हां हुजूर। पिछली बार एक दोस्त ने मुझे धोखा दे दिया था, बस तब से मैं अकेले ही चोरी करता हूं।

□ फल वाला—भाई साहब, आप अपना कुत्ता परे कर लें कहीं इसने फल जूठे कर दिए तो...

ग्राहक—चिंता न करो। आज मेरे साथ-साथ इस कुत्ते ने भी मुंह साफ किया है।

□ एक मित्र—यह सूट कहां से सिलवाया है, बड़ा बढ़िया सिला है।

दूसरा मित्र—पता तो मैं दे दूंगा। पर दर्जी से मेरे बारे में कतई जिक्र न करना। क्योंकि अभी मैंने सूट की सिलाई के पैसे नहीं दिए हैं।

□ अध्यापक—यदि मैं तुम्हारे कहे अनुसार तुम्हें छुट्टी दे दूं तो क्या करोगे ?

छात्र—सर, मैं सबसे पहले मोहन को धन्यवाद दूंगा। क्योंकि छुट्टी लेने का यह तरीका उसी ने बताया था।

□ डाक्टर—बेटा, कुत्ते ने तुम्हें कैसे काटा ?

बबलू—अंकल,यह मैं कैसे बता सकता हूं। इसके लिए तो कुत्ते से ही पूछना पड़ेगा।

□ एक पड़ोसी—बेटा, इतनी जोर से सीटी न बजाया करो। इसके लिए मैं तुम्हें एक रुपया दे देता हूं।

सोनू—अंकल, पड़ोस वाले अंकल ने तो मुझे सीटी बजाने के दो रुपए दिए हैं। आप ही बताओ, मैं क्या करूं ?

□ एक पहलवान— तुमारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे कुश्ती लड़ने की ?

दूसरा पहलवान— मैं आपसे कुश्ती लड़ने नहीं आया हूं। मैं तो आपके साथ एक फोटो खिचवाना चाहता हूं, ताकि मित्रों में अपनी धाक जमा सकूं।

□ अध्यापक— तुम जान-बूझकर शरारतें करते हो ?

छात्र— हां सर, ताकि शरारतों में कम गलतियां हों।

□ एक मित्र— मैं कल कहीं भी जाऊं, तुमसे क्या मतलब ?

दूसरा मित्र— मतलब है, क्योंकि मुझे तुमसे रुपए लेने कल वहीं तो पहुंचना होगा, जहां तुम होगे।

□ एक मित्र— क्या तुम मुझे गधा समझते हो ?

दूसरा मित्र— अभी तो नहीं। पर लगता है, कुछ दिनों बाद मुझे तुम्हारी बात सच लगने लगे।

□ नया अधिकारी—दफ़्तर में कितने लोग हैं ?

कर्मचारी—सर, फिलहाल मैं और आप। बाकी लोग घूमने गए हैं।

□ रमेश—सुरेश, क्या तुम्हारा कभी मूर्खों से पाला पड़ा है ?

सुरेश—रमेश, कोशिश तो बहुत की कि मूर्खों से पाला न पड़े। पर मैं आज तुमसे बच नहीं पाया।

□ ग्राहक—इतनी खराब साग-भाजी यहां कोई खरीदता भी है।

दुकानदार—साहब, कोई खरीदता न होता, तो मेरी रोजी-रोटी कैसे चलती ?

□ सुरेश—रुपया कमरे में गिरा है, तो यहां क्यों खोज रहे हो ?

नरेश—क्योंकि तुम यहां हो।

तेनालीराम ३२६

खिलौना पुल

राजा कृष्णदेव राय का दरबार लगा था। एक गांव से आए कुछ लोगों ने प्रार्थना की— महाराज हमारे गांव के पास नदी का पाट बहुत चौड़ा है। कहीं भी जाने के लिए नाव का सहारा लेना पड़ता है। कृपया नदी पर एक पुल बनवा दें।

राजा को लगा गांव वालों की समस्या सच्ची है। मजबूत पुल बनना चाहिए। दरबारियों ने भी उनकी हां में हां मिलाई।

लोगों को पता चला कि राजा पुल बनवाना चाहते हैं, वे भागदौड़ करने लगे। हर एक चाहता था कि पुल बनाने का काम उसे मिले। मंत्री और पुरोहित हर एक के काम को खराब बता देते। अंत में मंत्री ने अपने भतीजे को पुल बनाने का ठेका दिलवा दिया।

समय-समय पर राजा पुल के बारे में पूछते रहते। एक दिन दरबार में वही आदमी आया जिसे पुल बनाने का काम सौंपा गया था। उसने बताया कि पुल बन गया। यह सुनकर राजा कृष्णदेव राय बहुत खुश हुए। सारे दरबारी उनकी जय-जयकार कर उठे।

राजा इनाम में अपने गले का हार देना ही चाहते थे कि उनकी नजर तेनालीराम पर पड़ी। वह बार-बार जेब से कुछ निकालता, फिर रख लेता। राजा ने उससे पूछा—

"तेनालीराम तुम कुछ छिपा रहे हो। बताओ तुम्हारी जेब में क्या है?"

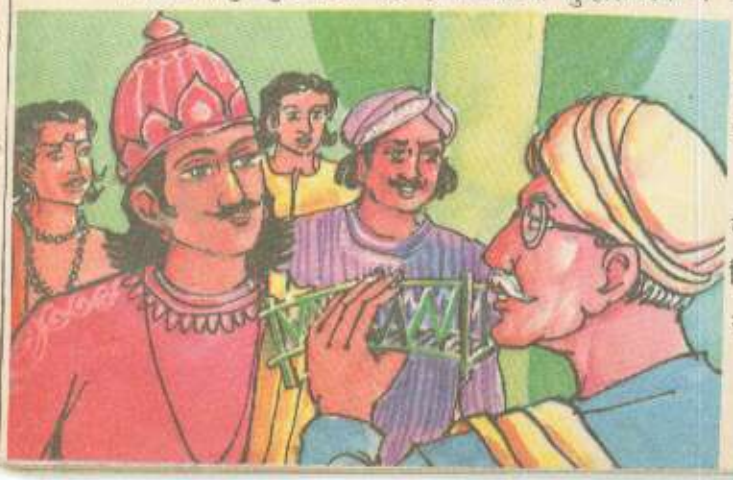

तेनालीराम ने जेब से निकालकर वह चीज राजा को दिखाई। वह लकड़ी का बना खिलौना था। तेनालीराम ने कहा— "महाराज पुल ऐसा ही बना है।"

राजा समझ गए कि लकड़ी का काम चलाऊ पुल बनाया गया है। राजा ने पता लगवाया तो बात सच निकली। मंत्री के भतीजे को कारागार मिला। तेनालीराम को पक्का पुल बनवाने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

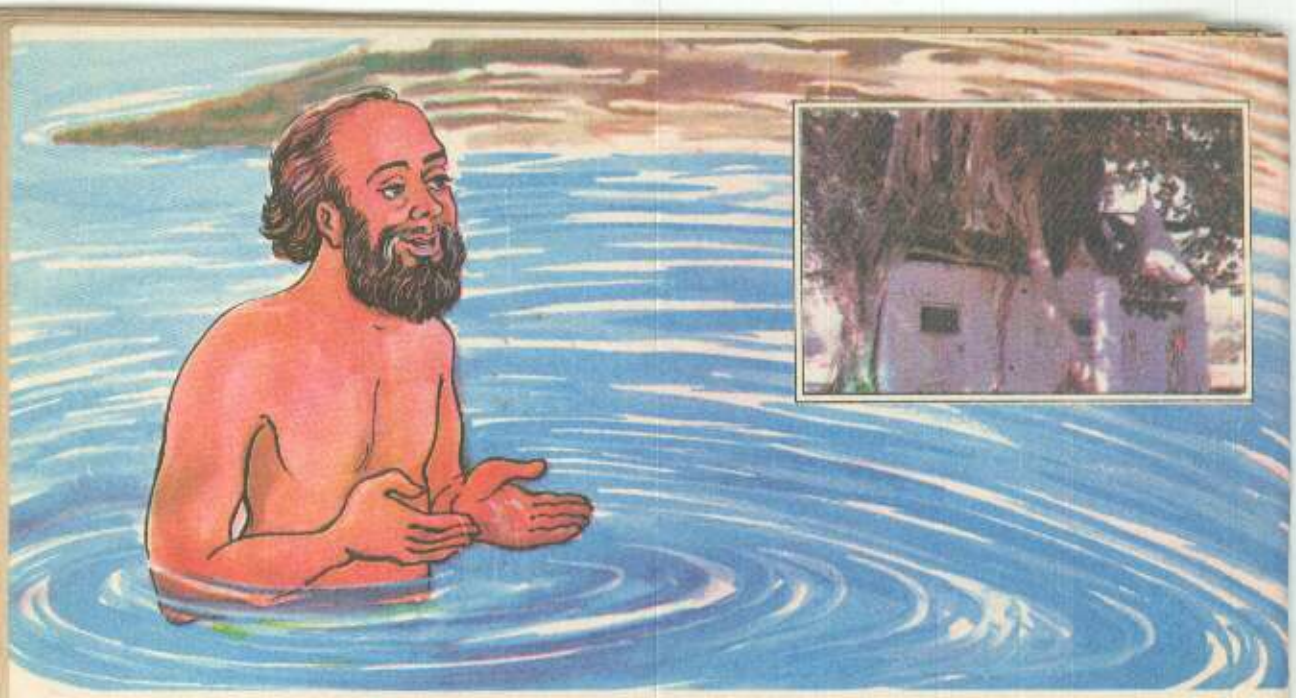

देवी ने कहा

—श्यामकुमार दास

लगभग ढाई सौ साल पहले बुद्ध मऊ (बदायूं) के पास छोटा शहर था—उझानी।

उझानी में नवाब अब्दुल्ला खां रहते थे। अब्दुल्ला खां कुष्ठ रोग से पीड़ित थे। उन्होंने अनेक दवाइयां कीं, लेकिन फ़ायदा नहीं हुआ, वह काफी परेशान रहने लगे।

अब्दुल्ला के यहां एक मुनीम थे, नाम था बसंत राय। बसंत राय भी नवाब की बीमारी के कारण बहुत चिंतित रहते थे। जब वह नवाब की बीमारी देखते, तो बहुत दुखी हो जाते। बसंत राय चाहते थे, नवाब बिल्कुल ठीक हो जाएं।

एक दिन बसंत राय ने नवाब से कहा—"नवाब साहब, आप मुसलमान होने के कारण शायद न मानें, लेकिन यदि आप तीन-चार महीने प्रतिदिन गंगा में नहा लें, तो आपकी बीमारी दूर हो सकती है।"

अब्दुल्ला खां सभी धर्मों का आदर करते थे। वह बसंत राय की बात मान गए और उझानी से चलकर गंगा तट पर स्थित ककोड़ा गांव में आ गए। वहां पड़ाव डालकर रहने लगे।

लगातार तीन-चार महीने गंगा स्नान से अब्दुल्ला खां की बीमारी ठीक हो गई। वह गंगा मैया की महिमा से अभिभूत हो गए।

एक दिन बसंत राय ने फिर कहा—"आप गंगा मैया की कृपा से ठीक हो गए हैं। अब कार्तिक पूर्णिमा के दिन नहान मेला शुरू करें।"

इसी बीच गांव में स्थित मुड़कटिया देवी ने भी नवाब को स्वप्न दिया। स्वप्न में देवी ने नवाब से मंदिर के पास मेला शुरू करने को कहा।

अब्दुल्ला खां ने देवी मां का आदेश मान लिया, बसंत राय की बात भी सुन ली। मंदिर के पास गंगा तट पर गंगा नहान मेला शुरू करवाया।

एक नवाब द्वारा शुरू किया गया यह मेला उत्तर प्रदेश के गंगा नहान मेलों में प्रमुख स्थान रखता है।

बदायूं जनपद के उझानी कस्बे में स्थित ककोड़ा गांव में मुड़कटिया देवी का प्राचीन मंदिर अब भी है। लगभग एक हजार वर्ष प्राचीन इस मंदिर में आल्हा-ऊदल और राजा महीपाल भी पूजा करने आते थे।

समय के साथ गंगा नदी मंदिर की पश्चिम दिशा में लगभग तीन किलोमीटर दूर हट गई है। लेकिन आज भी अब्दुल्ला खां द्वारा शुरू किया गया मेला प्रति वर्ष गंगा तट पर ककोड़ा मेला के नाम से लगता है। ●

MAGENTA

AKA/723-HN-a1

बहुत नटखटवाली, बहुत ही होशियार
और होनहार
अपने हर काम में पूरी सफलता
चाहते हैं ये.

मिलिए आलोक आइनस्टाइन से

वेहतरीन एस्ट्रोफिजिसिस्ट बनना
इनका सपना है जिसे ये साकार
करके रहेंगे.
इसलिए ये हमेशा चुनते हैं सबसे
अच्छा जॉमेट्री सेट – कोरस सक्सेस.
प्रोट्रेक्टर, डिवायडर, कम्पास, स्केल,
हर उपकरण एकदम सही और अचूक.
लगातार सही काम करनेवाले.
उद्देश्य हो सफलता का तो कोरस
सक्सेस जॉमेट्री सेट होना ही चाहिए.

मुफ्त !
*अक्षरों का स्टेंसिल
सेट में

कोरस सक्सेस जॉमेट्री सेट
आपकी सफलता का साधन

कोरस
कोरस (इंडिया) लि. का संयुक्त उद्यम

* स्टॉक खत्म होने तक

AKA/724-106

खाली घड़ा

—चैतन्य

एक गांव में सिद्धानंद नाम का छोटा-सा व्यापारी रहता था। वह गांव-गांव से फल-सब्जियां, अनाज आदि कम दाम पर खरीदता और उन्हें बाजार में अच्छे दाम पर बेचता था। इस कारोबार में उसे अच्छा मुनाफा हो जाता था।

सिद्धानंद लालची भी कम न था। वह गांव का सबसे धनी आदमी बनने का सपना देखा करता था।

गरमी के दिन थे। सिद्धानंद के गांव से कुछ दूरी पर हाट लगी थी। हाट के आसपास के गांवों में खरबूजे की खेती होती थी। खरबूजे पक रहे थे। सिद्धानंद ने खरबूजे खरीदने और बेचने का मन बनाया।

धूप चढ़ आई थी। सिद्धानंद खरबूजे खरीदने के लिए बोरी लेकर गांवों की तरफ चल दिया। चलते-चलते सिद्धानंद को प्यास लगी। वह नदी की तरफ बढ़ गया। पानी पीकर चल पड़ा। तभी उसकी निगाह एक झाड़ी पर टिक गई। वह झाड़ी के पास गया। उसने देखा—झाड़ी में एक घड़ा था।

सिद्धानंद ने घड़ा उठाया। उसमें सोने की मुहरें थीं। उसने आगे-पीछे देखा—वहां कोई नहीं था। उसने घड़े को बोरी में रखा और घर लौटने लगा।

पर उसने सोचा— 'यदि रास्ते में किसी ने देख लिया, तो मैं क्या जवाब दूंगा ? किसी ने खरबूजे समझकर बोरी झपट ली, तो भंडा फूट जाएगा।' अब सिद्धानंद दिन ढलने की प्रतीक्षा करने लगा।

अंधेरा होते ही सिद्धानंद झाड़ी से बाहर आया। बोरी कंधे पर रखी और अपने गांव की ओर चल पड़ा।

सिद्धानंद एक-दो खेत पार कर चुका था कि उसे सामने से पांच आकृतियां आती हुई दिखाई पड़ीं। वह सकपका कर ठिठक गया। इतने में तो आकृतियां उसके पास आकर रुक गईं। सिद्धानंद समझ गया कि लुटेरों ने उसे घेर लिया है।

"कंधे पर क्या है ?"—एक लुटेरे ने पूछा।

सिद्धानंद की बोलती बंद हो गई। उससे जवाब देते नहीं बना।

"क्या लेकर जा रहा है ?"—दूसरे लुटेरे ने चीखकर पूछा। फिर उसने घड़े की तरफ हाथ बढ़ा दिए।

"घड़ा है यह। पानी भरने के लिए बाजार से ला रहा हूं।"—कांपता हुआ सिद्धानंद बोला।

"पर इसे बोरी में क्यों छिपा रखा है ? जरूर इसमें माल होगा।"—कहते हुए तीसरे लुटेरे ने बोरी कंधे से उतारी।

चौथे लुटेरे ने घड़े में हाथ डाला। उसने घड़े से कुछ मुहरें निकालीं। उसने लुटेरे दोस्तों से कहा—"मुहरें हैं, इसमें मुहरें।"

अब क्या था ! चौथे लुटेरे ने बोरी अपने कंधे पर रखी। पांचवें लुटेरे ने सिद्धानंद को डरा-धमकाकर चुप कर दिया। फिर वे चलते बने।

लुटेरे अंधेरे में ओझल हो गए। सिद्धानंद अंदर ही अंदर रो पड़ा। फिर वह अपने को कोसता हुआ घर चल पड़ा। वह सोच रहा था—'काश ! मैं लालच में न पड़ता तो दिन रहते घड़े को लेकर गांव पहुंच जाता। चोर-लुटेरों से बच जाता। गांव वाले यह बात जान भी लेते, तो वे कुछ मुहरें मांग लेते। कम से कम आज खाली हाथ तो न होता।' ●

नंदन ज्ञान पहेली

१000 रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. — बहुत है, चलो मीना, घर में चलकर बैठो। (धूप/धूल)

२. आखिर शरारती टिड्डे के आगे — ने हार मान ली। (मैना/मैकू)

४. देखूं, तुम्हारे — में कितना जोर है! (पंखे/पंजे)

८. सच, — खाने को मन तरस गया भैया। (आलू/आम)

९. अरे छोकरो, दौड़कर अपने लड्डू — । (दो/लो)

११. क्या कहा, तुम मेरे — खाओगे? (कान/पान)

१२. हिंदी के प्रसिद्ध कवि जिन्होंने बच्चों के लिए भी सुंदर कविताएं लिखीं।

ऊपर से नीचे

३. छुट्टी है तो आओ मिलकर — भाई। (झूलें/खेलें)

५. — द्वीप संगीत की लहरियों से गूंज उठा। (तारा/सारा)

६. किले में बंदी हिरन की आवाज ने — को कंपा दिया। (रानी/राही)

७. — सुनाती हमें कहानी दादी मां! (आज/रोज)

१०. क्यों न इस बार गरमियों में यहां की सैर करें।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१८

नाम _____

उम्र _____ पता _____

_____

न.ज्ञा.प.३१८

इन आँखों में हैं आपके सपने.
आपके हाथों में है इनका भविष्य.

बाल उपहार वृद्धि निधि.

कितना लाड़, कितना दुलार उसकी हर एक जरूरत के लिए. दिनभर का हर पल आप सुरक्षित बनाते हैं उसके लिए. क्या यही वह सही समय नहीं जब आप उसके भविष्य के बारे में भी सोचें? आज एक छोटी सी योजना बनाइए और उसे उज्जवल भविष्य का उपहार दीजिए. हमारी बाल उपहार वृद्धि निधि योजना के जरिए आप 15 साल से कम उम्र के बच्चों को उपहार दे सकते हैं. यह उपहार 100 यूनिटों (रु. 1000/-) के गुणकों में हो तथा न्यूनतम यूनिट 200 (रु. 2000/-) हों. आप चाहें तो एकमुश्त उपहार दें या नियमित अंतराल में बच्चे को उपहार देते रहिए. यह उपहार वार्षिक लाभांश तथा हर 3 वर्ष में घोषित बोनस लाभांश के पुनर्निवेश से बढ़ता जाएगा. 18 साल की उम्र में आदाता साल में दो बार पैसा निकाल सकता है. जबकि बकाया रकम आदाता के 21 वर्ष के होने तक बढ़ती रहती है. सोचिए, आपकी आँखों के तारे के लिए यह उपहार क्या कुछ कर सकता है... उच्च शिक्षा के अवसर या जिंदगी में आगे बढ़ने में सहायता. या छोटा सा घर खरीदने का मौका। बाल उपहार वृद्धि निधि - ऐसा उपहार कि आपके बच्चे एक दिन आपके गुण गाएंगे.

14% लाभांश.
हर 3 वर्ष में बोनस लाभांश.

1993-94 में 3% बोनस लाभांश.

भारतीय यूनिट ट्रस्ट
आपके बेहतर कल के लिए

[illegible]

मुख्य कार्यालय : बम्बई. अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय : [illegible] □ **कलकत्ता** : [illegible] □ **नई दिल्ली** : [illegible] □ **जयपुर** : [illegible] □ **कानपुर** : [illegible] □ **लखनऊ** : [illegible] □ **चंडीगढ़** : [illegible] □ **शिमला** : [illegible] □ **अहमदाबाद** : [illegible] □ **भावनगर** : [illegible] □ **भुवनेश्वर** : [illegible] □ **भूतपूर्व भारतीय केन्द्र** : □ **भोपाल** : [illegible] □ **गाजियाबाद** : [illegible]

J:\Dokhanna\6213-H

लालच का फल

—गोपालदास नागर

एक गांव था। वहां कई किसान रहते थे। दो किसानों में काफी मित्रता थी। एक का नाम था हरिया। दूसरे का नाम था सुखिया। हरिया के पास जमीन थोड़ी थी, लेकिन सुखिया के पास काफी जमीन थी। हरिया के खेत से सुखिया के खेत की पैदावार तीन-चार गुनी अधिक थी। हरिया गरीब था। वह रूखा-सूखा खाकर, जीवन काट रहा था। सुखिया अच्छी तरह खाता-पीता और मौज-मस्ती से रहता था।

किंतु एक साल उस गांव में भारी वर्षा हुई और बाढ़ आ गई। घरों में पानी भर गया। खेत डूब गए। लोग गांव छोड़कर जाने लगे।

सुखिया चतुर था। उसके घर में बाढ़ का पानी भरने लगा। उसने अपने रुपयों की थैली सिर पर रखी और दूसरी जगह जाने की तैयारी करने लगा। हरिया के पास तो नकद के नाम पर फूटी कौड़ी तक नहीं थी। उसका सब कुछ पानी में बह गया था। वह सुखिया के घर गया। पूछा—"कहां की तैयारी कर रहे हो?"

"भाई, यहां तो अब कुछ बचा नहीं। आज कई दिनों से अनाज भी चुक गया है। सोच रहा हूं, किसी दूसरे गांव में जाकर कुछ दिन रह आऊं।" —सुखिया ने जवाब दिया।

"हम दोनों ही साथ चलते हैं। कुछ मेहनत-मजदूरी करके ही अपना पेट भरने का इंतजाम कर लेंगे।" —हरिया ने कहा।

सुखिया बोला—"ठीक है, तो चलो।"

दोनों मित्र गांव छोड़कर चल पड़े। सूरज डूबने को आया। वे एक गांव में पहुंचे। वहां उन्होंने एक हलवाई की दुकान से मिठाइयां खरीदीं। वे मिठाइयां खाकर चबूतरे पर कम्बल बिछाकर सो गए।

सुखिया को नींद नहीं आई। वह सोचने लगा—'हरिया को साथ रखने से तो उसे मुफ़ खाना खिलाना होगा। इस तरह मेरा काफ़ी धन खत्म हो जाएगा।'

उधर हरिया खर्राटे ले रहा था। सुखिया हरिया को सोता छोड़कर चला गया।

सुबह हरिया उठा उसने सुखिया को वहां न पाकर, उसको ढूंढ़ा। पर उसे सुखिया नहीं मिला। वह भूखा-प्यासा वहां से आगे बढ़ा।

शाम होते-होते वह एक जंगल में पहुंच गया। घनी झाड़ियों से होता हुआ वह आगे बढ़ने लगा। तभी उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। सोचा—'मैं कुछ देर झोंपड़ी में ही आराम करूं।' संयोग से झोंपड़ी में एक चूल्हा था। चूल्हे के पास कुछ रोटियां ढककर रखी थीं। हरिया को भूख तो जोर से लगी थी, लेकिन उसने उन रोटियों में से सिर्फ एक रोटी खाई और वहीं जमीन पर लेट गया।

सहसा खटपट हुई। हरिया डर गया था। वह उठा और लकड़ियों के ढेर के पीछे छिप गया। उसने देखा—झोंपड़ी में चार आदमी घुसे। सभी डीलडौल से हृष्ट-पुष्ट थे। चारों ने अपना-अपना सामान एक तरफ फेंका और चूल्हे के पास रखी रोटियां निकाल कर एक साथ खाने लगे। रोटियां खा लेने के बाद चारों वहीं लेट गए। फिर आपस में बातें करने लगे।

एक ने कहा—"इस झोंपड़ी में रखी लकड़ियों के

पीछे मैंने चांदी के सिक्के छिपा रखे हैं।"

दूसरे ने बताया—"बाहर आम के पेड़ के पास मैंने चांदी का एक घड़ा छिपाया है।"

तीसरा बोला—"मैंने बरगद के पास संदूक रखा है, उसमें कई कीमती रत्न हैं।"

अंत में चौथे ने कहा—"और मुझे भी एक ऐसी कीमती जड़ी का पता मालूम है, जिससे असाध्य रोग ठीक हो सकते हैं।"

"हम सबने अपनी कीमती वस्तुएं कहां रखी हैं, यह बता दिया। अब तुम भी बताओ कि वह जड़ी है कहां ?" —उनमें से एक ने चौथे से पूछा।

चौथे ने जवाब दिया—"हम जिस झोंपड़ी में रहते हैं, उसके पीछे जो वृक्ष है, उसकी जड़ों में ही यह जादू है।"

इस तरह बातें करते-करते वे चारों सो गए। सुबह हुई और चारों को अपने-अपने काम पर जाना था। जाने से पहले शाम के लिए उन्होंने रोटियां बनाईं और उसी चूल्हे के पास ढक कर रख दीं तथा चलते बने।

हरिया बाहर निकला। उसने रात में उन चारों की बातें सुन ली थीं। पहले उसने लकड़ी के पीछे देखा, तो चांदी के सिक्के पड़े थे। उसने उनमें से कुछ सिक्के उठा लिए और एक कपड़े में बांध कर आगे बढ़ा। अब वह झोंपड़ी के बाहर आया। उस वृक्ष की कुछ जड़ें उखाड़ी और अपने पास रख लीं। फिर वह आम के पेड़ के पास आया तो वहां चांदी का घड़ा मिल गया। अंत में वह बरगद के पास पहुंचा। वहां उसे रत्नों से भरा संदूक भी मिल गया। वह सारा सामान लेकर वहां से चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक शहर में पहुंच गया। वहां धर्मशाला में ठहरा। उसे पता चला कि वहां के राजा की बेटी बहुत बीमार है। राजा वैद्यों और हकीमों की दवा करते-करते निराश हो गया है।

हरिया को अपने पास रखी जड़ी याद आई। वह राजमहल पहुंचा। द्वारपाल से कहा—"जाकर राजा को खबर कर दो कि एक वैद्य उनसे मिलना चाहता है।" द्वारपाल ने राजा को यह समाचार दिया। राजा ने हरिया को तुरंत अंदर बुलवा लिया और अपनी दुःख भरी कहानी सुनाई।

हरिया ने वह जड़ी निकाली और राजकुमारी को खिला दी। कुछ ही देर में राजकुमारी एकदम ठीक हो गई।

राजा ने हरिया के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया और उसे अपने साथ महल में रख लिया। हरिया ने अपना नाम हरिसिंह रख लिया था और बड़े ही शान से महल में रहने लगा।

एक दिन वह राजकुमारी के साथ कहीं घूमने जा रहा था। रास्ते में उसे उसका वही पुराना मित्र सुखिया दिखाई पड़ा। उसका सारा धन अब तक खर्च हो चुका था। सड़क पर फटेहाल सुखिया को देख, हरिया उसके पास पहुंचा।

पहले तो सुखिया उसे पहचान ही नहीं पाया, लेकिन जब उसने हरिया की कहानी सुनी तो उसके मन में भी लालच आ गया। वह भी उसी जंगल वाली झोंपड़ी में पहुंचा। वहां आज भी रोटियां रखी थीं। लालची स्वभाव का होने के कारण सुखिया वे सारी रोटियां खा गया और उसी लकड़ी के ढेर के पीछे छिप गया।

रात हुई और वे चारों व्यक्ति वहां आए। चूल्हे के पास रोटियां नहीं थीं।

"रोटियां कौन खा गया ?" —चारों ने एक-दूसरे की तरफ देखते हुए प्रश्न किया।

"लगता है, यहां कोई चोर आ गया है।" —एक ने कहा।

और फिर चारों ने झोंपड़ी का एक-एक कोना देखना शुरू किया। लकड़ी के ढेर के पीछे सुखिया को देखते ही चारों ने उसे पकड़ कर बहुत पीटा। वह बेहोश हो गया। बहुत देर बाद चेत हुआ तो दर्द से कराहते हुए उठा और लंगड़ाता हुआ चल दिया। सुखिया फिर कभी गांव में नहीं दिखाई दिया। कोई नहीं जानता कि कहां चला गया। ●

www.kissekahani.com

शेर की हजामत

—अरविंद बेलेवार

एक गांव में गरीब मोची रहता था। वह जूतों की जोड़ियां बनाकर उन्हें हाट में ले जाकर बेचता था और अपने परिवार की गुजर-बसर करता।

एक दिन वह देर रात तक एक जूते की जोड़ी बनाने का काम कर रहा था कि अचानक घर का दरवाजा खटका। उसने उठकर दरवाजा खोला, तो सामने एक बौना देखकर वह चकित रह गया।

बौना बहुत छोटा था। उसके एक हाथ में लालटेन थी। मोची को हैरत में पड़ा देखकर वह मुसकराया। बोला—"मैं जंगल के पास सटी पहाड़ी पर से आ रहा हूं। मैंने सुना है, तुम बेहतरीन जूते बनाते हो। क्या तुम्हारे पास मेरे पहनने के लिए भी जूते हैं?"

मोची ने उसके पैर देखे, फिर अपनी हंसी रोकते हुए बोला—"लेकिन इतने छोटे जूते तो मैं बनाता ही नहीं हूं।"

"तुम्हारे पास जो भी तैयार जोड़ी हो,वही दे दो। दरअसल कल मेरी शादी है और मुझे जूतों की बेहद जरूरत है।"—बौना बोला।

मोची ने उसे जूते दिखाए और बोला—"आज तो मेरे पास यही एक जोड़ी तैयार है लेकिन तुम्हारे पैर के लिए ये काफी बड़े होंगे।"

"ठीक है, ठीक है।"—उसने जल्दी-जल्दी उन्हें उलट-पुलटकर देखा,फिर एक थैली थमाते हुए बोला—"इसमें कुछ सिक्के हैं।"

मोची उसे कुछ जवाब दे पाता,इससे पहले ही वह फुर्ती से पलटा और तेज-तेज डग भरते हुए घने अंधेरे में गुम हो गया।

उसके जाने के बाद जब मोची ने थैली खोलकर देखी, तो उसमें सोने के सिक्के भरे देखकर वह घबरा गया। उसने अपनी पत्नी को जगाकर सारी घटना कह सुनाई। दोनों सुबह होने तक इसी बारे में बातें करते रहे।

अगले दिन ही मोची के घर बढ़िया पकवान बनने लगे जिनकी खुशबू उसके पड़ोसी नाई के घर गई।

नाई बहुत दुष्ट था। वह समझ गया कि जरूर मोची को कहीं से अच्छी रकम मिली है। इस बात की जानकारी लेने वह उसके पास पहुंचा। मीठी-मीठी बातें करके उसने मोची से सारी बात उगलवा ली। घर आकर उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताई।

"तुम पहाड़ी के पास अभी हजामत का सामान लेकर जाओ और बौने की बारात में काम ढूंढ़ने की कोशिश करो।"—पत्नी ने सलाह दी—"ताकि तुम्हें भी अच्छी रकम मिले।"

नाई तुरंत पहाड़ी की तरफ चल दिया। रास्ते में उसे मुखिया, चौकीदार और जुलाहे ने अपनी-अपनी हजामत बनाने के लिए रोकना चाहा, लेकिन वह बहाना बनाकर जल्दी-जल्दी पहाड़ी की तरफ बढ़ने लगा।

जंगल में पहुंचते-पहुंचते अंधेरा छाने लगा। नाई को बहुत डर लगा लेकिन लालचवश उसने साहस नहीं छोड़ा। पहाड़ी के पास पहुंचते ही उसे एक भालू मिला जिसे देखकर वह घिघियाने लगा।

"डरो मत।" भालू ने कहा—"क्या तुम बौने की शादी में शामिल होने जा रहे हो?"

उसे इंसानों की तरह बातें करते हुए देखकर, नाई की जान में जान आई। उसने सकपकाते हुए जवाब दिया—"हां, मैं वहीं जा रहा हूं।"

भालू बोला—"सब मेहमान वहां पहुंच चुके हैं। मुझे एक नाई की तलाश करने का काम सौंपा गया है। मैं उसे खोजने निकला हूं।"

"नाई तो मैं भी हूं।" उसने तुरंत कहा—"और मेरे साथ हजामत का सारा सामान भी है, पर काम के बदले मुझे अच्छा पैसा मिलना चाहिए।"

भालू की बाछें खिल गईं। वह खुश होकर बोला—"उसकी चिंता मत करो। बस, मेरे पीछे-पीछे चले आओ।"

काफी ऊंचाई पर चढ़ने के बाद भालू उसे एक चौरस जगह पर ले आया। वहां जगमगाती रोशनी में काफी भीड़-भाड़ नजर आ रही थी।

भालू नाई को बौने के पास ले गया जो अपने पैरों में बड़े-बड़े जूते पहनकर बेहद खुश हो रहा था।

"ओफ, क्या भद्दे जूते हैं।"—नाई ने मुंह बिगाड़ते हुए कहा—"इससे बेहतर तो कोई नौसिखिया बना सकता था।"

"यह बात छोड़ो।"—बौने ने उसे डपटा—"तुम तो बस यह बताओ कि क्या तुम वाकई बढ़िया हजामत बना लेते हो?"

"हां हुजूर।" वह चापलूसी भरे लहजे में बोला—"मैं तो रास्ते में चलते-चलते मुखिया, चौकीदार और जुलाहे की हजामत बनाकर आया हूं। सब मेरे काम की तारीफ कर रहे थे।"

"लेकिन वे सब तो यहां आए हैं और उनमें से किसी की भी हजामत नहीं बनी है।"—बौने ने कहा।

नाई ने घबराकर सामने देखा तो वाकई सब दूर खड़े उसे घूर रहे थे।

"जरूर तुमने झूठ बोला है।"—बौना बोला। फिर नाई से पूछा—"क्या तुम शेर की हजामत बना सकते हो?"

यह सुनकर नाई घबरा गया, लेकिन जान छुड़ाने का कोई उपाय न देखकर वह झिझकते हुए बोला—"जरूर सरकार।"

"ठीक है।"—बौने ने इशारा किया।

पलक झपकते ही एक खूंखार शेर दहाड़ता हुआ वहां हाजिर हो गया।

नाई थर-थर कांपने लगा।

"तुम मेरे खास मेहमान शेर की हजामत बना दो। यदि तुम्हारा काम वाकई बढ़िया लगा तो मैं भी हजामत बनवाऊंगा और तुम्हें इनाम दूंगा।"—बौने ने मुसकरा कर कहा।

नाई ने घबराते हुए अपना उस्तरा खोला। वह ज्यों ही शेर की तरफ बढ़ा शेर ने अपना मुंह फाड़ दिया।

"बाप रे।"—नाई चीखा और पहाड़ी की ढलान पर ऐसा लुढ़का कि उसे संभलने का मौका ही नहीं मिला। इस तरह वह कब तक लुढ़कता रहा, उसे इसका होश ही न रहा। जब उसकी आंखें खुलीं, तो सुबह हो चुकी थी और उसका बदन बुरी तरह दुख रहा था। वह उठा और किसी तरह लंगड़ाते-लंगड़ाते अपने घर पहुंचा। उसके बाद काफी अरसे तक वह बिस्तर पकड़े रहा।

उस दिन के बाद नाई ने फिर कभी लालच नहीं किया। ●

www.kissekahani.com

चीटू-नीटू

शीर्षक बताइए

चित्र : सूरज एन. शर्मा

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए, कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जून '९५ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त '९५ अंक

पुरस्कृत चित्र

मनोजकुमार (१६ वर्ष)
टी. जी. टी.-१/६, ३ नं. पहाड़,
पोस्ट—वाल्मीकि नगर,
जिला—पश्चिमी चम्पारण
बिहार-८४५१०७

इनके भी चित्र पसंद आए—
प्रेमप्रताप सिंह, पूर्णिया; विदुषी भटनागर, भोपाल; प्रवीण कंदु, धनबाद; रुचि जैन, बम्बई; संध्या चौहान, जयपुर; बी. आर. चक्रवर्ती, रायगढ़।

पत्र मिला

□ 'नंदन' के माध्यम से हम हमेशा आपके साथ बात करते आए हैं। अप्रैल अंक में छापी गई 'तीन बाण', 'बज उठी तलवार', 'संग दिखाए रंग' बहुत पसंद आईं। 'नंदन' में छोटे-छोटे नाटक प्रकाशित हों तो अच्छा लगेगा।

—सनतकुमार, ब्रह्मपुर (उड़ीसा)

□ ताजा अंक में श्रीराम और सीताजी के चित्र आकर्षक लगे। सभी कहानियां एक से बढ़कर एक थीं। मुझे इसका हर महीने बेसब्री से इंतजार रहता है।

—तरुणकुमार, दुर्गापुर (प.बं.)

□ अप्रैल'९५ का अंक बहुत अच्छा लगा। 'तेनालीराम', 'कान में रुई', 'सपने में खीर', 'सुराही में मुहरें' बहुत अच्छी लगीं। मैंने बहुत-सी पत्रिकाएं पढ़ी हैं लेकिन 'नंदन' जैसी पत्रिका कभी नहीं पढ़ी।

—एम.के. दुलानी, सिवनी (म.प्र.)

□ मैं 'नंदन' का नया पाठक हूं। नए अंक ने मेरा मन लुभा लिया। 'चीटू-नीटू' व 'चटपट' काफी हास्यपूर्ण थे। सभी कहानियां ज्ञानवर्धक थीं। आशा करता हूं कि मुझे इसी तरह के जानकारी बढ़ाने वाले अंक मिलते रहेंगे।

—सौरभ वार्ष्णेय, सूर्यनगर (उ.प्र.)

□ 'टूट गई मूरत', 'नहीं चाहिए धन', 'तीन बाण', 'सोना-पानी' कहानियां अच्छी लगीं। बिहार में हिंदी मासिक पत्रिकाओं में सबसे अच्छी पत्रिका 'नंदन' है। अतः हमें हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।

—आशीषकुमार जायसवाल, रांची

□ 'नंदन' एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक पत्रिका है। इसका प्रत्येक अंक नवीनतापूर्ण और ताजगी भरा होता है। पिछले पांच वर्षों से मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक हूं। आशा है कि आने वाले समय में भी 'नंदन' इसी प्रकार की मनोरंजक कहानियां छापता रहेगा।

—विपिन मल्होत्रा, गीता कालोनी, दिल्ली

□ हर महीने मैं इस पत्रिका को पढ़ती हूं। 'तीन बाण', 'बज उठी तलवार', 'सोना-पानी' कहानियां अच्छी लगीं। 'चीटू-नीटू', 'चटपट' ने खूब हंसाया। 'तेनालीराम' की बुद्धि की भी दाद देनी पड़ी। चित्र-कथाएं भी पसंद आईं। वास्तव में 'नंदन' हम बच्चों को आगे बढ़ने में एक सेतु का काम करती है।

—नीलम अग्रवाल, झुंझनूं (राज.)

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : राजकिशोर कुमार, सीतापुर, (उ.प्र.); अर्पणा अंचल, समस्तीपुर (बि.); कमलेशकुमार जे. माहेश्वरी, बाड़मेर (राज.)।

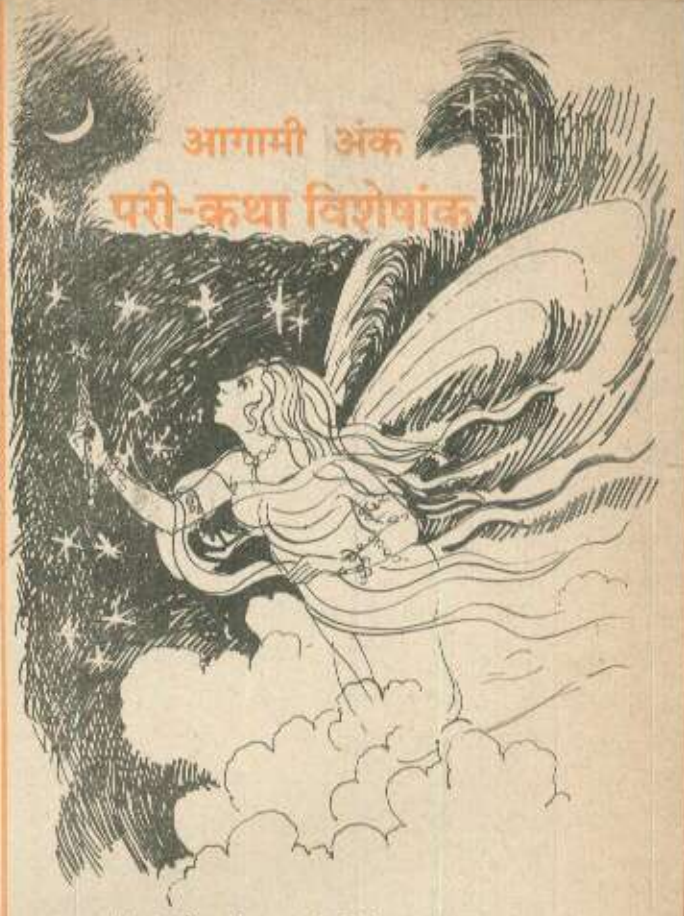

आगामी अंक
परी-कथा विशेषांक

हम 'नंदन' के परी-कथा विशेषांक की साल भर बाट जोहते हैं। उसकी कहानियां सब पसंद करते हैं, मम्मी-पापा भी।

— अचला, टीनू, हरदुआगंज

- **परियां परियां परियां परियां... दसों दिशा से आईं, लाईं नए-नए उपहार। ऐसी मजेदार कहानियां जिन्हें पढ़ें और पढ़ते ही जाएं।**
- रंग-बिरंगे मनभावन डाक-टिकट अनेक देशों के।
- **कुश्ती में करिश्मा**

भारत के पहलवानों ने मेलबोर्न में सोने के पदक जीते और शानदार ट्राफी— उनके रंगीन चित्र और हस्ताक्षर भी।

- **चित्र-कथाएं, चीटू-नीटू, तेनालीराम, मनभावन कविताएं।**
- एक से बढ़कर एक प्रतियोगिताएं : भाग लेकर सैकड़ों रुपए के इनाम जीतें।

अधिक पृष्ठ : अधिक कहानियां

अनोखा जन्मदिन

चिंटू की शरारतों से उसके माता-पिता और उसकी छोटी बहन मिनी बहुत परेशान थी। उसे शरारतें करने और दूसरों को तंग करने में बड़ा आनंद आता था। उसकी सबसे बुरी आदत थी कि वह पशु-पक्षियों को बहुत सताता था।

एक दिन, चिंटू बरामदे में बैठा बिसकुट खा रहा था। उसने देखा, सामने गली में एक पिल्ला जा रहा है। बस उसकी बांछें खिल गईं। उसने बिसकुट दिखाकर पिल्ले को अपने पास बुलाया। पास आने पर पिल्ले को पकड़कर उठाया और घुमाकर दूर फेंक दिया। वह चिल्लाता हुआ चला गया। चिंटू खिलखिलाकर हंसने लगा।

चिंटू की यह हरकत उसके पिता देख रहे थे। उन्हें उसकी इस बेहूदा शरारत पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने एक रुपया दिखाकर, चिंटू को अपने पास बुलाया। वह खुश होता हुआ, रुपया लेने पिता के पास दौड़ा आया। पास पहुंचते ही पिता ने चिंटू का कान पकड़कर जोर से मरोड़ दिया। चिंटू एकदम हड़बड़ा गया और अवाक होकर पिता से पूछने लगा— "मैंने क्या अपराध किया था, जो आपने मेरा कान इतनी जोर से मरोड़ दिया।"

इस पर पिता ने कहा— "उस पिल्ले ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? जिसे आज तुमने उठाकर फेंक दिया था।"

चिंटू अपने गाल पर हाथ फेरते हुए सोचने लगा— 'पिता जी, सच कहते हैं। जानवरों में भी जान होती है, उन्हें भी वैसा ही दर्द होता होगा, जैसा मुझे हो रहा है।'

उस दिन से चिंटू बिलकुल बदल गया। अब वह पशु-पक्षियों से प्यार करने लगा। उसने अपने घर में तोता, चिड़िया और खरगोश जैसे प्यारे-प्यारे जानवर पाले। वह अपने हाथों से उन्हें खाना खिलाता और जी-जान से उनकी देखभाल करता।

कुछ दिन बाद चिंटू का जन्मदिन आया। इस बार उसने अपने मित्रों को न बुलाकर, अपना जन्मदिन अपने प्यारे-प्यारे पालतू जानवरों के संग मनाया। मिनी ने केक बनाया। चिंटू ने सबको अपने हाथों से केक खिलाया। जब वह अपने प्यारे तोते को केक खिलाने लगा तो वह बोला— "चिंटू, जन्मदिन मुबारक हो।" सुनकर चिंटू खुशी से उछल पड़ा। ऐसी प्यार भरी मुबारकबाद उसे पहली बार मिली थी। इस बार का जन्मदिन उसे सबसे अनोखा लगा।

—मोहित मनोहर, जोधपुर

बच्चे और बुलबुल

मुन्ना और पिंकी गांव में माता-पिता के साथ रहते थे। उनके आंगन में एक नीम का पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत-से पक्षी रहते थे। मुन्ना और पिंकी इन पक्षियों को बहुत चाहते थे।

एक दिन जब वे दोनों खेल रहे थे तो अचानक पेड़ से एक छोटा-सा बुलबुल का बच्चा नीचे आ गिरा। इससे पहले मां ने झाड़ू लगाई थी और नीचे गिरे पत्तों को एक तरफ समेटकर, ढेर बना दिया था। बुलबुल का बच्चा उसी ढेर पर गिरा था। मुन्ना और पिंकी उधर ही दौड़े। एकाएक नीचे गिरने से बच्चा घबराया हुआ था। वह जोर-जोर से हांफ रहा था। पिंकी दौड़कर पानी और रुई ले आई। रुई को पानी में डुबोकर कुछ बूंदें उसने बच्चे की चोंच पर टपकाईं। पानी पीने के बाद बच्चा ठीक हुआ।

अगली सुबह जल्दी उठकर दोनों उसे देखने गए। वह टोकरी में बैठा टुकुर-टुकुर ताक रहा था। पिंकी ने मुन्ना से कहा— "भइया, इसका नाम हम चिंकी रखेंगे। फिर अगले साल इसी दिन, इसका जन्मदिन भी मनाएंगे।"

धीरे-धीरे बच्चा बड़ा हो गया। मुन्ना और पिंकी ने सोचा कि उसके लिए पिंजरा ले आएं। मगर उनकी मां ने मना कर दिया। मां का कहना था कि चिंकी को पिंजरे में नहीं रखना चाहिए। यदि वह उड़ना चाहे तो उसे रोकना भी नहीं चाहिए।

धीरे-धीरे समय बीत गया। चिंकी को आए पूरा साल होने वाला था। मुन्ना और पिंकी उसका जन्मदिन धूमधाम से मनाना चाहते थे। पिंकी ने अपने साथी पक्षियों को जन्मदिन पर निमंत्रित किया। आखिर वह दिन आ ही गया।

बच्चों की मां ने एक छोटा-सा सुंदर केक बना दिया। पिंकी और मुन्ना ने उस पर कई मोमबत्तियां लगा दीं। तब मां ने उन्हें समझाया कि चिंकी का तो यह दूसरा जन्मदिन है। फिर इतनी सारी मोमबत्तियां क्यों ? लेकिन बच्चों ने कहा कि मोमबत्तियां जलाकर वे खुशियां मनाना चाहते हैं। धीरे-धीरे पिंकी और मुन्ना के पक्षी मित्र वहां आने लगे। सबके इकट्ठे हो जाने पर जन्मदिन का कार्यक्रम शुरू हुआ। पक्षियों के चहचहाने से सारा कमरा गूंज उठा था। चिंकी भी उनके सुर में सुर मिला रही थी जैसे कि उनका स्वागत कर रही हो।

बच्चों ने केक काटा और उसका सबसे पहला टुकड़ा चिंकी को खिलाया। बाकी पक्षियों को भी केक बांटा गया। मुन्ना और पिंकी ने खूब गीत गाए। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद फिर सारे पक्षी अपने घर नीम के पेड़ पर लौट गए।

—वी. श्रवणि, कुरनूल (आ.प्र.)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : ऋषभ श्रीवास्तव, ऋषिकेश; मानव सौरभ, पटना; पंकज चड्ढा, कांगड़ा।

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. सोफे पर रखा चाकलेट का डिब्बा खुला हुआ है।
२. उसके पास रखा कुशन बड़ा है।
३. दरवाजे के पास वाले शेल्फ में एक किताब अधिक है।
४. इसके नीचे रखे टेबिल लैम्प का शेड काला है।
५. नीचे बैठे आदमी के जूते का डिजाइन बदल गया है।
६. दरवाजे के पास खड़ी महिला की कमीज के गले का डिजाइन बदल गया है।
७. गमले में रखे पौधे की एक पत्ती छोटी है।
८. किवाड़ पर अधिक डिजाइन है।
९. टी. वी. स्टैंड का एक पहिया गायब है।
१०. फर्श पर रखी पत्रिका के दाहिने पृष्ठ पर चित्र बना है।

शीर्षक बताइए

परिणाम

ढेर सारे पत्र मिले। 'नंदन' अप्रैल'९५ अंक में छपे चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

तोता बनकर मैं चली, नाचूं गाऊं गली-गली।
—आर. शशिधर, द्वारा श्री राघव इंजीनियरिंग इंटरप्राइजेज, डी.सी.सी. बैंक के सामने, बीदर (कर्नाटक)।

पंख फैलाए मैंने आज, तोते का पहनकर ताज।
—पूनम जोशी, साइट नं. १०, टाइप-II ब्लाक बी, कसुम्पटी, शिमला (हि.प्र.)।

भिन्न-भिन्न हमारे परिधान, मेरा भारत देश है महान।
—तन्मय दुबे, गांधी चौक, पो. छीपाबड़, सेंट्रल रेलवे, खिरकिया (म.प्र.)।

तोते का मुकुट लगाए, ठुमक कर नाच दिखाए।
—सुरेशकुमार मीणा, द्वारा रामस्वरूप मीणा, ग्रा+पो. देही खेड़ा, वाया लाखेरी, जि. बूंदी (राज.)।

इनके शीर्षक भी सराहे गए : धीरेंद्र खुल्बे, ब्रह्मपुरी, दिल्ली; रचना सर्राफ, कलकत्ता; आर. नवीनचंद, हैदराबाद; मनोज शर्मा, विराट नगर (नेपाल); अमरदीप त्रिपाठी, एन.पी.पी., जागी रोड (असम)।

नई पुस्तकें

बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक— लेखक : डा. गिरिराजशरण अग्रवाल; प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन, साहित्य विहार, बिजनौर (उ. प्र.); सजिल्द मूल्य : १२५ रुपए।

पुस्तक में बाइस नाटक हैं। स्कूलों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहते हैं। ऐसे अवसरों पर बच्चे अक्सर नाटक भी खेलना चाहते हैं लेकिन अच्छे और सरल एकांकी मिल नहीं पाते। डा. गिरिराजशरण अग्रवाल ने विशेष रूप से विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रखकर ये नाटक लिखे हैं। भाषा सहज, सरल है और समस्याएं भी बालक के आसपास की हैं। मंच पर इनका अभिनय करना कठिन नहीं होगा।

मुख्य अतिथि, कंगारू, नकलची छात्र, खंडहर में भूत, बच्चों का आंदोलन और राजा का निर्णय— ये नाटक खास तौर से बच्चे पसंद करेंगे। पुस्तक हर विद्यालय के लिए उपयोगी है। छात्र ही नहीं, अध्यापक भी इसे पढ़ना चाहेंगे।

छमक छम-छम— लेखक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक : सिंघल ब्रदर्स, स्टेशन रोड, मुरादाबाद; मूल्य : ११ रुपए।

इस पुस्तक में शिशु के लिए सुंदर-सुंदर, छोटे-छोटे गीत हैं। मोहक बहुरंगे चित्र और बढ़िया छपाई के कारण यह खिलौना-पुस्तक जैसी है। नदी का गीत है—

कल कल कल कल/छल छल छल छल
लहर लहर लहराती है/नदिया बढ़ती जाती है,
हर पल हर पल/चल चल चल चल
गीत सदा यह गाती है/नदिया बढ़ती जाती है।

कुछ छोटे पहेली-गीत भी हैं—

बसा पेट में एक नगर
नहीं नगर में रहूं मगर,
सदा तैरता हूं जल पर
पर न समझना मुझे मगर।

अब सोचिए इसका उत्तर लेकिन साथ में बने बड़े-से जहाज के चित्र से शिशु को समझने में कठिनाई नहीं होगी।

दादा जी की बातें— लेखक : रामवचन सिंह आनन्द; प्रकाशक : आशु प्रकाशन, इलाहाबाद; मूल्य : १२ रुपए।

एक हैं दादा जी और बच्चे हैं— मुनमुन, सोनू, पिंकी, हरखू। बातों ही बातों में किसी अंध विश्वास की चर्चा होती है। दादा जी उसका वैज्ञानिक समाधान सुझाते हैं। कुल पांच कहानियां हैं— धरती क्यों डोलती है, पौधे भी सांस लेते हैं, सांप सुनते नहीं, कुएं का रहस्य, केले का पौधा अशुभ कैसे ? कई बार कुएं में भूत होने की बात फैल जाती है, उसी के बारे में दादा जी सचाई बताते हैं। बाकी चार कहानियां शीर्षक से ही प्रकट हैं।

सुनो कहानी सुनो कहानी—लेखक : डा. रोहिताश्व अस्थाना; प्रकाशक : साहित्य संगम, १०० नया लूकरगंज, इलाहाबाद; मूल्य : १५ रुपए।

'मेढक मामा', 'नन्हे मेहमान', 'नीम हकीम', 'उपहार', 'नई रोशनी', 'कौआ और बंदर', तथा 'सेवा का फल' ये कहानियां हैं इस पुस्तक में। कहानियों का ताना-बाना बच्चों की दुनिया के आस-पास है। इसीलिए उन्हें पुस्तक पढ़ने में आनंद आएगा। कहानियों की भाषा भी सरल है। पुस्तक के इकरंगे चित्र आकर्षक हैं।

स्वार्थी दैत्य एवं अन्य रूपक—लेखक : डा. महेंद्र भटनागर; प्रकाशक : अम्बर प्रकाशन; नई दिल्ली-५; मूल्य : १५ रुपए।

पांच दिलचस्प रूपक पुस्तक में हैं—दो मित्र, इस हाथ ले उस हाथ दे, स्वार्थी दैत्य, राम जीते रावण हारा और श्रवणकुमार। ये रूपक तो हैं ही, इनमें कथा-रस भी है। कथा-रूपक इन्हें कहा जा सकता है। पढ़ने में बच्चों को मजा आएगा। थोड़े बदलाव के साथ मंच पर इनका अभिनय भी किया जा सकता है। हर रूपक में सुंदर चित्र दिए गए हैं।

पाठकों/लेखकों से

- *नंदन कंप्यूटर पर कम्पोज होता है। अतः टाइप की हुई रचनाएं भेजिए।*
- *रचना के साथ डाक टिकट लगा और नाम-पता लिखा लिफाफा अवश्य भेजें।*
- *यदि रचना वेद-पुराणों, अन्य प्राचीन ग्रंथों से ली गई है अथवा ऐतिहासिक है, तो सही संदर्भ का पूरा उल्लेख अवश्य करें।*
- *जिस प्रतियोगिता में भाग ले रहे हों, उसका नाम लिफाफे पर अवश्य लिखें।*

रचनाएं भेजने का पता है— सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

अजब-अनोखी दुनिया

शब्दों में स्वाद और गंध : क्या शब्दों में खुशबू होती है ? शब्दों का स्वाद कैसा होता है ? क्या सुने गए शब्दों में किसी चीज का आकार दिखाई दे सकता है ? आमतौर से ऐसे चमत्कार कम ही होते हैं।

प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिका न्यू साइंटिस्ट में एक लेख छपा है। उसमें बताया गया है कि दुनिया में करीब पच्चीस हजार लोग ऐसे हैं जो शब्दों में खुशबू, रंग और स्वाद महसूस करते हैं। एक महिला है—क्रिस्टन। वह शब्दों में स्वाद का मजा लेती है। अगर कोई उसे 'लारी' शब्द कहे, तो उसे रबर का स्वाद आता है। अगर यह शब्द 'लॉरी' हो तो उसे नीबू का स्वाद मिलता है। वैज्ञानिक इस गुण को 'साइनेथेसिया' कहते हैं। इसमें आंख की तंत्रिकाएं (नसें) स्वाद, गंध और सुनने वाली नसों से जुड़ जाती हैं।

भारी-भरकम गोबर गैस संयंत्र : राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में आजकल दूध गरम करने के लिए गोबर गैस संयंत्र का इस्तेमाल हो रहा है। वहां रोजाना पांच हजार लिटर दूध को भाप से गरम करके ठंडा किया जाता है। इससे दूध में मौजूद रोगाणु नष्ट हो जाते हैं।

संस्थान में गोबर गैस तैयार करने के लिए एक भारी-भरकम संयंत्र बनाया गया है। इस गोबर गैस संयंत्र के कारण संस्थान में हर घंटे साठ लिटर तेल की बचत होती है। उद्योग में इस्तेमाल होने वाला यह पहला गोबर गैस संयंत्र है।

मकड़ी : किसानों की दोस्त : मकड़ियां किसानों की दोस्त हैं। वे फसलों के कीड़ों को खाती हैं। इस कारण कीटनाशक दवाओं की जरूरत कम पड़ती है। अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, फिलीपींस के वैज्ञानिकों ने धान के खेतों में मकड़ियों की दिनचर्या देखी। उन्होंने खेतों में सात तरह की मकड़ियों की पहचान की। इनमें भेड़िया-मकड़ी, चार जबड़ों वाली मकड़ी, बौनी मकड़ी, थैली बनाने वाली मकड़ी, कांटेदार पैर वाली मकड़ी, फुदकनी मकड़ी और जाला बुनने वाली मकड़ियां शामिल हैं। ये मकड़ियां धान के पौधों या उनके आसपास रहती हैं। हरे टिड्डे, सफेद पीठ वाले टिड्डे और इल्लियों को खाकर ये मकड़ियां जीवित रहती हैं। इन मकड़ियों के कारण हर साल लाखों रुपए की बचत होती है।

आखिरी चीता भी नहीं रहा : हाल ही में भारत का आखिरी चीता भी चल बसा। दिल्ली के चिड़ियाघर में चार्ली और एलेक्सस नामक दो चीते विदेश से मंगाकर रखे गए थे। लेकिन बीमारी ने दोनों की जान ले ली। खुले जंगल में घूमने वाले चीतों का सफाया तो १९४८ में ही हो गया था।

हिरनों के शिकार में माहिर चीतों के अगले पैर काफी लम्बे होते थे। वे सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से दौड़ सकते थे। उनके पीले शरीर पर काले रंग के बड़े-बड़े गोल धब्बे होते थे। हमारे देश में चीतों की आबादी बढ़ाने के लिए अब तक ३५ चीते विदेशों से मंगाए गए। चिड़ियाघरों में वे जीवित नहीं रह सके।

अब जादूगरी नहीं जीनियागरी : जादूगर क्या नहीं कर सकते ? वे चाहें तो टोपी में से खरगोश निकाल दें। फूलों की बारिश करा दें या उनका रंग बदल दें। अब वैज्ञानिक भी जादूगरों जैसे काम करने लगे हैं। वे बायो-तकनालाजी की मदद से पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के जीन (पैतृक गुण) एक दूसरे में डाल सकते हैं।

हाल ही में अमरीकी वैज्ञानिकों की एक टोली ने केले के पौधे में हैजा पैदा करने वाले बैक्टीरिया के जीन डालने में सफलता पाई। वे चाहते हैं कि केले की ऐसी किस्म बने जिसके केले खाने से ही हैजे का रोग न हो। केलों को टिकाऊ बनाने के लिए भी जीन डाले गए। कोशिश है कि केले तोड़ने के बाद मंडी पहुंचने तक ताजे बने रहें।

—बृजमोहन गुप्त

नंदन ज्ञान-पहेली : ३१६

परिणाम

इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। पांच सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध : पांच : प्रत्येक को दो सौ रुपए

१. सितीकंठ सहाय, आरा (भोजपुर) ; २. धीरेंद्र-कुमार, बोकारो ; ३. रंजीत सिंह छाबड़ा, शिकोहाबाद ; ४. कीर्ति श्रीवास्तव, गोपालगंज ; ५. अभय रंजन, बोकारो।

घर बैठे

नंदन

मंगाइए

देश में

वार्षिक—६५ रुपए; दो वर्ष का—१२५ रुपए

विदेश में

भूटान, नेपाल : वार्षिक

वायु सेवा से—२४० रुपए / ५ पौंड या ९.५० डालर

समुद्री सेवा से—१०० रुपए / २ पौंड या ३.५० डालर

अन्य सभी देशों के लिए : वार्षिक

वायु सेवा से—३७५ रुपए / ८ पौंड या १५ डालर

समुद्री सेवा से—१६० रुपए / ३ पौंड या ५.५० डालर

शुल्क भेजने का पता—प्रसार व्यवस्थापक, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

वाह !
अब हम भी
अपना
कोल्ड ड्रिंक
खुद बना
सकते हैं

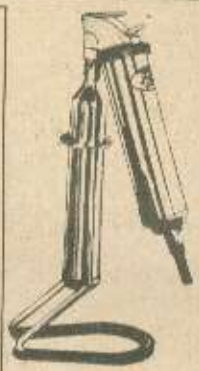

कोल्डड्रिंक

Jivha
SODAMAKER

जी हाँ, अब पेश है जिव्हा सोडा मेकर, जिससे आप बना सकते हैं साफ तथा स्वादिष्ट कोल्ड ड्रिंक्स। अब हो जाए पार्टी। आज ही घर ले आइए।

निर्माता :-

जिव्हा ट्रेडर्स

9936, रोहतक रोड, नई दिल्ली-110005 फोन: 5740565

जय-जयकार

—अरुणकुमार जैमिनि

कुसुमपुर राज्य के राजा वीरसिंह दयालु और वीर थे। उनके राज्य में सुख-शांति थी। राजा की इकलौती बेटी थी सुलक्षणा राजा को एक बात की ही चिंता थी कि उसके बाद राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा ?

राजा ने राजकुमारी सुलक्षणा का लालन-पालन राजकुमार की तरह किया था। उसे अस्त्र-शस्त्र चलाने और राजनीति में निपुण कर दिया था।

कुसुमपुर का पड़ोसी राज्य था, रुद्रपुर। वहां के राजा जालिमसिंह से कुसुमपुर की सुख-शांति नहीं देखी जाती थी। उसका बेटा राजकुमार अजयसिंह भी अत्याचारी था। बाप-बेटे दोनों प्रजा पर बहुत जुल्म ढाते थे।

जालिमसिंह, वीरसिंह से युद्ध करने की ताक में रहता था। उसने राजकुमारी सुलक्षणा की सुंदरता के बारे में सुना। उसने सोचा— 'राजकुमार अजयसिंह का विवाह राजकुमारी सुलक्षणा से कर देना चाहिए पर विवाह के लिए वीर सिंह कभी तैयार नहीं होगा।' फिर भी उसने अपना दूत कुसुमपुर भेज दिया।

दूत ने अपने राजा का संदेश वीरसिंह को सुनाया। उसने कहा— "महाराज ! हमारे राजा ने कहा है कि यदि आप इस विवाह के लिए तैयार नहीं हैं, तो फिर युद्ध के लिए तैयार हो जाएं।" यह सुनना था कि दरबार में बैठे सभासदों की तलवारें अपनी-अपनी म्यान से निकल आईं। वीरसिंह ने उन्हें शांत किया। उन्होंने दूत से कहा— "अपने राजा से जाकर कह दो कि राजकुमारी सुलक्षणा का विवाह राजकुमार अजयसिंह के साथ नहीं हो सकता। हम युद्ध के लिए तैयार हैं।" यह सुन, दूत चला गया। उसने जालिमसिंह को सारी बातें बताईं।

राजा वीरसिंह उदास थे। वह महल में टहल रहे थे। राजकुमारी सुलक्षणा से यह देखा न गया। उसने राजा से पूछा— "पिता जी, आप चिंतित क्यों हैं ?"

राजा बोले— "बेटी, हमारी सेना रुद्रपुर की सेना के मुकाबले कमजोर है। अगर युद्ध के बीच मुझे कुछ हो गया तो युद्ध की कमान कौन संभालेगा ?"

"पिता जी ! युद्ध में विजय हमारी होगी। मैं आपको वचन देती हूं, जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं, मैं शत्रु को विजयी नहीं होने दूंगी।" राजा राजकुमारी की बात सुनकर निश्चिंत हो, युद्ध की तैयारी में लग गए।

दोनों सेनाओं के बीच भीषण युद्ध शुरू हो गया। लड़ते-लड़ते वीरसिंह घायल हो गए। राजा को घायल देख, कुसुमपुर की सेना का मनोबल टूटने लगा। तभी राजकुमारी सुलक्षणा ने युद्ध की कमान संभाली। सुलक्षणा दुश्मन के सैनिकों को गाजर-मूली की तरह काट रही थी। उसकी वीरता देखकर, कुसुमपुर के सैनिक पूरे जोश से युद्ध में जुट गए। युद्ध में कुसुमपुर की जीत हुई। जालिमसिंह और राजकुमार अजयसिंह बंदी बना लिए गए। उन्हें राजा वीरसिंह के सामने लाया गया।

जालिमसिंह और अजयसिंह सोच रहे थे कि वीरसिंह उन्हें अवश्य मृत्यु दंड देंगे। राजा वीरसिंह बोले— "रुद्रपुर के महाराज ! अब युद्ध खत्म हो चुका है। यहां हम आपसे एक मित्र की तरह मिलेंगे।" जालिमसिंह और अजयसिंह यह सुन चकित थे। वे अपने किए पर लज्जित भी थे। राजा वीरसिंह बोले— "राजन ! हम आपसे मित्रता करना चाहते हैं। अगर आप चाहें, तो मैं राजकुमारी सुलक्षणा का विवाह राजकुमार अजयसिंह से कर सकता हूं।"

राजा जालिमसिंह ने कहा— "वीरसिंह जी, मैं आपकी इस भावना का आदर करता हूं। मैंने आपका बुरा चाहा, फिर भी आप मुझे इतना सम्मान दे रहे हैं। आपकी यही इच्छा है तो मुझे यह रिश्ता स्वीकार है। लेकिन इस सम्बंध में राजकुमारी से पूछ लिया जाए तो और अच्छा रहेगा !" यह सुन, राजकुमारी सुलक्षणा ने यह प्रस्ताव मान लिया।

पूरा दरबार वीरसिंह और जालिमसिंह की जय-जयकार करने लगा। इसके साथ ही दोनों राजाओं ने दोस्ती के हाथ बढ़ा दिए। ●

www.kissekahani.com